

आहिंसाना आदेश अपनावी...

आहिंसाना आदेशो अपनावीने मारे,
शांतीना मार्गे जावुं रे, महावीर प्रभु,
तमारा जेवा मारे थावुं...
महावीर प्रभु...

चंडकौशिक नाग जेवा झेरी ने वेरी नथी थावुं,
दुश्मनने पण दोस्त बनावी, त्यागी-वैरागी मारे थावुं रे...
महावीर प्रभु...

भरवाडे खीला कानमां ठोक्या एवा अनाडी नथी थावुं
दीन दुःखीयां नी सेवा करीने, सेवाभावी मारे थावुं रे...
महावीर प्रभु...

नेम राजूल जेवा संयम धरीने, संयमधारी मारे थावुं,
चंदना जेवी टेक धरीने, टेकधारी मारे थावुं रे...
महावीर प्रभु...

तमारे शरणे आवी करीने, बीजे वया हवे नथी जावु,
भाविक कहे छे भावधीरे, वीरने शरणे मारे जावुं रे...
महावीर प्रभु...

धधा वगर यालशे, धर्म वगर नहीं याले

ओवो लाग्यो छे अमने...

ओवो लाग्यो छे अमने आ दुनियानो रंग,
जेथी लागे ना हैये तारी भवित्वनो रंग,
ऊँचे आभमां उडे छे, पेलो पापनो पतंग (२)

काचनां शणगारो मांगे काची आ काया,
आँखो मीचीने भूवेः माटीमां माया,
ओवा रंगरागमां, सौओ ढूऱ्या अंगे अंग, ऊँचे आभमां...

जाणीने बोलीये अने झुठी रे वाणी,
माखणने बदले वलोवीये रे पाणी,
वेळो जाय्यो छे, झेरभर्यो जीवतरनो जंग, ऊँचे आभमां...

संसारी सुख अमने लागे छे प्यारुं,
तारु ज नाम लेवुं लागे अकारुं,
तारी भवित्वमां, वारे वारे पडतो रे भंग, ऊँचे आभमां...

प्रिय वयन-सज्जनता-दातारी-रहेवुं खुशवंत
आ बधुं बजारेना भणे, बिना कृपा भगवंत्

तव चरणे...

2

तव चरणे...

3

आरिहंतना ध्याने...

आरिहंतना ध्याने आरिहंत बनी जशो,
जिननी भवित करतां करतां जिन बनी जशो,
वीर प्रभुना ध्याने महावीर बनी जशो, जीननी...

आ संसारे भमतां, भमतां चाहे प्राणी सुखने,
सुखनी पाछल दोट मुकेः, पण पामे भारे दुःखने,
प्रभुना चरणे रहेता रहेता, सुखी बनी जशो, जीननी...

स्वारथनी आ दुनिया केवी ? सुखमां भाग पडावे !
कोईक दुःखमां दुर थाय तो, कोईक वधु रीबावे,
प्रभुना पंथे वहेता वहेता, संत बनी जशो, जीननी...

परम कृपालु तुजने पामी, बीजे शाने जावुं ?
ध्वमर बनी इयळनी पेरे, एक ज तुजने ध्यावुं,
वीरप्रभुने गातां गातां महान बनी जशो, जीननी...

હવे अभारे शुं गमतुं, अने शुं अषागमतुं ??
उरी नामना हलेसां छे-नाव भलेने २मतुं !!

तव चरणे...

4

आवो आवो देव मारा...

आवो आवो देव मारा, सुनां सुनां द्वार, मारा आंगणा सुनां,
रोती रोती चंदनबाला, विनवे छे आज,
मारा आंगणा...
पगमां बेडी माथे मुंडी, आंखे आँसुनी धार,
उपवासी त्रण त्रण दिवसनी, तोय मुखे नवकार
मारा आंगणा...
बावुळांना भोजन मलीया, पण नही मनडुं माने,
कोई अतिथिने भोजन दईने, पछी ज खावुं मारे
मारा आंगणा...
कोशाम्बी नगरीनी मांही, योगी एक विचरतां,
पांच मास ने पच्चीस दिवसे, भिक्षा काजे फरतां
मारा आंगणा...
बाला भोजन दे छे त्यां तो, योगी पाढा फरीया,
अहो प्रभु शूं ओळुं आव्युं ? दडदड आँसु पडीयां
मारा आंगणा...
अभिग्रहने पूरण जाणी, निज कर पात्र धरावे,
चंदनबाला भाव धरीने, बावुळा वोहरावे
मारा आंगणा...
आँसुडां आव्या के तरत ज, बावुळा वोहराव्या,
तेज क्षणे चमकार थयो ने, तुटी पगनी बेडी
मारा आंगणा...
माथे सुंदर बाल थयां ने, वरसी सुखनी हेली,
वंदन होजो विरप्रभुने, आव्यां मारी डेली
मारा आंगणा...

तव चरणे...

5

ओ शंखेश्वरना पार्थ.(तर्ज : दिल लुटने वाले जादुगर)

ओ शंखेश्वरना पार्थप्रभु ! तारु नाम जगतने व्हालु छे,
तारु नाम जगतने व्हालु छे, तारु नाम जगतने प्यारु छे,
ओ शंखेश्वरना...

तारी धोळी धजाओ फरके छे, तारा सोनाना घुमाटो चमके छे,
ऐ घुमाटना चमकारे आजे, हैथा सौना हरखे छे,
ओ शंखेश्वरना...

तारी आंगीमां हीरला चमके छे, तारा मंदिरे पूलडा महेंके छे,
तारा जाप जपीने भवतो सहु, जीवनने उज्जवल माने छे,
ओ शंखेश्वरना...

मारो जीवनपंथ छे भूल भयो, स्वारथनो झंझावात नड्यो,
ऐ स्वार्थभयो मुज अंतरमां, प्रभु प्रेमनी ज्योत जलावोने,
ओ शंखेश्वरना...

सवि जीवोने मित्र बनावो प्रभु, मने भवसागरथी तारो प्रभु,
ऐ विश्वप्रेमना पाठ प्रभुजी, फरी फरी मुजने बतावोने,
ओ शंखेश्वरना...

भवसागरमां आव्यां-હવे यालो,
भाव-सागरमां झालीये...

तव चरणो...

6

अमी भरेली...

अमी भरेली नजरुं राखो, महावीर श्री भगवान रे,
दर्शन आपो दुःखडा कापो, महावीर श्री भगवान रे...अमा
चरण कमलमां शीश नमावुं, वंदन करुं महावीर रे,
दया करीने भवित्त देजो, महावीर श्री भगवान रे... अमी
हुं दुःखीयारो तारे द्वारे, आवी उभो महावीर रे,
आशिष देजो उरमां लेजो, महावीर श्री भगवान रे...अमी
तारा भरोसे जीवन नैया, हांकी रहो महावीर रे,
बनी सुकानी पार उतारो, महावीर श्री भगवान रे...अमी
भवतो तमारा करे विनंती, सांभलजो महावीर रे,
उर आंगणमां वास तमारो, महावीर श्री भगवान रे...अमी

नित्य झघડवुं आ सृष्टि भां, वसनारथी बनतुं नथी
सर्जननुं कार्य, कदापी सृष्टि भां संहारथी बनतुं नथी
ऐम कही गयां छे, महावीर स्वामी आ जगतने
कु जे बने छे घ्यारथी, ऐ तकरारथी बनतुं नथी

तव चरणो...

7

आज वगडावो, वगडावो...

आज वगडावो वगडावो रुडां शरणायुंने ढोल
शरणायुंने ढोल नगारा, शरणायुंने ढोल (२)... आज
आजे नाचे रे उमंग रंग अंगमां रे लोल
हुं तो एवो रे रंगाणो प्रभु रंगमां रे लोल
हे, हुं तो गाऊँ ने गवडावुं रुडां गीतोना बोल (२)...आज
आवो आवो स्नेहीओ अम आंगणे रे लोल
अमे वाटलडी जोई बेठा बारणे रे लोल
प्रभु भवित्तमां भेणा थयां आजे सहुलोक (२)... आज
आज धरधरमां दिवडा प्रगटावजो रे लोल
आसोपालवनां तोरण बंधावजो रे लोल
सौना हैये जाम्यो छे आज भवित्तनो रंग (२)... आज

જ्यारे प्रभु-भक्तिमां तनमन एकाकार बनी जाय छे,
त्यारे उरनां आंगाइये उमंगना उत्सव उज्वाय छे.

तव चरणो...

ओली, चंदनबाळाने बारणे...

ओली, चंदनबाळाने बारणे, प्रभु आवी उभा छे पारणे
ओनुं जीवतर धन्य धन्य थाय,
ओना दुःखना दहाडा वीत्या रे, ओणे दर्शन देवना किधा रे,
ओनुं जीवतर धन्य धन्य थाय... ओली चंदनबाळाने...
पांचपांच मासना उपवास माथे, २५ दिवसनां व्हाणा वाया,
घेर घेर घूमता तोये प्रभुने, भोजन मळे ना मनमान्या (२)
कोई मोदक-मिठाई लावता, कोई पववान प्रेमे आपता
तोये प्रभुजी पाछा जाय... ओली चंदनबाळाने...
मेवा मीठाई पडतां मूळीने, लीधा अडदना बाकुळा,
बंधन तूटचां ओना जन्मोजनमनां, अंतरना उघड्या आगळा.
ओनी भीक्षा प्रभुओ लिधी रे, ओने आशीष ऊरथी दीधी रे
ओनुं जीवतर धन्य धन्य थाय... ओली चंदनबाळाने...
राजपाट छोडीने, रझलेली कुंवरीनुं, किस्मत फरी उघडी गयुं
भीक्षा दिधी ने दीक्षा लीधी, ओनुं जीवतर अनेहं उजळी रह्युं,
ओणे मारग वीरनो लीधो रे...अने मनखो उज्ज्वल कीधो रे.
ओनुं जीवतर धन्य धन्य थाय... ओली चंदनबाळाने...

दुर्लभ मनुष्यजन्ममां करवा जेवुं कोई
कार्य होय तो ते छे आत्म कल्याण।

तव चरणो...

आश भरीने... (तर्ज : आने से उसके आये बहार)

आश भरीने आव्यो स्वामी, भवित्तमां नहीं राखुं खामी,
पुरजो अमारी आश, ओ शंखेश्वरा,
राखजो अमारी लाज, ओ शंखेश्वरा...
तारो तारो प्रभुजी, हुं तो जेवो छुं तेवो तमारो,
कोई नथी अहीं मारुं, प्रभु आपी दो मुजने सहारो.
पार करो, उद्धार करो, मुज जीवन आधार..ओ शंखेश्वरा
भान भुली गयो छुं, साची समजण मने प्रभु देजो
राह भुली गयो छुं, मारा राहबर बनी तमे रहेजो,
मायानी आ दुनियामां, रङ्गली रहो संसार..ओ शंखेश्वरा

अजवाळा देखाडो...

अजवाळा देखाडो, अंतर द्वार उधाडो...(२) कोरस
प्रभूजी, अजवाळा देखाडो, प्रभुजी अंतर द्वार उधाडो
काम क्रोध मने भानभुलावे, माया ममता नाच नचावे,
सत्य मार्ग भूली भटवुं छुं, रात सुझे ना दहाडो...प्रभुजी
जन्म जीवनना तमे छो दाता, प्रभु तमे मारा भाग्य विधाता,
एक आधार तमे छो प्रभुजी, जन्म मरण भय टाळो...प्रभुजी
नवः निगोदथी हे प्रभु तार्यो, अनंत दुःखोथी मुझने उगार्यो,
एक उपकार करो हजी मुझपर, नहीं भुलुं उपकारो..प्रभुजी

तव चरणो...

10

आ दुनियानी रंगभूमी...

आ दुनियानी रंगभूमी पर, कोई बने मोर तो कोई बने ढेल
आव्या छे सहुओ करवाने खेल, आव्या छे सहुओ करवाने खेल
मनखा माटीने अजवाळवाने
कोईनी दिवेट, कोईनुं दिवेल आव्या छे सहुओ करवाने खेल
कोई थाय राजा तो, कोई छे भिखारी,
कोई खाय खाजा तो, कोईनुं पेट खाली,
विधीओ वेच्या छे विध विध भागो
कोईने महेल तो कोईने छे जेल... आव्या छे.

कोई थाय साधु आ संसार त्यागी,
मायाने मोहमां कोई रंगरागी
जोगी के: भोगी कोईने जडे ना,
जीवन मरणनो साचो उकेल... आव्या छे.

कोई जशे आजे तो कोई जशे काले
कोईने कलंक, कोईने तिलक छे भाले
कोईनो अंत सुखमां तो कोईनो अंत दुःखमां
पुरो थई जाशो, आ जीवननो खेल... आव्या छे.

भवसागरमां आव्यां, हवे..‘भवसागरमां’ झालीये.

तव चरणो...

11

आवो रे आवो महावीर नाम...

आवो रे आवो महावीर नाम लईये
वीर नाम लईओ भवपार करी जईओ, आवो रे...

वीरप्रभु कहे छे के आहिंसा अपनावीये
अहिंसामां ओत प्रोत बनी जीवी जईओ, आवो रे...

वीरप्रभु कहे कोईने दुःख नवी दईये
सुख आपी दुःख हरनार बनी जईओ, आवो रे...

वीरप्रभु कहे कदी क्रोध नवी करीये
शीतल ने शांत चंदन बनी जईओ, आवो रे...

वीरप्रभु कहे सहुथी प्रेमभाव राखीये
प्रेमभरी सरीता, शांत बनी जईओ, आवो रे...

भाग्यवान आपणे जैन धर्म पाम्यां
ऐना सिधांतनी नाव करी लईओ, आवो रे...

दुःखते हुए झमोकी दवा पीर बनगाइ
लाखों लोगों के वास्ते जो तकदीर बन गाइ
सहियों से अंधेरे में पली इस उंभ के लिए
एक रोशनी उठी जो महावीर बन गाइ

ओ शंखेश्वरवासी...

ओ शंखेश्वर वासी मारा वालाजी हो
विनंती अमारी एक सांभळो... (२)

अमे संसारी मायाना जीवडां
तमे प्रगटाव्यां आतमनां दीवडां
मारी नानकडी ज्योती प्रगटावजो, (२) विनंती अमारी...

अमे वासनानी वाटे विचरतां
तमे वितरागी थइने विचरतां
मने विषयोनां रागथी उगारजो, (२) विनंती अमारी...

तमे नीष्ठामी करुणानां दरीया
अमे कडवा कषायोथी भरीया
तो ये भक्त छुं तमारो नीभावजो, (२) विनंती अमारी...

तारा-अमारा वथ्ये अंतर केटलुं भोटुं ? !
तोय निरंतर भरीये अमे तो पगलुं खोटुं !!
उंचे रे खोरडे तमे भेसाणां कीधां,
प्रभू भने नयनो दिधां-पङ्क दर्शनना दीधां ? !

अवतार मानवीनो...

अवतार मानवीनो फरीने नहिं मळे
अवसर तरी जवानो फरीने नहिं मळे... अवतार मानवीनो
सुरलोकमांये ना मळे, भगवान कोईने
अहीयां मळ्यां प्रभु ते, फरीने नहिं मळे... अवतार मानवीनो
लई जाय प्रेमथी तने, कल्याण मारगे
संगाथ आ गुरुनो, फरीने नहिं मळे... अवतार मानवीनो
जे धर्म आचरीने, करोडो तरी गया
आवो धरम अमूलो, फरीने नहिं मळे... अवतार मानवीनो
करशुं धरम निरांते कहे तुं गुमानमां
जे जाय छे घडी ते, फरीने नहिं मळे... अवतार मानवीनो

दाखला दलील ने उपदेशाथी गुडू ज आंभ उधाडे,
डैये टाठक थाय एवी भधूरी वाणी संभणावे,
प्रेमभर्या झेणां भारे न खोटे रस्तेथी पाणा वाणे,
दुर्गतिमां न जाय भक्तजन ए ध्यान राखी उगारे.

तव चरणो...

14

एक घडी प्रभु...

एकघडी प्रभु उर एकान्ते, आवीने स्नेहे मळे...
सोनामां सुगंध भळे, सोनामां सुगंध भळे...
खोयुं होय जीवनमां जे जे, पाढ्युं आवी मळे
ज्यां ज्यां हार थई जीवनमां, त्यां त्यां जीत मळे... सेनामां...
ना कांइ लेवुं, ना कांइ देवुं, चिन्ता ज एनी टळे
ना होय मृत्यु, ना होय जीवन, केरा जगतनां टळे... सोनामां
कर्मों कीधां होय जे जीवनमां, सधळां साथे बळे,
वारुणासागर वीरप्रभुनो साचो संबंध मळे... सोनामां

दादा तारी भुखभुद्राने अभीये नजरें नीडाणी रह्यो,
तारा नयनोभांथी झरतुं दिव्य तेज छुं जीली रह्यो,
क्षणाभर आ संसारनी भाया तारी भक्तिमां भूली गयो,
तुझ मूर्तिमां भक्त बनीने आत्मीक आनंद भाणी रह्यो.

तव चरणो...

15

एक पंखी आवीने ऊडी गयुं...

(तर्ज : छु लेने दो नाजुक होठोंको)

एक पंखी आवीने ऊडी गयुं...

एक वात सरस समजावी गयुं (२)

आ दुनिया एक पंखीनो मेळो, कायम वयां रहेवानुं छे... (२)

खाली हाथे आव्या एवा, खाली हाथे जवानुं छे.

जेने ते तारुं मान्युं ते तो, अहीनुं अहीं सहु रही गयुं... एक

जीवन प्रभाते जनम थयोने, सांज पडे ने ऊडी गयुं (२)

संगी संबंधीनी माया मूकीने, सहुने छोडी अलग थयुं

एकलवायुं आतम पंखी, साथे न काँइ लइने गयुं ... एक

पांखोवाळा पंखी ऊंचे, ऊडी रहां जोने आकाशो (२)

भानभूली भटवोः भवरणमां...माया मृगजळनी आशो

जगतनी आंखो जोती रहीने, पांख विना ए ऊडी गयुं... एक

शक्ति भणे तो सहुने भणजो, जिनशासन सेवा साढ़े,
भक्ति भणे तो सहुने भणजो, जिनशासन लागे घ्याढ़े,
मूक्ति भणे तो सहुने भणजो-राग, द्वेष, अक्षान थकी,
जिनशासन भणे भवोत्भव, ऐवी श्रध्या थाय नक्की.

तव चरणो...

16

आटलुं तो आपजे...

आटलुं तो आपजे भगवन ! मने छेल्ली घडी
ना रहे मायातणां बंधन मने छेल्ली घडी

आ जिंदगी माँधी मली, पण जीवनमां जाग्यो नहि
अंतसमये मुजने रहे, साची समज छेल्ली घडी

ज्यारे मरण शय्या परे, मींचाय छेल्ली आंखडी
तुं आपजे त्यारे प्रभुमय, मन मने छेल्ली घडी

हाथ-पग निर्बल बने ने, थास छेल्लो संचरे
ओ दयालु ! आपजे, दर्शन मने छेल्ली घडी

हुं जीवनभर सळगी रहां, संसारनां संतापमां
तुं आपजे शांतिभरी निंद्रा मने छेल्ली घडी

अंत समये आवी मुजने, ना दमे घट दुश्मनो
जाग्रत पणे मनमां रहे... तारुं स्मारण छेल्ली घडी

न जाने कधि जिंदगीकी शाम आ जाये,
न जाने कधि भौत का पैगाम आ जाये,
वो घडी तो में नहीं जानता प्रभु, पर..
उस वक्त भेरी जूबा पे तेरा नाम आ जाये...

तव चरणो...

17

एक ज दे चिनगारी...

एक ज दे चिनगारी, महानल ! एक ज दे चिनगारी.

चकमका लोहुं धसतां धसतां, खर्ची जिंदगी सारी
जामगरीमां तणखो न पड्यो, न फळी महेनत मारी...
चांदो सलग्यो, सूरज सलग्यो, सलगी आभ अटारी,
ना सलगी एक सगडी मारी, वात विपतनी भारी !...
ठंडीमां भुज काया थथरे, खूटी धीरज मारी...
विश्वानल ! हुं अधिक न मागुं, मागुं एक चिनगारी...

आपण सौए हरतां फरतां पिंजरा...

आपण सौए हरतां फरतां पिंजरा, आपण सौए हरतां फरतां पिंजरा
उपर बनाव्यो मोर रुडो ने, भीतर भर्या छे नर्या चींथरा..आपण
पंडना पिंजरे पंडे पुराणो, हंसलो कामणगारो (२)
कोइनो लावेलो चारो ए चरतो, छोडीने मोतीनो चारो (२)
छो ने बनाव्यो महेल रुडो पण भीतरमां भर्या थी ठींकरा...
नहीं आरो नहीं ओवारो ओवो, संसार सागर खारो (२)
तरीने डूबवुं के डूबीने तरवुं, वारा फरती वारो
सागर वेऱुं नाम धर्यु पण, नीर जुओ तो ओना छीछरां...

तव चरणे...

18

आंखडीये शत्रुंजय दिठो रे...

आंखडीये रे में आज शत्रुंजय दीठो रे,
सवालाख टकानो दहाडो रे, लागे मने मीठो रे,
सफल थयो रे मारा मननो उमाहो, भवनो संशय भांग्यो रे,
नरक तिर्यचगति दूर निवारी, घरणे प्रभुजीने लाग्यो रे,
मानवभवनो ल्हावो लीजे देहडी पावन कीजे रे,
सोनारुपाने फूलडे वधावी, प्रेमे प्रदक्षिणा दीजे रे.
दूधडे पखालीने वेशर धोळी, श्री आदीशर पूज्या रे,
श्री सिध्धाचल नयणे जोता, पाप मेवासी धूज्या रे
श्रीमुख सुधर्मा सुरपति आगे, वीरजिणंद एम बोले रे
त्रण भुवनमां तीरथ मोहुं, नहि कोइ शत्रुंजय तोले रे
इन्द्र सरीखा ए तीरथनी, चाकरी चित्तमां चाहे रे,
कायानी तो कासल काढी, सूरजवुंडमां नाहे रे
कांकरे कांकरे श्री सिद्धक्षेत्र साधु अनंता सिध्या रे
ते माटे ए तीरथ मोहुं, उद्धार अनंता कीधा रे
नाभिराया सुत नयणे जोतां, मेह अमीरस वूठया रे,
'उद्यरत्न' कहे आजे मारे पोते श्री आदीशर तूठया रे

तव चरणे...

19

अंतरनी आरङ्गु...(तर्ज : करती हुं तुम्हारा व्रत)

अंतरनी आरङ्गु मारी स्वीकार करी ल्यो
संसारनां सागरथी नैथा पार करी द्यो
ओ महावीर स्वामी...ओ अंतरयामी...

तारा विना छे जींदगीमां खूब निराशा
हैये रमे छे एक तमारा प्यारनी आशा
मनडानां शमणां मारा साकार करी द्यो, संसारना...

आवी रहे छे जींदगीमां पापनी आंधी
जोजो ना तूटे प्रीतनी में दोर जे बांधी
भूली जइ भूलो मारी, मने पार करी द्यो, संसारना...

तारी अने मारी वच्चे छे केटली दूरी !
जंजीर आ कर्मो तणी मारी छे मजबुरी
मुरझायेलां जीवनमां शणगार करी द्यो, संसारना...

चाली चालीने एकलो हुं तो गयो थाकी
कोण जाणे केटलो हजु पंथ छे बाकी
दयाना दीप प्रगटावी उद्वार करी द्यो, संसारना...

**मने भलो भारो आ सांवरीयो,
जेनी भक्तिनो स्वाद साकरीयो**

तव चरणो...

20

ऐसी दशा हो भगवन्...

ऐसी दशा हो भगवन ! जब प्राण तनसे निकले
गिरिराज की हो छाया...मन में न होवे माया
तपसे हो शुद्ध काया...जब प्राण तनसे निकले...ऐसी...
उरमें न मान होवे...दिल एक तान होवे
तुम चरण ध्यान होवे...जब प्राण तनसे निकले...ऐसी...
संसार दुःख हरना...जैन धर्मका हो शरणा
वो कर्म-भर्म खरनां...जब प्राण तनसे निकले...ऐसी...
अनशन को सिद्धवट हो...प्रभु ! आदिदेव घट हो
गुरुराज भी निकट हो...जब प्राण तनसे निकले...ऐसी...
यह दान मुजको दीजे...इतनी दया तो कीजे
अरजी तिलककी लीजे जब प्राण तनसे निकले...ऐसी...

**स्वार्थी बनी धमंडमां कहेतो, बधुं ज भाड़ं भाड़ं,
प्रभूनी दया थी भण्युं छे, भानव कांध नथी ताड़ं,
संसारभांधी सुभो भेणववा फोट वलोव्युं पाणी,
त्याग जेवुं कोइ सुभ नथी, ए छे संतोनी वाणी...**

तव चरणो...

21

अब सौंप दिया...

अब सौंप दीया इस जीवनको, भगवान् तुम्हारे चरणोमें
मैं हूं शरणागत प्रभु तेरा, रहे ध्यान तुम्हारे चरणोमें
मेरा निश्चय बस एक वही, मैं तुम चरणोंका पूजारी बनूं
अर्पण कर दूं दुनियाभरका, सब प्यार तुम्हारे चरणोमें...

मैं जगमें रहूं तो ऐसे रहूं, ज्युं जलमें कमलका पूल रहे
हे मन, वच, काय हृदय अर्पण, भगवान् तुम्हारे चरणोमें...

जहां तक संसारमें भ्रमण करूं, तुज चरणोमें जीवनको धरूं
तुम स्वामी मैं सेवक तेरा, धरूं ध्यान तुम्हारे चरणोमें...

मैं निर्भय हूं तुम चरणोमें, आनंद मंगल है जीवनमें
रिद्धिसिद्धि और संपत्ति, मिल जायें तुम्हारे चरणोमें...

मेरी इच्छा बस एक प्रभु, एक बार तुजे मिल जाउ मैं
इस सेवककी हर रगरगका, हो तार तुम्हारे हाथोमें...

હेयुं जेमां श्रध्या करे, भुष्ठि अेमां शंका करे,
आत्मा के'छे झरवुं नथी, भुष्ठि के छे तरवुं नथी,
या तो पुरुं शान भलुं, अथवा तो अशान भलुं,
देह पींजरनुं आत्म पंखी, अंधे क्यारे प्रभूने भणुं !

तव चरणो...

22

एक दिन पुंडरिक...

एकदिन पुंडरिक गणधरु रे लाल,
पूछे श्री आदिजिणंद सुखकारी रे,
कहीए ते भवजल उतरी रे लाल,
पामीश परमानंद भववारी रे...एक दिन

कहे जिन इण गिरि पामशो रे लाल,
ज्ञान अने निरवाण जयकारी रे,
तीरथ महिमा वधशे रे लाल,
अधिक अधिक मंडाण निरधारी रे...एक दिन

इम निसुणीने इहां आवीया रे लाल,
धाति करम कर्धा दूर तमवारी रे,
पंचक्रोड मुनि परिवारा रे लाल,
हुआ सिद्धि हजुर भववारी रे...एक दिन

चैत्रीपूनम दीने कीजीये रे लाल,
पूजा विविध प्रकार दिलधारी रे,
फल प्रदक्षिणा काउसगग रे लाल,
लोगस्स थड नमुवकार नरनारी रे...एक दिन

दश वीश त्रीश चालीश भलां रे लाल,
पचास पुष्पनी माळ, अतिसारी रे,
नरभव लाहो लीजीये रे लाल,
जेम होय ज्ञान विशाल मनोहारी रे...एक दिन

तव चरणो...

23

एकज अरमान छे मने...

एकज अरमान छे मने, मारुं जीवन सुगंधी बने
 पूलडां बनुं कें भले धूपसळी थाउं,
 आशा छे सामग्री पूजानी थाउं,
 भले काया आ राख थइ शमे...मारुं जीवन सुगंधी बने
 तडकाछाया कें वा' वर्षानां वायरा,
 तोये आ कुसुमो कदी न करमाया,
 प्रभुचरणोमां रहेवुं गमे...मारुं जीवन सुगंधी बने
 वातावरणमां सुगंध न समाती
 जेमजेम सुखड ओरसीये घसाती
 प्रभु काजे घसावुं गमे...मारुं जीवन सुगंधी बने
 जगनी खाराश बधी उरमां शमावे,
 तोये सागर मीठी वर्षा वरसावे
 सदा भरती ने ओटमां रमे...मारुं जीवन सुगंधी बने

२५ भावना ऐवी सदा के सरण सत्य व्यवहार करो,
 ज्ञवनमां हंमेश विचार, वाणी, वर्तनमां परोपकार करो,
 माटे, भयी जाय आवती ऐढी ऐवा काम करी जजो,
 तमे अनीने सुमन, जगतमां परीमल फेलावी जजो.

तव चरणो...

24

आतो जनम जनमना पेरा...

आतो जनमजनमना पेरा, आतो जनमजनमना पेरा
 आज अहीं तो काल न जाणे वयां पडशे आ डेरा...
 मोघों मानवजन्म मल्यो ने अवसर वेवो खोयो
 प्रभुभवित विसारी दइने माया रंगे तुं मोह्यो
 घडणणमां गोवींद भजीशुं ख्याल ओ मृगजल वेरा..आतो
 सत्य आहिंसा प्रेमधर्मनो दीधो संदेशो वीरे
 मार्ग ओ महावीर प्रभुनो भूलायो धीरे धीरे
 तृष्णा, ममता, माया मांहि फरतां भवोभव पेरा..आतो
 परमधर्मनो पूनित दिवडो प्रगटावो जीवनमां
 मिलन झांखो सदाये वीरनुं, भवित हो तनमनमां
 भवोभव पेरा मीटावी दइने, मोक्ष तणा हो डेरा..आतो

मानव भव दृक्ष्य छे-आ सज्जवसृष्टि भां,
 मात्र भनुध्यने बुध्यि भणी छे, माटे तेनो योग्य
 उपयोग करी ज्ञवनमां धर्मी-कभी बनजो,
 धर्म ए ढाल छे, धर्म बयावशो..ज

तव चरणो...

25

ओ पालनहारे...(तर्ज : लगान)

ओ पालनहारे, निर्गुन और न्यारे,

तुमरे बिन हमरा कोनुं नाही,

ओ जिनवर ध्यारे, निर्गुन और न्यारे,

तुमरे बिन हमरा कोनुं नाही

हमरी उलजन सुलझाओ भगवन, तुमरे बीन हमरा कोनुं नाही

तुम हमको हो संभाले, तुम्ही हमरे रखवाले...तुमरे बीन

चंदमें तुम्ही तो भरे हो चांदनी, सुरजमें उजाला तुम्हीं से

ये गगन है मगन, तुम्हीं तो दिये हो ये सीतारें

भगवन् ये जीवन, तुम्हीं ना संवारोगे तो वया कोई सवारे ?

जो सुनो..तो कहे, प्रभुजी हमरी है बीनती,

तुम हमको धीरज दो, हारे नहीं हम कभी दुःखसे,

हम निर्बल है-रक्षा दो, रह पाये हम भी सुखसे

भवित दो-शवित दो (२)

जगवेः जो स्वामी हो, इतनी तो अरज सुनो

है पथमें अंधियारे दे दो वरदान में उजीयारें..ओ पालनहारे

प्रभु सिवाय आपणाने कोषा उगारनार छे ?

तव चरणो...

26

ऐसी लागी लगन...

हैं आंख वो जो श्यामका दर्शन कीयां करें
है शीष जो प्रभुचरणमें वंदन दिया करें
बेकार वो मुख है जो रहे व्यर्थ बातों में
मुख तो है जो हरीनामका सुमीरन कीया करे
हिरे मोतीसे, नहीं शोभा है हाथकी
है हाथ जो भगवानका पुजन कीया करें
मरवारभी अमर नाम ऊस जीवका है जगमें
प्रभुप्रेममें बलीदान जो जीवन दीया करें

ऐसी लागी लगन मीरां हो गई मगन
वो तो गली गली हरी गुन गाने लगी
महेलोमें पली बनवेः जोगन चली
मीरां रानी दिवानी कहाने लगी
कोई रोवेः नहीं कोई टोवेः नहीं
मीरां गोवींद गोपाल गाने लगी
बैठे संतोवेः संग, रंगी मोहनवेः रंग
मीरां प्रेमी प्रीतमको भनाने लगी..वो तो गली गली हरी गुण
रानाने विष दिया, मानो अभूत पीया
मीरां सागरमें सरीता समाने लगी
दुःख लाखो सहे मुखसे गोवींद कहे
मीरां गोवींद गोपाल गाने लगी...वो तो गली गली हरी गुण

तव चरणो...

27

अनंतनाथ प्रभु...(तर्ज : देख तेरे संसारकी हालत)

अनंतनाथ प्रभु नाम छे तारुं अनंत गुण भंडार
 मुजने भवजल पार उतार...मुजने भवजल पार उतार
 अनंत सुखमां तुं प्रभु राचे अनंत छे तुज ज्ञान
 मुजने भवजल पार उतार...मुजने भवजल पार उतार
 कोइ जन्ममां आपण बन्ने, रम्या हशुं वँइ नवनव रंगे
 आज प्रभु तुं छे प्रभुताए, रङ्गली रह्यो हुं माया संगे
 तारी मारी प्रीत पुराणी, भुलाय ना जीनराज...मुजने
 अनंतज्ञाननां छे तुज दरिया, वरसावे जो तुं वादलीया,
 अनंत जीवने ते प्रभु तार्या, भवसागरने पार तराव्यां
 मारी प्यास बुझावो जीनवर, एक बिंदुनी आश...मुजने
 श्री सिंहसेन तणा कुलराया, सुयशामाताना तुं जाया,
 तुजबीण नहीं मने कोइ सहारा, नयनो तलसे दर्शन तारा,
 मुवित्तकिनारे जावा प्रभुजी, मांगु छुं तुज साथ...मुजने
 श्री जैन संयुक्त मंडळ गावे, करजोडी विनवे छे भावे,
 आ भववनने वाटे घाटे, शरण चरण तारुं प्रभु चाहे,
 अजरामर पद चाहुं जीनवर, देजे दीनदयाल...मुजने

तव चरणो...

28

आवशे ओ काळ...(तर्ज : दुनिया में हम आये है)

आवशे ओ काळ वयारे, वँइये कहेवायना
 दीपक बुझाशो वयारे, समजी शकाय ना...आवशे
 जींदगीने महेल मानी, रच्यो पच्यो रहो महीं
 पानानो महेल छे ओ मने खबर पडी नहीं,.
 खबर नहीं आ महेलनां, नहीं करवा भरोसा...दिपक
 प्रमाद अने प्रपंचमां में जीवन विताव्युं,
 तोफान एक आव्युं ने में सर्व गुमाव्युं,
 समजायुं पछी साचुं, तारे द्वार चढ्यो ना...दिपक
 जीवन दीपकनी ज्योत धीमीधीमी थती गइ,
 घडपण मने आव्युने, वळी उंमर वधी गइ,
 परभवनुं हुं तो भातु, वँइ बांधी शवयोना...दिपक
 जैन संयुक्त मंडळ कहे छे, एवो छे ए महेल,
 एमां फसाया पछी आ भव तरवो छे मुश्केल,
 छुटवा एमांथी साची छे, जीनवरनी सेवना...दिपक

घडीयाण 'टकटक' करे छे पङा,
 जो सभजो तो ज्वन 'कटकट' करे छे.

तव चरणो...

29

ଓকলাং জ আব্যাং...

ଓকলাং জ আব্যাং মনবা একলাং জবানাং,
সাথী বিনা, সংগী বিনা, একলাং জবানাং,
আপণে কে একলাং নে কিরতার একলো,
একলা জীবনে ছে এ আধার একলো,
একলা রহীয়ে ভলে, বেদনা সহীয়ে ভলে,
পোতানাং জ পংথে ভেরু পোতানা বিনানা...সাথী বিনা...

কা঳জানী বেড়ীয়ে, কায়া না সাথ দে,
কা঳ী কা঳ী রাতড়ীয়ে, ছায়া না সাথ দে,
কায়া না সাথে দে ভলে, মায়া না সাথ দে ভলে
ওকলাং রহীনে ভেরু থাবুং রে বধানা...সাথী বিনা...

ন পূঁছো হুঁ বিশ্বমাং কেবো নিরাধার হতো,
জ্ঞববুঁ দৃঢ়কৰ হতুঁ, অটলো লাচার হতো,
আধার বগুৰ জ্ঞন তো কোষা জ্ঞী শকে ?
মর্যা তোয়ে বজানে খভে মারো ভার হতো.

এক বার মুখড়ো বতাও...

এক বার মুখড়ো বতাও দীনানাথজী
থোরী মোহনী মুরত লাগে প্যারী, আদেশৱ অৱজ সুণো...
সিদ্ধাচল রা রাজা, থে তো বিমলাচল রা রাজা,
মুরুদেৱী রা লাডকা লাল, আদেশৱ অৱজ সুণো...
যুগলাধৰ্ম নিবারক দাদা, ভব তারক ভগবান রে,
মারা বালাজী সুণাংদা রা বংথ, আদেশৱ অৱজ সুণো...
বাহুবলীনে তার্যা দাদা, ভৰতজীনে তার্যা,
মারী নাব লগাবো ভবপাৰ, আদেশৱ অৱজ সুণো...
দাদা থোনে মালুম হোবে, থোৱে চৱণে আয়ো হো,
নহী রে ভুলোলা থোৱা উপকাৰ, আদেশৱ অৱজ সুণো...
কোয়ালিয়াভী বোলে মীঠা মোৰালীয়াভী বোলে,
থোৱা বাল কৱে রে পুকাৰ, আদেশৱ অৱজ সুণো...

শক্তি জেনী উঁচী অনে নীচাং ধ্যেয ন শোভে,
ক্ষণাভংগুৰী সিদ্ধিওমাং মানব শানে লোভে ?
মোক্ষ নগুৰনী অমুৰ অটারী ত্যাং মণে ছে মুক্তি,
পূরুষার্থনী পগাদ়ীঅে কৰতাং জাও প্ৰভুনী ভক্তি

आ छे अणगार...

(तर्ज : जहां डाल डाल पर सोनेकी चीड़ीयां)

अज्ञानतिभिरान्धानां ज्ञानंजन शलकया,
नेत्रंउन्मिलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः

जेना रोमरोमथी त्याग अने संयमनी विलसे धारा,
आ छे अणगार अमारा...

दुनियामां जेनी जोड जडे ना एवुं जीवन जीवनारा,
आ छे अणगार अमारा...

सामग्री सुखनी लाख हत्ती, स्वेच्छाओ एणे त्यागी,
संगाथ स्वजननो छोडीने, संधमनी भिक्षा मांगी,
दीक्षानी साथे पांच महाव्रत अंतरमां धरनारा,
आ छे अणगार अमारा...

ना पंखो वींझे गरमीमां, ना ठंडीमां कदी तापे,
ना काचाजळनो स्पर्श करे, ना लीलोतरीने चांपे,
नानामांनाना जीवतणुं पण संरक्षण करनारां,
आ छे अणगार अमारा...

जूरुं बोलीने प्रिय थवानो, विचार पण ना लावे,
या मौन रहे, या सत्य कहे, परिणाम गमे ते आवे,
जाते ना ले कोइ चीज कदी, जो आपो तो लेनारा,
आ छे अणगार अमारा...

तव चरणो...

32

ना संग करे कदी नारीनो, ना अंगोपांग निहाले,
जो जरुर पडे तो वात करे, पण नयनो नीचां ढाले,
मनथी, बाणीथी, कायाथी व्रतनुं पालन करनारां,
आ छे अणगार अमारा...

ना संग्रह एने कण्डांनो, ना बीजा दिवसनुं खाणुं,
ना पैसा एनी झोलीमां, ना एना नामे थाणुं,
ओछामां ओछां साधनमां संतोष धरी रहेनारा,
आ छे अणगार अमारा...

ना छत्र धरे कदी तडकामां, ना फरे कदी वाहनमां,
मराग हो चाहे कांटालो, पहेरे ना कांइ पगमां,
हाथेथी सधळा वाल चुंटी, माथे मुंडन करनारा,
आ छे अणगार अमारा...

कल्याण जीवोनुं करवा काजे, विचरे देशे-देशे,
ना रायरंक, ना ऊंचनीच, सरखा सौने उपदेशे,
अपमान करो या सन्मानो, सभता भावे रहेनारा,
आ छे अणगार अमारा...

ना देह तणी दरकार करे, अधरा तपने आचरता,
अभ्यास, क्रिया ने भवित्ती आतमने उन्नत करता,
आराधनामां आयुष्य वीतावी, उच्चगति वरनारां,
आ छे अणगार अमारा...

तव चरणो...

33

આંખડી મારી... (તર્જ : દિલ કે અરમાં આંસૂઓં મેં)

આંખડી મારી પ્રભુ હરખાથ છે,
જ્યાં તમારા મુખનાં દર્શન થાય છે,
પગ અધિરાં દૌડતાં દેરાસરે,
દ્વારે પહોચું ત્યાં અજંપો જાય છે,
દેવનું વિમાન જાણે ઉત્તર્યું,
એવું મંદિર આપનું સોહાય છે.

ગસ તમ્હારા મુખને જોયાં કારં,
લાગળી એવી હૃદયમાં થાય છે.

મુખડું જાણે પૂનમનો ચંદ્રમાં,
ચિત્તમાં ઠંડક અનેરી થાય છે.

ચાંદની જેવી પ્રતિમા આપની,
તેજ અનું ચૌતરફ રેલાય છે.

આંખડી મારી...

આંખડી મારી...

આંખડી મારી...

આંખડી મારી...

આંખડી મારી...

આંખડી મારી...

જો તારા એક વેળા દર્શન પામું, જનમ સફળ બની જાય,
જુગ જુગથી જે પાતક બાંધ્યા, ક્ષણ ભરમાં છૂટી જાયે.

તવ ચરણો...

34

ઓ સર્જનહારા...

નોખાં નોખાં લેખ બધાના નોખો ભાગ્યનો ધારો,
કોઇના ભાગે દરીયો ચીતર્યો, કોઇના ભાગે કિનારો

હે સર્જનહારા શાને સર્જી તે મેલાપ પછી જુદાઈ ?!
મેલાપ પછી જુદાઈ...મેલાપ પછી જુદાઈ...

મીઠી લાગે છે મનડાને મીલન કેરી ઘડી, ઘડી
પણ વિયોગની ક્ષણ લાગે છે એક એક યુગ જેવડી
ઘડનારો તું એકજ ન કેમ નોખી નોખી ઘડાઈ ?...મેલાપ
હૈયાં કેરાં ઘાવ હજી તો નથી જરાયે રૂજાયા,
વસંત પછી આ પાન ખરના કેમ વાયરાં વાયા ?
રીત આ તારી ઓ રહ્ખવાળાં અમને ના સમજાઈ...મેલાપ

કોઇ સ્થિતે સ્થિતે સણ્ણો છે, કોઇ રડીને દિલ બહેલાવે છે,
કોઇ ટિપે ટિપે તરસે છે, કોઇ જામ ભર્યા છલકાવે છે,
સંજોગના છે ખેલ બધા, દરિયાને ઠપકો ના દેવો,
તરતો માણસ તુબે છે, કોઇ લાશ તરીને આવે છે.

તવ ચરણો...

35

इतनी शक्ति हमें देना...

इतनी शक्ति हमें देना दाता, मनका विश्वास कमजोर हो ना
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना...

दूर अज्ञानके हो अंधेरे, तूं हमें ज्ञानकी रोशनी दे...
हर बुराइसे बचकर रहे हम, जितनी भी दे भली जिंदगी दे...
वैर हो ना किसीका किसीसे, भावना मनमें बदलेकी हो ना...
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना...
हम न सोचें हमें क्या मिला है, हम ये सोचे किया क्या है अर्पण
फुल खुशीयोंके बाटे सदा हम, सबका जीवन बन जाये मधुवन
अपनी करुणाका जल तूं बहावें,
करदे पावन हरइवाह मनका कोना...
हम चले नेक रस्ते पे हमसे, भूलकर भी कोई भूल हो ना...

कठीन कर्मके ढेरमें भी प्रभूभक्ति आग लगा देती है,
जुनराजकी भक्ति-आत्माको वितराग बना देती है,
संसारमें २५२२ इन्सान भगवानको भूल जाता है !!
समजले जनभोंका पापमेल प्रभूभक्तिसे धूल जाता है

ऊँची मेडी ते मारा...

ऊँची मेडी ते मारा संतनी रे, मेंतो माणी न जाणी राम
हो राम...ऊँची मेडी ते मारा संतनी रे...

अमने ते तेडां शीद मोकल्यां, हे मारो पिंड छे काचो राम,
मोंघा ते मूलनी मारी चूंदडी, में तो माणी न जाणी राम...
हो राम...ऊँची मेडी ते...

अडधां पहेर्या, अडधां पाथर्या, अडधां उपर ओढाडयां राम,
चारे छेडे ते चारे जणा, दोरी डगमग जाये राम
हो राम...ऊँची मेडी ते...

नथी तरापो, नथी तुंबडां, हे नथी उतर्यानो आरो राम,
नरसिंहमहेताना स्वामी शामला, प्रभु ! पार उतारो नाव.
हो राम...ऊँची मेडी ते...

सेवा परम धर्म छे, मान न तुं हाश,
पारसमणी छे हाथमां, तोय नाखें तुं पाश,
पोतानी बुध्धी न वापरे, करे तुं पारकी आशा
कामधेनुं आंगाषा छे ने, मानवी तुं मांगो छाश.

ॐ च ओ च रे दादा तारा...

ॐ च ओ च रे दादा तारा, दुंगरा रे लोल,
दुंगर उपर बोले झीणा मोर पुजनमां वहेला आवजो रें लोल
पहेलो कागळ रे, पालीताणा मोकल्यो रे लोल, (२)
देजो मारा आदिनाथने हाथ पुजनमां वहेला आवजो रें लोल
बीजो कागळ रे, शंखेश्वर मोकल्यो रे लोल, (२)
देजो मारा पार्थनाथने हाथ पुजनमां वहेला आवजो रें लोल
त्रीजो कागळ रे, गीरनार मोकल्यो रे लोल, (२)
देजो मारा नेमजीने हाथ पुजनमां वहेला आवजो रें लोल
चोथो कागळ रे, पावापुरी मोकल्यो रे लोल, (२)
देजो मारा वीर प्रभुने हाथ पुजनमां वहेला आवजो रें लोल
पांचमो कागळ रे, _____ मोकल्यो रे लोल, (२)
देजो मारा _____ ने हाथ पुजनमां वहेला आवजो रें लोल

ઉंधवा भाटे संतानने भांनी गोट भण्टी होय तो,
गाढी अने पसंद नथी पडती एम धर्मात्माने,
परमात्माना चरणो उपासना भण्टी होय तो,
संसारना शरणो आकर्षणा लागतुं नथी.

तव चरणो...

38

कुंदरत नो छे न्याय सनातन...

कुंदरतनो छे न्याय सनातन, आव्युं ओवुं मलशे,
वसुंधरामां ओज प्रमाणे, वाव्युं तेवुं फळशे
पूर्वजन्मां शालिभद्रे, दिधुं खीरनु दान (२)
बीजा भवमां रिद्धी पाम्या, पाम्या सुख महान,
साची छे कहेवत ओवी के: (२) ठार्या ओवा ठरशे,
वसुंधरामां ओज प्रमाणे, वाव्युं तेवुं फळशे...कुंदरतनो
पूर्वे कोईना कानमां सिसू रेड्युं वीर भगवाने, (२)
तेथी तो भरवाडे वेवी शुलो भोंकी काने (२)
आ भवमां नही तो परभवमां (२) देवुं चुकववुं पडशे,
वसुंधरामां ओज प्रमाणे, वाव्युं तेवुं फळशे...कुंदरतनो
बावळ वावीने कोई मूरख वेरीनुं फळ मांगे
ठेर ठेर कंटक रोपीने पुलनी आशा बांधे,
झेर हळाहळ घुट्यां हशे तो (२) अमृत वयांथी मलशे ?
वसुंधरामां ओज प्रमाणे, वाव्युं तेवुं फळशे...कुंदरतनो

जेवी करे छे करणी तेवी तुरंत झेणे छे,
बदलो बुरा भलानो अहींनो अहीं भणे छे

तव चरणो...

39

કર્મો કરેલાં... (તર્જ : ઓ, મેરી આँખો કે પહ્લે સ્પને)

કર્મો કરેલાં મુજને નડે છે, હૈયું હિબકાં ભરીને રડે છે:
 જીવવા ચાહું તો જીવાતું નથી, મરવા મથું તો મરાતું નથી
 કોઇ જન્મો કરમ, મેં હસીને કર્યા,
 આંસુડાં આજ મારા નયનમાં ભર્યા
 મેં પ્રયાસો કર્યા માણવા જિંદગી,
 કર્મ મુજને સફળ ન થવા દે કદી : ...કર્મો કરેલાં
 જિંદગી ના મળે મોત આવે અગર,
 મોત પણ ના મળે કર્મ તૂટ્યા વગર,
 જાણ ન્હો'તી મને આ પરિણામની,
 તો કરત નહિ હું સંગત બૂરા કામની ...કર્મો કરેલાં

કર્મબંધન માટે માણસ સ્વતંત્ર છે જ પણ કર્મનો ઉદ્ય થાય
 ત્યારે પરવશ હોય છે, માટે કર્મ એવાં કરો જેનાં ફળ સહન
 કરવામાં દુભાદ્યે નહીં. વિચાર, વાણી અને વર્તનમાં સતર્ક
 સાલસ અને સરળ રહેનાર મનુષ્ય ગફલત કરતો નથી.

તવ ચરણો...

40

કોયડો છે અલબેલો કરમનો...

કોયડો છે અલબેલો, કરમનો કોયડો છે અલબેલો (૨)
 હેજી, એને ઉકેલવો નથી સહેલો કરમનો કોટડો છે અલબેલો
 એક માતાને પુત્ર બે એમાં, એક ચતુર એક ઘેલો,
 એકને માંગે પાણી ન મળતું, બીજાને દૂધનો રેલો...કરમનો રે
 મહાન તપસ્વી વીરપ્રભુને પણ ઉપસર્ગ એવો નડેલો,
 ગોવાલે કાનમાં ખીલા ખોડ્યા ત્યારે નીજનો દોષ ગણેલો..
 ચંદનગાળા એક રાજવુંમારી, ધરમ એને વરેલો,
 વંચનકાયા એની ચૌટે વેંચાણી ત્યારે, આતમ એનો રડેલો..
 અરણીક મુનિજીએ દીક્ષા લીધી ને બન્યા ગુરુનો ચેલો,
 કામીનીનીનાં નયનગાણે, વૈરાગી સંતને વિંધેલો...કરમનો રે
 કરમને નહીં શરમ આવે, હોય ભલેને તું ભણેલો,
 ગુરુનું કર્યુ ગુરુજી ભોગવે, ચેલાનું ભોગવે ચેલો...કરમનો રે
 માનવતનની મૂડી મળી છે, ભર તું ધરમનો થેલો,
 હવે તો જાગીજાને જીવનમાં, શાને હજીયે તું સૂતેલો...

પૂર્વ ભવના કર્મો આ ભવે પણ ભોગવાના હોય છે,
 માટે, 'રકમ ખોટી એનો દાખલો ખોટો એ યાદ રાખજો.'

તવ ચરણો...

41

कोना रे सगपण...

कोना रे सगपण कोनी रे माया जीव रहो लोभाइ रे
 तारुं संसारमां कोइ नथी, तारी साची धर्म सगाइ रे
 श्रेणीकरायने पीजरे पुर्यो, कोणिके: राज्य लोभाइ रे
 पुत्रे पिताने घणुं दुःख ज दीधुं, वयां गइ पुत्र सगाइ रे...

भरत बाहुबलिए राज्यने माटे मांडी छे मोटी लडाइ रे
 चक्र मुक्युं नीज भाइनी माथे, वयां गइ भातृ सगाइ रे...

मदनरेहा वश मोहयो मणिरथ, मायों युग बहु भाइ रे
 विषय कषायमां मदन बनीने, वयां गइ भाइनी सगाइ रे...

ब्राह्मणि निज पुत्रने वेंचे घनने अर्थे लोभाइ रे,
 अमरवुमारने मारवा काजे वयां गइ पुत्र सगाइ रे...

सूर्यकान्ताओ परदेशीने मायों, गले अंगूठो दबाइ रे,
 श्रेयक श्रेणीमां भगवंते भाष्यु वयां गइ पत्नी सगाइ रे...

शेठाणी निज शेठने नांखे ऊँडा कुवानी माहीं रे,
 कर्मतणी जो जो विचित्रता वयां गइ पतिनी सगाइ रे...

चूलणी निज पुत्रने बाले लाखनुं घर बनाइ रे,
 विषयमां अति भस्त बनीने वयां गइ पुत्र सगाइ रे...

कोनी रे माता कोना रे पिता कोना भाइ भोजाइ रे
 विनयविजय पंडित एम बोले साची धर्म सगाइ रे...

तव चरणो...

42

कभी प्यासे को..(तर्ज : तुम अगर साथ देने का वादा)

कभी प्यासेको पानी पिलाया नहीं,
 बाद अमृत पिलानेसे वया फायदा ?
 कभी गिरते हुये को उठाया नहीं,
 बाद आसूं बहानेसे वया फायदा ? कभी प्यासे को...

 मै मंदिर गया सेवापुजा भी की,
 पुजा करते हुये ये खयाल आ गया,
 कभी माँ-बापकी सेवा की ही नहीं,
 पुजा कितनी भी करली तो वया फायदा ? कभी प्यासे को...

 मैं उपाश्रय गया गुरु वाणीमुणी,
 गुरुवाणीको सुन ये खयाल आ गया,
 जैनवुल में जनम, धर्म बन न सका,
 सिर्फ़ जैनी कहलानेसे वया फायदा ? कभी प्यासे को...

 मैंने तप जप किया, दान धर्म किया,
 दान करते हुये ये खयाल आ गया,
 कभी भूखेकों भोजन कराया नहीं,
 दान लाखोंका करलूं तो वया फायदा ? कभी प्यासे को...

नयन अश्रू सारे त्यारे हुःभ धोवाय छे-
 हृदय अश्रू सारे त्यारे पाप धोवाय छे.

तव चरणो...

43

કર્યું જ્યાં કાવ્યનું...(તર્જ સુહાની ચાંદની રાતેં...)

કર્યું જ્યાં કાવ્યનું સર્જન, તમે આધાર થઇ બેઠાં,
નિહાલ્યું વિશ્વ મેં નજરેં સહુ સથવાર થઇ બેઠાં
દિઠા મેં તીર્થનાં ધામો ફર્યો હું નવા નવા ગામો (૨)
પૂછી મેં આપની ખબરોં, કહે કે મોક્ષે જઈ બેઠાં...કર્યું જ્યાં...
હશો શું કેટલું અંતર, બતાવો મોક્ષ નગરીનું ! (૨)
બતાવે કોણ કહો મુજને, સહુ લાચાર થઈ બેઠાં !...કર્યું જ્યાં..
હશો સંસારમાં રહેવું લખાયું જો હશો રહેશું (૨)
ઉગરવું હાથ તારે છે, અમે તારા થઈ બેઠાં...કર્યું જ્યાં...

વાણી તમારાં ગીત ગાઈને આજ મનભાવની બની,
આંખો તમારાં રૂપ જોઈને, પૂનિત પાવની બની,
સ્થિર બન્યું મનદું મારું, આજ તજુને ચંચળતા,
તમને નમન કરતાં, પ્રભૂ-પાભ્યો તનમનમાં સફળતા.

કસમેં વાડેં પ્યાર વફા...(ઉપકાર)

કસમેં, વાડેં, પ્યાર, વફા સબ બાતોંને હૈં બાતોંકા વયા ?
કોઇ કીસીકા નહીં હૈ, જુઠે નાતે હૈ, નાતોંકા વયા ?
સુખમેં તેરે સાથ ચલેંગે, દુઃખમેં સબ મુંહ મોંડેંગે,
દુનિયાવાલેં તેરે બનકર તેરા હી દિલ તોંડેંગે,
દેતે હૈ... (૨) ભગવાનકા ધોકા, ઇન્સાંકા વયા છોડેંગે ?
કસમે, વાડે, પ્યાર, વફા
હોગા મશીહા સામને તેરે, ફીરભી ન તું બચ પાયેગા,
તેરા અપના ખૂન હી આખીર, તુજાકો આગ લગાયેગા,
આસામાન મેં... (૨) ઉડને વાલે મીઠું મેં મિલ જાયેગા...
કસમે, વાડે, પ્યાર, વફા

વારી બધી વસુંધરાને વૈભવ તારા ચાલ્યા જશો,
ભાઈ-ભગીની-ભામની, રોતા એક હિન થઈ જશો,
રૂડો ચમકતો દેહ તારો, માટીમાં માટી થઈ જશો,
અને, નાટક સમી આ જિંદગીનો ખેલ પૂરો થઈ જશો.

खम्मा रे खम्मा... (महावीर स्वामी)

खम्मारे खम्मा मारा वीरजीने खम्मा,
त्रिशला वुँखे वीरजी जनमीयाजी हो... (२)

घणी घणी खम्मा मारा वीरजीने खम्मा,
सीधारथना नंदजी जनमीया जी हो... (२) खम्मा...

पहेलो रे परचो इन्द्र मा'राजाने दिधो (२)
अंगुठाथी भेरु वःपावीयो जी हो... (२) खम्मा...

बीजो रे परचो देव मीथ्यात्वीने दिधो (२),
मुट्ठी मारी मान हरावीयो जी हो... (२) खम्मा...

त्रीजो रे परचो ईन्द्र भूत्तिजीने दिधो (२)
आत्मानो भेद बतावीयो जी हो... (२) खम्मा...

चोथो रे परचो चंडकोशीयाने दिधो (२)
नवकारमंत्र सुणावीयो जी हो... (२) खम्मा...

एवो एक परचो दादा अमने रे देजो (२)
भवजल पार उतारीयो जी हो... (२) खम्मा...

**प्राणीभात्रने रक्षणा आप्युं, मान्या पोताना सम सङ्कुने,
पूर्ण अङ्गिसा आथरनारा, नमन तपस्वी महावीरने.**

गमे ते स्वरूपे... (तर्ज : तुम्ही मेरे मंदिर)

गमे ते स्वरूपे, गमे त्यां बिराजो,
प्रभु ! मारां वंदन, प्रभु ! मारां वंदन.
भले ना निहालुं नजरथी तमोने,
मले गुण तमारां सफळ मारुं जीवन... गमे ते स्वरूपे

जनम जे असंख्या भव्यां ते गुमाव्यां,
धरम ना कर्यो क्वे ना तमने संभार्या... आ... आ... आ
हवे आ जनमामां करुं हुं विनंती,
स्वीकारो तमे तो तूटे मारां बंधन... गमे ते स्वरूपे

मने होंश एवी, उजालुं जगतने,
किरण ना मले मारां मननां दीपकर्ने... आ... आ... आ
तमे तेज आपो, जले एवी ज्योति,
अमरपंथनां सौने करावे जे दर्शन... गमे ते स्वरूपे

જોया નથી મેં આ જનમ ધરીને, આંખો છે ઉપવાસી,
દર્શન આપો દુઃખડા કાપો, આશા પૂરો અવિનાશી,
જો એક લેણા દર્શન પામું, મુજ જન્મ સફળ બની જાયે,
જુગજુગથી જે પાતક બાંધા એ ક્ષાણભરમાં છૂટી જાયે.

ગાસ્યા ગાસ્યા રે...

ગાસ્યા ગાસ્યા રે, ગુણિયલ ગીતડાં
 ગાસ્યા રે પારસરા ગીત, જિણંદા અલબેલો રે ॥

મુખદું મલવેં રે, વામા દેવી' રા લાલહં ।
 ઝાલવેં ઝાલાહલ જ્યોત, જિણંદ અલબેલો રે...ગાસ્યાં

મનોરથ ફળિયા રે, મૂરત અલબેલડી ।
 આયા રે દાદા રે દરબાર, જિણંદ અલબેલો રે...ગાસ્યાં

સુરતરુ ફળિયા રે, પારસ પ્રભુ ભેટિયા ।
 ઝીણો-ઝીણો ઉડે રે ગુલાલ, જિણંદ અલબેલો રે...ગાસ્યાં

દેવાધિદેવા રે, કોડ મારા પૂરજો ।
 શિવરણીરો કિરતાર, જિણંદ અલબેલો રે...ગાસ્યાં

આપણાને મળેલ ભક્તિયોગ એક એવું માધ્યમ છે, જેનાથી
 મુક્તિ માર્ગ સહલાઈથી પગલાં પાડી શકાય છે.

કોને ખબર ક્યારે મળે પાછો આ ભવ માનવતણો
 માટે પ્રભુને ભજુલે મનવા, સમય છે હાથમાં ઘણો.

તવ ચરણો...

48

ગુરુ તમારા સંગમાં...

ગુરુ તમારા સંગમાં, ભવતી ને સત્તસંગમાં,
 જીવન વીતી જાય, જીવન વીતી જાય,
 એક તમારી ચાહના, બીજી કોઈ આશના
 મમ જીવન અજવાય, મ્ભ્ર જીવન અજવાય

તરુવરની શીળી છાયા જેવો વીશાલ તું
 મીઠી પરબના પાણી તરસ્યાને પાય તું,
 પીપળાની શીળી છાંઘડી, તું મીઠા જળની પરબડી
 સહુની પ્યાસ બુજાય, સહુની પ્યાસ બુજાય...ગુરુ તમારા

ગોધી ધારા તારી પાવન, પતીતોને તારતી
 મુરજાતી માનવતાને ફરી વિવહસાવતી
 જ્ઞાનની તું ગંગોત્રી, ભવતીની યમનોત્રી,
 તું છે બદ્રી વિશાલ, તું છે બદ્રી વિશાલ...ગુરુ તમારા

જ્યારે ગુરુદેવના વચનો ઉપર વિશ્વાસ થઇ જશે,
 ત્યારે જીવનમાં સાચા ધર્મની શરૂઆત થઇ જશે,
 ભક્તિમાર્ગ માનવને મળશે મોક્ષની મંજીલ,
 સજીવન થાશે શ્રદ્ધા ને શાસેશ્વાસે વિશ્વાસ થઇ જશે.

તવ ચરણો...

49

घोर अंधारी रे रातलडीमां...

घोर अंधारी रे रातलडीमां दीठां सपनां चार (२)

पहले सपने रे दीठां मैं तो सिद्धाचलना धाम,
आवजो आवजो रे साथेमळी सहु सिद्धाचलना धाम,
नव्वाणुं करशुं रे साथे मळी सहु सिद्धाचलना धाम,
भेटवा आवजो रे, सिद्धाचलमां, आदिशर भगवान, घोर..

बीजे सपने रे दीठां मैं तो शंखेशरना धाम,
आवजो आवजो रे साथेमळी सहु शंखेशरना धाम,
अटुम करशुं रे साथे मळी सहु शंखेशरना धाम,
भेटवा आवजो रे, शंखेशरमां, पारसनाथ भगवान, घोर..

त्रीजे सपने रे दीठां मैं तो पावापुरीना धाम,
आवजो आवजो रे साथे मळी सहु पावापुरीना धाम,
दिवाळी करशुं रे साथे मळी सहु पावापुरीना धाम,
भेटवा आवजो रे, पावापुरीमां महावीरस्वामी भगवान, घोर..

चौथे सपने रे दीठां मैं तो, गिरनार वेरां धाम,
आवजो आवजो रे साथेमळी सहु गिरनार वेरां धाम,
जात्रा करशुं रे साथे मळी, सहु गिरनार वेरां धाम,
भेटवा आवजो रे, गिरनारजीमां नेमनाथ भगवान, घोर..

चार शरणा...

अरिहाशरणं सिद्धाशरणं, साहुशरणं वरीए,
धम्मोशरणं पाभी विनये, जिनआज्ञा शीर धरीओ,
अरिहाशरणं मुजने होजो, आतमशुद्धि करवा,
सिद्धाशरणं मुजने होजो, राग-द्वेषने हणवा,
साहुशरणं मुजने होजो, संयम शूरा बनवा,
धम्मोशरणं मुजने होजो, भवोदधिथी तरवा,
मंगलमय चारेनुं शरणुं सधळी आपदा टाले,
चिद्धन केरी दुबती नैया, शाश्त नगरे वाले,
भवोभवना पापोने मारा, अंतरथी हुं निंदु छुं,
सर्वजीवोनां सुवृत्तोने, अंतरथी अनुमोदुं छुं.

ॐ धोः शान्तिः । अन्तरिक्षं शान्तिः
पृथिवी शान्तिः । आपः शान्तिः
औषधम् शान्तिः । वनस्पतय शान्तिः
विश्वदेवा शान्तिः । प्रलः शान्तिः
सर्व शान्तिः ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

ચાર દિવસનાં ચાંદરડા (તર્જ : ચાંદસી મહેબુગા...)

ચાર દિવસનાં ચાંદરડા પર જુઠી માયા શા માટે ?
 જે ના આવે સંગાથે...તેની મમતા શા માટે ?
 આ વૈભવ સાથે ના આવે...ધારાં સ્નેહીઓ ના' આવે
 તું ખૂબ મથે જેને જાલવવા તે યૌવન સાથે ના આવે,
 અહીંનું છે અહીંયાં રહેવાનું, એની ચિંતા શા માટે ?...જે ના...
 આ બાંધેલી મહેલાતોને...ધનદોલતનું કાલે શું થાશો ?
 જો જાવું પડશે અણધાર્યુ...મારા પરિવારનું શું થાશો ?
 સૌનું ભાવી સૌની સાથે...તેની ચિંતા શા માટે...જે ના...
 સુંગાળી દોરીનાં બંધન...સહુ આજે પ્રેમ થકી બાંધે
 પણ તૂટે તંતુ આયુષ્ણનું...ત્યારે કોઇ ના સાંધે,
 ભિડ પડે ત્યારે તડ-તડ તૂટે...એવા બંધન શા માટે...જે ના...

દોલત દગ્ગો દેશો નહીં, એ વિશ્વાસ ખોટો છે,
 સાથી દગ્ગો કરશે નહીં, એ વિશ્વાસ ખોટો છે,
 કાયા તારી કરમાશો જ-આ થાસ પણ ખોટો છે,
 જો તારો વિશ્વાસ પ્રભુ પ્રત્યે હોય તો ખોટો છે.

તવ ચરણો...

52

ચાલી ચડાવે ઓમ...(રમકડું)

ચાલી ચડાવે ઓમ ચડું ને પડું
 હું તો તારા હાથનું રમકડું, પ્રભુ હું તો તારા હાથનું રમકડું
 કાચી માટીનું ઘડીયું પૂતલું મજાનું ને રંગ બેરંગી કાયા સજાવી,
 રમવાને મોકલ્યું તે તો રંગભૂમિપર આડે ઉભો રહ્યો નાચ નચાવી,
 હસાવે હસું, ને રડાવે રડું...હું તો તારા હાથનું રમકડું
 તારી દિધેલી ચાવી, પૂરી થશો ને રમતું રમકડું આ બંધ થવાનું
 રંગો રૂપાળાં એના ઉડી જશો ને, માટી હતું તે માટી થવાનું
 પાછો આવીને તારા હાથમાં પડું...હું તો તારા હાથનું રમકડું

શગમાં જ્યોતિ ઝળહળે, જ્યાં લગ દીવે તેલ,
 પંચતત્ત્વનું આ પુતળું ત્યાં લગ કરતું ખેલ,

રમવા માટે ઘડચા રમકડાં, માટીના ભાઈ ! માટીના
 રમત રમે છે એ જ રમકડાં માટીના ભાઈ ! માટીના

તવ ચરણો...

53

छोटी-छोटी गैयां...

छोटी छोटी गैयां, छोटे छोटे घ्वाल,
छोटोसो मेरो, मदन गोपाल,
आगे आगे गैयां, पीछे पीछे घ्वाल,
बीचमें मेरो मदन गोपाल...
कालीकाली गैयां, गोरे गोरे घ्वाल,
श्यामवरण मेरो मदन गोपाल...
वया खाये गैयां, वयां खाये घ्वाल ?
वयां खाये मेरो, मदन गोपाल ?
धास खाये गैयां, दूध पीये घ्वाल,
माखन खाये मेरो, मदन गोपाल...
छोटी छोटी लकुटी, छोटे छोटे हाथ,
बंसी बजाये मेरो मदन गोपाल,
धीरे चले गैया, नाचे-कुँदे घ्वाल,
ठुमक ठुमक चले, मदन गोपाल...
वयां ओढे गैयां, वयां ओढे घ्वाल ?
वयां ओढे मेरो, मदन गोपाल ?
झूलण ओढे गैया, वंबल ओढे घ्वाल,
पितांबर ओढे मेरो मदन गोपाल...
कहां रहे गैयां, कहां रहे घ्वाल ?
कहां रहे मेरो मदन गोपाल ?
नंदपोलमे रहे गैया, झोंपडीमें घ्वाल
वैष्णव मन रहे, मदन गोपाल...

छोटी छोटी

छोटी छोटी

छोटी छोटी

छोटी छोटी

छोटी छोटी

छोटी छोटी

तव चरणो...

54

जो जो गुमावशो ना अवतार...

जो जो गुमावशो ना, अवतार मानवीनो
एळे न जाय जो जो, अवतार मानवीनो
वेवुं अमूल्य जीवन, तुजने मल्युं छे मानव
झँखे छे देवो जेने, अवतार मानवीनो. (२)

पापोनो भार तुजने, दुर्गतिमां दुःख आपे
सद्गतिमां जवाने, अवतार मानवीनो (२)

दुर्लभ भव मल्यो छे, फोगट गुमावे शीदने
प्रभु साथे प्रीत करवा अवतार मानवीनो (२)

संसार तरवा काजे, सुख-दुःखमां समता धरजे
मुक्ति रमणी वरवा, अवतार मानवीनो (२)

योर्याशी लाख भवोना भ्रमण। पछी आ दुर्लभ एवो
मनुष्य भव मल्यो छे तो ऐने अवसर सम उज्ज्वी ज्वनने
उत्सव बनाववुं अने भूत्युने महोत्सव बनाववुं. अे मनुष्यना
हाथनी वात छे...हाथमांथी ज्वा न देशो..मानव !

तव चरणो...

55

जय गिरनार...जय आबुजी...

जिनधर्मना जैन बँधुओ गाई रहा विध विध गाथा
अमर नाम इतिहासमां गौरवे गाशे गुणी गुण गाथा

जय गिरनार, जय आबुजी, जय बोलो तलाजा तीर्थनी
जैनो माटे लखशे मुनिओ विध विध गाथा ज्ञाननी
जय जय गरवी गिरनारनी...जय जय गरवी गिरनारनी...
महावीर, गौतम, नेमनाथना त्यागी भाव भुलाय नही
जैन बँधु तो तेने रे कहिये 'नवकार मंत्र' भुलाय नही
जय शोरीषा, जय भोयणी, जयबोलो पानसर तीर्थनी,
जैनो माटे...

गिरनारनी पहेली टूंके बावीसमां प्रभु नेमनाथ
सिद्धाचलनी नवमी टूंके भेटचा दादा आदिनाथ
जय राणकपुरी, जय पावापुरी, जय बोलो शीखरजी तीर्थनी,
जैनो माटे...

वसे तारंगा अजीतनाथ ने पाटण गामे पंचासरा
झगड़ीयांमां आदिनाथ ने पार्श्व पथार्या शंखेश्वरा
जय केशरीयाजी, जय उपरीयाला, जय बोलो भद्रेश्वर तीर्थनी
जैनो माटे...

वस्तुपाल ने तेजपालना भव्य जिनालय देलवाडा
जोता थावें आखु विश्व, पण देलवाडा ए देलवाडा
जय त्रिशलादेवी, जय वामादेवी, जय बोलो मरुदेवी मातनी
जैनो माटे...

तव चरणो...

56

जाग्योरे आत्मा...(तर्ज : आधा है चंद्रमां, रात आधी)

जाग्यो रे आत्मा आश जागी,
मुवितना अमृतनी प्यास जागी, अभीलाष जागी..जाग्यो
ज्यारे आत्मनो दिवडो जागे त्यारे वैभव अलखामणां लागे, (२)
हो, लागे खारो संसार, लागे प्यारो अणगार,
ओने संधमना पंथनी लगनी लागे...जाग्यो रे आत्मा...
ज्यारे आत्मनो दिवडो जागे, त्यारे बंधन संसारना त्यागे,
त्यागे मित्रोनो प्यार, त्यागे सधाळो परिवार,
ओतो वस्त्रालंकारोनी प्रीत त्यागे...जाग्यो रे आत्मा...

ज्यारे आत्मनो दिवडो जागे, त्यारे अंधारा दूर दूर भागे,
भागे पातकनो भार, भागे अवगुणनो भार
ओना मारगनां वंटको जाय भागी...जाग्यो रे आत्मा...

ज्यारे आत्मनो दिवडो जागे, त्यारे सदगुरुनो आशारो मांगे,
मांगे कर्मोनो नाश, मांगे शिवपुरनो वास,
ओतो भवभवना दुःखमांथी मुवित मांगे, जाग्यो रे आत्मा...

संयम लीधा विना आत्मा सिद्धि पाभतो नथी

तव चरणो...

57

जनारुं जाय छे जीवन...

जनारुं जाय छे जीवन, जरा जिनवरने जपतो जा,
हृदयमां राखी जिवनवरने, पुराणा पाप धोतो जा...जनारुं
बनेलो पापथी भारे, बळी पापो करे शीदने,
सळगती होळी हैयानी अरे, जालीम बुझातो जा...जनारुं
दयासागर प्रभु पारस, उछाळे ज्ञाननी छोळो,
उतारी वासना-वळो अरे, पामर तुं नहातो जा...जनारुं
जिगरमां डंखता दुःखो, थयां पापे पिछाणीने,
जिनवर ध्याननी मस्ती वडे, ओने उडातो जा...जनारुं
अरे आतम बनी शाणो, बतावी शाणपण तारुं,
हठावी जुठी जगमाया चेतन-ज्योति जगातो जा...जनारुं
खील्यां जे पुळडां आजे, जरुर ते काले करमाशे,
अखंड आतम कमललघ्नि तणी, लयदिल लगातो जा...

मे दान तो दीधुं नहीं ने शीयण पळा पाष्युं नहीं,
तपथी दभी काया नहीं, शुभ भाव पळा भावे नहीं,
आ चार भेटे धर्मभांथी में कांइ प्रभुल नव कर्पुं,
माझं भ्रमणा भव सागरे निष्फण गयुं, निष्फण गयुं

तव चरणो...

58

जोजे रे तारी जिंदगी...

जोजेरे, तारी जिंदगी जवानी
जिंदगी जवानी अल्या नथी रहेवानी
चेतरे चेतावुं माथे काळ घेयों छे
समजी लेजे आ तो तारो छेल्लो फेरो छे
पल पल जाये तारी लाख रे सवानी जोजे रे...
दोडादोडी करीने तूं पैसो कमावे,
सोना, चांदी, रुपीया तारी साथे ना आवे
धीमी धीमी जाये, तारी पापनी कमाणी जोजे रे...
आव्यो खाली हाथे, खाली हाथे जवानो,
माटीमांथी आव्यो, अंते माटी थवानो,
छेवटे तो काया तारी राख रे थवानी जोजे रे...

आकाशमां यमकार छे विज्ञीनो घडी बे घडी,
ओम जाषाजे श्ववन ताढे छे घडी के बे घडी,
अभिभान छोडीने मानव भज्जले तुं भगवानने,
आव्यो न आव्यो थै जशे करीले भक्ती घडी बे घडी

तव चरणो...

59

जीवन अंजलि थाजो...

जीवन अंजलि थाजो, मारुं जीवन अंजलि थाजो !
अणु अणु मारा आतम केहुं, तव चरणे वही जाजो...मारुं
भूख्या काजे भोजन बनजो, तरस्यानुं जळ थाजो,
दीनदुःखियानां आंसु ल्होतां, अंतर कदी ना धराजो...मारुं
सतनी कांटाळी केडी पर, पुष्प बनी पथराजो
झेर जगतनां जीरवी जीरवी, अमृत उरनां पाजो... मारुं
वणथावधां चरणो मारां नित तारी समीपे धाजों
हैयाना प्रत्येक स्पंदने तारुं ज नाम रटाजो !... मारुं

जींदगी बेकार..(तर्ज : दिलके अरमां आसुंओमें...)

जींदगी बेकार चाली जाय छे
दर्द एनुं दिलमां ऊँडुं थाय छे ...जींदगी
मूल्य समजातुं नथी आ जन्मानुं
जानवर जेवुं जीवन जीवाय छे ...दर्द
कर्मनो केवो प्रभु मारे उदय
आ महामूली मूडी खर्चाय छे ...दर्द
आ फरीथी भव मळे के ना मळे
धर्मनी मौसम नकामी जाय छे ...दर्द

तव चरणे...

60

जेना घरमां भक्तिगान...

जेनां घरमां भवित गान, ए घर आवे छे भगवान, (२)
ज्यां छे संतो तणां सन्मान, ए घर आवे छे भगवान...जेना
घरनां सौए संपी ने रहेतां, एक बीजाने दोष न देतां, (२)
नाना मोटां सौए समान, ए घर आवे छे भगवान...जेना
एकबीजानुं हित विचारी, मीठी वाणीने उच्चरवी, (२)
राखी स्वधर्म वेहुं भान, ए घर आवे छे भगवान...जेना
माता-पिताना ए संस्कारो, ऊतरे बालकमां आचारो, (२)
विकसे वुहुंब तणु उध्यान, ए घर आवे छे भगवान...जेना
एनी सुवास विश्वे व्यापे, देवो आवी थाणुं स्थापे, (२)
भावीक ए घर स्वर्ग समान, ए घर आवे छे भगवान...जेना

जानार तो जातां...(तर्ज : जाने कहां गये वो दिन...)

जानार तो जातां रहां, सदगुण जेना सांभरे,
लाखो लूंटावो तोय ए, मरनार पाछां ना मळे.
वैभव मळे, कीर्ति मळे, लक्ष्मी गयेली सांपडे,
पैसा मळे आ जगतमां, मरनार पाछां ना मळे
लाखो लडावी लाड जेणे प्रेमथी मोटा कर्या,
ए मावतरनी मीठी छाया, व्यांय जगमां ना मळे.
उतारी आपो देहनी भले खंत धरीने खालने,
तो पण एना उपकारनो बदलो जीवनमां ना वळे.

तव चरणे...

61

जा संयम पंथे...(तर्ज : बाबुल की दुवायें लेती जा)

जा संयम पंथे दीक्षार्थी...तारो पंथ सदा उजमाल बने,
 जंजीर हती जे कर्मोनी...ते मुवित्तनी वरमाल बने...जा
 होंशे होंशे तुं वेश धरे...ते वेश बने पावनकारी,
 उज्जवलता ओनी खूब वधे...जेने भावथी वंदे संसारी,
 देवो पण झाँखे दर्शनने...तारो एवो दिव्य देवार बने...जा
 जे ज्ञान तने गुरुए आप्युं, ते उतरे तारा अंतरमां,
 रगरगमां ओनो स्त्रोत वहे, ते प्रगटे तारा वर्तनमां,
 तारा ज्ञानदीपकना तेज थकी आ दुनिया झाकझमाल बने.जा
 वीतरागतणां वचनो वदती, तारी वाणी हो अभृतनी धारा,
 जे मारग गोते अंधारे, तारां वेण करे त्यां अजवालां,
 वैराग्यभरी मधुरी भाषा, तारा संयमनो शणगार बने...जा
 जे परिवारे तुं आज भले...ते उन्नत हो तुज नाम थकी,
 जीते सहुनो तुं प्रेम सदा...तारा स्वार्थ विहोणा प्रेम थकी,
 शासननी जगमां शान वधे, तारा एवा शुभ संस्कार बने.जा
 अणगार तणां जे आचारो, तेनुं पालन तुं दिनरात करे,
 ललचावे लाख प्रलोभन पण...तुं धर्मतणो संगाथ करे,
 संयमनुं साचुं आराधन...तारा तरवानो आधार बने...जा

तव चरणो...

62

जीवन लडाइ...(तर्ज : तुम्ही हो माता-पिता तुम्ही)

जीवन लडाइ जीती जनारा, प्रभु तमोने नमन अमारा
 पराक्रमोनी तमे प्रतिमा, चढाण कीधां चरम गतिमां
 गगनभूमिनां तमे सितारा, प्रभु तमोने नमन अमारा
 तमे दिवाकर तमे सुधाकर, तमे ज धरती तमे ज सागर
 अणुअणुमां बिराजनारा, प्रभु तमोने नमन अमारा
 अमे तमारां गुणो ग्रहीशुं, तमे कह्हो ते धरम करीशुं
 अमे प्रवासी तमे उतारा, प्रभु तमोने नमन अमारा
 जीवो दुःखी तो तमे दुःखी हो, तमे सुखी जो जीवो सुखी हो
 तमे सहुना सहु तमारा, प्रभु तमोने नमन अमारा

जात्रा ९९ करीये...

जात्रा नवाणुं करीये...विमलगिरि जात्रा नवाणुं करीए
 पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजागिरि ऋषभजिणंद समोसरीए...
 कोडी सहस भवपातक त्रुटे, शत्रुंजय सामो डग भरीए...
 सात छटु दोय अटुम तपस्या, करी चाढिये गिरिवरिये...
 पुंडरिक पद जपीए मन हरखे, अध्यवसाय शुभ धरीए...

तव चरणो...

63

जब कोई नहीं आता...

जब कोई नहीं आता, मेरे दादा आते हैं ।
 मेरे दुःखके दीनों में वो, बड़े काम आते हैं ।

मेरी नैया चलती हैं, पतवार नहीं होती,
 किसी औरकी अब मुझको, दरकार नहीं होती,
 मैं डरता नहीं जगसे, दादा साथ होते हैं...मेरे दुःखके दिनों

कोई याद करे उनको, दुःख हलका हो जाये,
 कोई भवित्त करे इनकी, ये उनका हो जाये,
 वो बिन बोले सब कुछ, पहचान जाते हैं...मेरे दुःखके दिनों

ये ईतने बड़े होकर दिनोंसे ध्यार करे,
 अपने भवतोंवें दुःखको, ये पलमें दूर करे,
 सब भवतींका कहेना, ये मान जाते हैं...मेरे दुःखके दिनों

मेरे मनके मंदिर में, दादाका वास रहे,
 कोई पास रहे न रहे, मेरे दादा पास रहे,
 मेरे व्याकुल ये मनको, दादा जान जाते हैं...मेरे दुःखके दिनों

જगमां जेनुं कोइ नथी, ऐने अविनाशीनी सहाय छे,
 अ सभय उपर समजाय छे, अ सभय उपर समजाय छे.

तव चरणो...

64

ज्योति जीवनमां..(तर्ज : ज्योत से ज्योत जलाते रहो)

ज्योति जीवनमां जगावी रहो, अंतर्यामी अजवालां करो,
 द्वार तमारे हुं आवी उभो, करुणानिधि करुणा करो

भांगी भ्रमणा तुटी आशा, व्यांये न मले किनारा,
 लागे सौओ बहुये नजीकनां, पण खोटा पड़छाया,
 एकज साथ तमारे रहो, अंतर्यामी अजवालां करो, ज्योति

ना कोइ छे साचा संगी, बहु रंगी छे माया,
 जीवननी वंगाल दशामां, लागे धोर अंधारा,
 मांगु अंधारा दुर करो, अंतर्यामी अजवालां करो...ज्योति

आवे समयनो पलटो त्यारे, जाथ बधुं समजाइ,
 पोतानां थइ जाये पराया, ना वंड जाणे सगाइ,
 सगपण साचु तमारुं रहो अंतर्यामी अजवालां करो...ज्योति

प्रभुजी सेवा तुम चरणमां, दीलडुं मांगे मारुं,
 भवतजनो सौ प्रेनेगावे, साचुं शरण तमारुं,
 आज अमारो फेरो फल्यो, अंतर्यामी अजवालां करो..ज्योति

दोलत तने हुनिया भरनी भणी जशे ओ दोस्त !
 कोइना दिलभां सुखनो दिवो प्रगटावी तो जो...

तव चरणो...

65

जिन तेरे चरण की शरण ग्रहुं...

जिन तेरे चरणकी शरण ग्रहुं...जिन...
हृदयकमलमें ध्यान धरत हुं, शिर तुज आण वहुं...जिन...
तुम सम खोळ्यो देव खलकर्में, पेख्यो नही कबहुं...जिन...
तेरे गुणकी जपुं जपमाला, अहर्निश पाप दहुं...जिन...
मेरेमनकी तुम सब जानो, क्या मुख बहोत कहुं...जिन...
कहे जसविजय करो त्युं साहिब, ज्युं भवदुःख न लहुं...जिन..

जोडे रे'जो राज...

जोडे रे'जो राज, जोडे रे'जो राज
भले सूरज उगे के ना उगे, भले दिवस उगे के ना उगे
भले सांज ढले के ना ढले, भले चंद्र उगे के ना उगे...तमे जोडे
आम गोतुं तेम गोतुं, गोतुं तारो संगाथ रे, गोतुं तारो संगाथ,
हुंये जाणुं तूंये जाणे, जाणे जगतनो नाथ रे, जाणे जगतनो नाथ
आभ धरती मले के ना मले, तमे जोडे रे'जो राज...तमे जोडे
राम तुं श्याम तुं मारा तीरथनो धाम तुं, मारा तीरथनो धाम
हैथामां चितरी ने राखुं छुं तारुं नाम हुं, राखुं छुं तारुं नाम
आभ धरती मले के ना मले, तमे जोडे रे'जो राज...तमे जोडे

तव चरणे...

66

जनम जनम...

(तर्ज : जनम जनम का साथ है तुम्हारा हमारा...)

जनम जनमका साथ है हमारा तुम्हारा...तुम्हारा हमारा...
तुम बिन जीवन सुनासुना, कौन करे उजीयारा...जनम...
तुम्हारे नामसे गुंजे, धरती नभ और तारे (२)
दर्शने जो भी आये, वो कर्मोंको निवारे (२)
तीन भुवनमें गुंज रहा है...महिमा अपरंपारा...जनम...
जीओ और जीने दो का, ही मंत्र शीखाया, (२)
आपसमें जीवों को, मैत्री पाठ शीखाया, (२)
सारे जगवें दाता हो तुम....करुणा वें भंडारा...जनम...

जूनुं तो थयुं रे देवल...

जूनुं तो थयुं रे देवल जूनुं तो थयुं,
मारो हंसलो नानो ने देवल जूनुं तो थयुं. (२)
आ रे काया रे हंसा, डोलवाने लागी रे,
पड़ी गया दांत, मायलु रेखुं तो रह्युं...मारो
तारे ने मारे हंसा, प्रीत्युं बंधाणी रे,
ऊड़ी गयो हंस, पींजर पड़ी तो रह्युं...मारो
बाइ मीरां कहे छे प्रभु गिरिधरनां गुण,
प्रेमनो प्यालो सहुने पाउं ने पीउं...मारो

तव चरणे...

67

जैसे सुरज की गरमीसे...

जैसे सुरजकी गरमीसे जलते हुए तनको
भिल जाये तरुवर की छाया
ऐसा ही सुख मेरे मनको मीला है
मैं जबसे शरण तेरी आया...मेरे राम...मेरे राम

भटकादुवा मेरा मन था कोई मील ना रहा था सहारा
लहरोंसे भटकी हुई नावको जैसे, मील ना रहा था कीनारा
ऊस भड़खड़ाती हुई नावको जो, कीसीने कीनारा दिखाया
ऐसा ही सुख मेरे मनको मीला है मैं जबसे शरण तेरी आया

शीतल बने आग चंदनके जैसी सद्गुरु वृपा हो जो तेरी
ऊजीयाली पुनमकी हो जाये रातें, जो थी अमावस अंधेरी
युग-युगसे प्यासी मरुभुमीने जैसे, सावनका संदेश पाया
ऐसा ही सुख मेरे मनको मीला है मैं जबसे शरण तेरी आया

जीस राहकी मंजील, तेरा मीलन हो, ऊसपर कदम मैं बढ़ाऊँ
कुलोंमें खारोमें पतझड़ बहारोमें, मैं ना कभी डगमगाऊँ
पानीके प्यासेको तकदीरने, जैसे जी भरके अमृत पीलाया
ऐसा ही सुख मेरे मनको मीला है मैं जबसे शरण तेरी आया

प्रभाद त्यां पतन छे, जगृति त्यां ज्वन छे.

तव चरणो...

68

झनन झनन झणकारो रे...

झनन झनन झणकारो रे, बोले आत्मनो एक तारो रे,
हवे प्रभुजी पार उतारो... झनन झनन...

तारलियाना तोटा नहीं पण, सुरज चंदा एक छे,
देव अनेरा दुनियामां, पण मारे मन तुं एक छे,
चमक चमक चमकारो रे, तारा मुखडानो मलकारो रे...
हवे प्रभुजी पार उतारो... झनन झनन...

तुं छे माता तुं छे पिता, तुं छे जगनो दीवो,
त्रिशलाना नानकडां नंदन, जगमां जुग जुग जीवों,
सनन सनन सनकारो रे, मुज प्राण थकी तुं प्यारो रे,
हवे प्रभुजी पार उतारो... झनन झनन...

अवनी पर आकाश रहे, तेम करजो अमपर छाया,
निशादिन अंतरमां रहेजो, महावीर तमारी माया
छनन छनन छमकारो रे, बोले घुघरीनो घमकारो रे,
हवे प्रभुजी पार उतारो... झनन झनन...

**आश भरेला मारा उरभां, अरमानो छे लाखो,
भहावीर भांगु तमारी पासे, अभीद्रष्टि भुजपर राखो.**

तव चरणो...

69

જુલો રે જુલો...

જુલો રે જુલો થેતો ત્રિશલાના જાયા,
થોને જુલાવે આખો મારવાડ રે, આખો ગુજરાત રે,
થેતો ત્રિશલાના જાયા

સોનારા પાલણીયાં માંહી, રત્નોરી ઘુંઘરીયા લગાઈ,
પુફલડાસે ઓને સજવાઈ, મોતીધોંરી ઝાલરીયા લગાઈ,
રેશમારી લીની ડોરી હાથ રે... હો વીરા ત્રિશલાના...

મોમા મોમી થોરે કાજે, ઝબલા ટોપી લાવે આજે,
ગાલોમેં ગુલાલ છાંટે, આઁખોમેં કાજલીયા લગાવે,
લાડુ મંગાવે થોરેં મોતીચુરરા... હો વીરા ત્રિશલાના...

ત્રિશલામાતા હરખે હરખે, ધીરે ધીરે, હલવે હલવે,
વીરને પોઢાવે મલકે, હાલરીયો ગાવે લલકે,
જનમ્યા રે દુનિયાના તારણહાર રે...હો વીરા ત્રિશલાના...

ધન્ય ધન્ય ઓ ત્રિશલામાતા, જનમ્યો જ્યોરે ત્રિભુવન નાથા,
જુગ જુગ જીવો જગતરા ત્રાતા, સંધરે માથે રાખજો હાથા,
ભવતો જુલાવે વીરને પારણીયે.... હો વીરા ત્રિશલાના...

કોધને શાંતિથી મારો, અભિમાનને નભ્રતાથી જીતો,
મોહને સરળતાથી ત્યાગો, લોભને સંતોષથી દૂર કરો

તવ ચરણો...

70

તારે દ્વારે આવીને...

તારે દ્વારે આવીને કોઈ ખાલી હાથે જાયના,
વારુણા નિધાન, વારુણા નિધાન

આ દુનિયામાં કોઈ નથી રે, તુજ્જ સરીખો દાતાર,
અપરંપાર દયા છે તારી, તારા હાથ હજાર,
તારી જ્યોતી પામીને કોઈ, અંધારે અથડાધના... વારુણા
શરણે આવેલાનો સાચો, તૂં છે રક્ષણહાર,
ડગમગતી જીવન નૈયાનો, તૂં છે તારણહાર,
તારા પંથે જનારો કોઈ, ભવરણમાં અટવાયના... વારુણા
ખૂટે નહી રે કદાપી એવો, તારો પ્રેમ ખજાનો,
મુવિતનો મારગ બતલાવે એવો પંથ મજાનો,
તારા શરણે જે કોઈ આવે, રંક પછી રહી જાયના...વારુણા

આવ્યો શરણો તુમારા, જીનવર કરજો આશ પૂરી અમારી,
નાલ્યો ભવપાર મારો, તુમવિષા જગમાં સાર લે કોણા મારી
ગાયો જીનરાજ આજે હર્ષ અધિકથી પરમ આનંદકારી
પાયો તુમ દર્શનાર્થે ભવભય ભ્રમણા નાથ સર્વે અમારી

તવ ચરણો...

71

તમે ભાવે ભજી લ્યો ભગવાન...

તમે ભાવે ભજી લ્યો ભગવાન, જિવન થોડું રહ્યું,
કંઈકા આત્માનું કરજો કલ્યાણ, જિવન થોડું રહ્યું...

તમે દીધેલા કોલ અમે ભુલી ગયા,
જુઠી માયાના મોહમાં ઘેલા થયા,
છીઓ થોડા દિવસના મહેમાન, જીવન થોડું રહ્યું... તમે

બાલપણ ને યુવાનીમાં અડધું ગયું,
હવે બાકી છે તેમાં ના કશુયે રહ્યું,
ચિતથી ધરો પ્રભુનું ધ્યાન, જીવન થોડું રહ્યું... તમે

નથી ધર્મના મારગે ડગલું ભર્યું,
અને ઓચિંતા જમનું જો તેઢું આવ્યું,
નહિં ચાલે રૂદન ને તોફાન, જીવન થોડું રહ્યું... તમે

હવે કહેવું આ ભાવીકનું ઉરમાં ધરો,
ચિત રાખી ભગવાનમાં, સૂરમાં ભજો,
બની આજે ભવિત્તમાં મસ્તાન, જીવન થોડું રહ્યું... તમે

**સારું સારું રાખી મુકે ને બગડે પછી ખાય,
સારાનો સ્વાદ ન ચાખે એ નર મૂરખ કહેવાય**

તવ ચરણો...

72

તમે મન મુકીને વરસ્યા...

તમે મન મુકીને વરસ્યા, અમે જન્મો જનમનાં તરસ્યા
તમે મુશલ ધારે વરસ્યાં, અમે જન્મો જનમનાં તરસ્યા
હજાર હાથે તમે દિધું પણ, જોલી અમારી ખાલી
જ્ઞાન ખજાનો તમે લુંટાયો, તોથ અમે આજ્ઞાની
તમે સૂરજ થઈને ચમચયા, અમે અંધારામાં ભટચયા.. તમે
સ્નેહ ની ગંગા તમે વહાવી, જીવન નિર્મલ કરવા
પ્રેમની જ્યોતિ તમે જલાવી, આતમ ઉજ્વલ કરવા
તમે અમૃત રૂપે વરસ્યા, અમે ઝેરનાં ધુંટડા પીરસ્યાં.. તમે
શબ્દે શબ્દે શાતા આપે, ઓવી તમારી વાણી,
ઓ વાણીની પાવનતાને અમે કદી ના પિછાણી
તમે મહેરામણ થઈ ઉમદ્યા, અમે કાંઠે આવીને અટક્યાં.. તમે

પ્રભુની દયાનો દરીયો ખૂબ ઊંડો છે, સ્વામીના સેહને
સીમાડા નથી અને કીરતારના પ્રેમને કિનારા નથી
કોઈનો પણ પ્રેમ ઓછો હોતો જ નથી માત્ર,
આપણી અપેક્ષાઓ જ વધારે હોય છે,

તવ ચરણો...

73

તારજે .. દુબાડજે ...

તારજે દુબાડજે, જીવાડજે વેં મારજે,
સઘલું તને સોંપી દીધું, નાથ પારસનાથ રે,
ઉગારજે વેં પાડજે, તરછોડ જે સ્વીકારજે,
સઘલું તને સોંપી દીધું, આદિશર ભગવાન રે...
સેવા તારી આપજે વેં, દુર તુજથી રાખજે (૨)
સ્મરણ તારું આપજે વેં, માયામાં ભટકાવજે (૨)...સઘલું તને
સતસંગ કોઇનો આપજે વેં, દુસંગમાં તું રાખજે (૨)
સદગુરુનાં ચરણોમાં, આ બાળને સ્થાન આપજે...સઘલું તને
સઘલું તારું રાખજે, પણ વાત મારી માનજે (૨)
દર્શન તારા આપજે વેં, રખડતો તું રાખજે (૨)...સઘલું તને

વમળોમાં સ્પર્ધાતી, ને ખડકોમાં અથડાતી,
મારી હોડી હાલકડોલક વાયુ સાથે વહી જાતી,
બ્લેલી બ્લેલી સહેલી રીતે સામે કાંઈ એ જોશે,
માલમ થઈને એ હંકારે, જો સુકાન હશે હરીને ભરોસે.

તવ ચરણો...

74

તારા શરણો ...

તારા શરણો આવ્યો છું સ્વિકારી લે
હવે લઈ જા પ્રભુ તારા ધામમાં (૨)
તારા હું ગિતો ગાડું બિજુ હું કર્ડ ના જાણું
તારા હું દર્શન પામું બિજુ હું કર્ડ ના જાણું,
મારા ભવોભવના (૨) બંધન તું તોડી દે... હવે લઈ જા પ્રભુ
તમે છો દિનદયાલું, મહેર કરોને વૃપાલું,
ભવિત્તમાં જીવન મારું, ભવિત્તમાં મનદું બાલું,
મારા તારા ઓ (૨) નાતાને તું જોડી દે... હવે લઈ જા પ્રભુ
તારા હું ગુણલા સમરું, બિજુ હું કર્ડ ના જાણું,
નવકારનો જાપ કરું હું, બિજુ હું કર્ડ ના જાણું,
મારી નૈયાને (૨) તું પાર ઉતારી દે... હવે લઈ જા પ્રભુ

તવ ચરણો...

75

ધરણોન્દ ને પદ્માવતી જેના ચરણ પૂજે છે,
મેલી વિદ્યા આચરનારા જેના નામે ધૂજે છે,
જેના સ્મરણાથી વટેમાર્ગુને સાચો રસ્તો સૂજે છે,
એવા શંખેશ્વરા પાર્થનાથને સૌના મસ્તક ઝુકે છે.

તारो तारो प्रभु...(श्री मुनिसुव्रतस्वामी)

(तर्ज : जरा सामने तो आओ छलीये...)

तारो तारो प्रभु भने तारो, मुज मंदीरीये पधारो,
 प्रभु ल्योने तमारी साथमां, सेवक तणी ए विनंती...तारो
 तारी मूर्ति दीलडुं मोहे, जगमगती ज्योत तारा नयनोमां सोहे
 काने वुँडण, कंठे हार सारो, प्रभु प्राण थकी तुं छे घ्यारो
 प्रभु ल्योने तमारी साथमां, सेवक तणी ए विनंती...तारो
 तारा गुणो छे अनंता, मुजने तारो हे गुणवंता (२),
 गुणो अर्पीने अवगुण नीवारजो, आ सेवकने पार उतारजो
 प्रभु ल्योने तमारी साथमां, सेवक तणी ए विनंती...तारो
 हे वीरागी हे वीतरागी, अर्ज करुं एक पाये लागी (२),
 कोई दीन मुजने संभारो, वयुं मुजने आप वीसारो,
 प्रभु ल्योने तमारी साथमां, सेवक तणी ए विनंती...तारो
 श्री मुनिसुव्रतनाथ, मुख देखी थथो आजे सनाथ (२),
 प्रभु महिमा छे अधिक तुमारो, दर्श करी हर्ष पामे आत्मा मारो
 प्रभु ल्योने तमारी साथमां, सेवक तणी ए विनंती...तारो

अशु परभाषुं शीव बनी जाओ, आभा विश्वनुं भंगण थावो,
 सर्व ज्वो भोक्षे जाओ अर्हभैया अमर तपो

तव चरणो...

76

तुम्हीं हो माता पिता...

तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बंधु सखा तूम्हीं हो
 तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बंधु सखा तूम्हीं हो
 तुम्हीं हो साथी, तुम्हीं सहारें, कोइ ना अपना सीवा तुम्हारें
 तुम्हीं हो नैया तुम्हीं खीवैया, तुम्हीं हो बंधु सखा तुन्हीं हो.
 तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बंधु सखा तूम्हीं हो
 जो खील शके ना वो फुल हम हैं, तुम्हारें चरणोंकी धूल हम हैं,
 दयाकी दृष्टि सदा ही रखना, तुम्हीं हो बंधु सखा तुम्हीं हो...
 तुम्हीं हो माता, पिता तुम्हीं हो, तुम्हीं हो बंधु सखा तूम्हीं हो

એવું દે વરદાન પ્રભુ ભને એવું દે વરદાન,
 સુખ દુઃખ બને દેખું પ્રભુ હું સર્વ એક સમાન,
 જે પાખ્યો હું પુણ્યબળે તેનું ન આવે અભિમાન,
 શાસે શાસે રહે વિશ્વાસ તારો, જ્યાં લગી દેહ માં પ્રાણ.

तव चरणो...

77

तन-मन-धन...

पार्श्वनाथजी...(४)...(कोरस)

मने वालु लागे पार्श्व तारु नाम (२)

तन-मन-धन प्रभुनां चरणोमां,

मने वालु लागे, मने ध्यारु लागे, पार्श्व तारु नाम

तन-मन-धन प्रभुनां चरणोमां...

प्रभुजी अमारा हैयामां रेजो, विनंती मारी, हाथ पकड़जो हो,
दीन जनोना नाथ छो, शासनना रखेवाल छो,
वृपा करो, करुणा निधान, तन मन धन प्रभुना,

वेशर चंदन तीलक लगाउ, पुलो सुगंधी चरणे चढाउ,
सोना रुपाथी आंगी सजावुं, हीरा मोतीथी मुगट सजावुं,
तारु पूजन करवुं ओज मारु काम...तन मन धन

नाम तमारु लेता लेता, भवसागर पार तरी जइये,
स्मरण तमारु करता करता, मुवित्त वेरा डग भरीये,
साचा हृदयथी प्रभुजी, धरुं तारु ध्यान...तन मन धन

शेनाथी सन्मान करुं ने थरणे शुं शुं भेलुं ?
जगनी थीजो जांझी लागे दिल्लुं दृष्टि धेलुं.

तव चरणो...

78

दुःखो तणा डुंगर...

दुःखो तणा डुंगर पडे, सुख साहेबी कदी सांपडे,
तो पण अरे ! आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

वैभव मळे लक्ष्मी मळे, माया तणा महेलो जडे,
ए बेघडीनी मोज छे, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

मंगळ अमंगळ ग्रह तूटे, कर्मो कदी नीज पर रुठे,
ज्वाला ऊठे तो पण अरे ! प्रभुने कदी भूलशो नहि.

झोला हींचोला खाटमां, म्हात्या वारे आनंदथी,
ए बेघडीनी साहिबी, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

बागो बगीचा पुष्पना, थासमां सुवास लीधा करो,
ए वासना स्वप्न समी, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

मोटर अने गाडी महीं, आरामथी फरता फरो,
ए पछ महीं फानी थशे, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

राज्य रिद्धिवंत नर, पळमां धूजवे कोइकने,
ए पण घणां फानी थया, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

भीख मांगवी जगमां पडे, अपवाद लोको बहु करे,
तो पण अरे ! आ देहथी, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

जगसुख साचुं दुःख छे, सुखस्तर न्यारुं छे खरे,
ए सत्य सुखने शोधवा, प्रभुने कदी भूलशो नहि.

साची वृपा कीरतारनी, तृणने तजी मरुं मरुं करे,
‘कर्मकर’ कहे पळमात्र पण प्रभुने कदी भूलशो नहि.

तव चरणो...

79

दर्शन देजो नाथ...(तर्ज : जागरे मालण जाग)

दर्शन देजो नाथ..., दर्शन देजो नाथ,
भवतो तारा तने पोकारे...दर्शन देजो नाथ...(२)

अंतरनी तमे आशा पूरजो, दुःखडा सौना हरजो,
दीनदयालु दादा मारा...रक्षा सौनी करजो, (२)
भुलुं न तने नाथ...छूटे न तारे साथ (२) भवतो तारा

प्रभु तारा चरणोमां रही, मांगु तारी सेवा,
शंखेशरा पार्श्वप्रभुजी, ओ देवाधिदेवा, (२)
हैये तारुं नाम...धरीये तारुं ध्यान (२) भवतो तारा

आमी भरेली आंखडी तारी, वरसे अमृतधारा,
वृपानिधि, वरुणासागर, जगना तारणहारा (२)
देजो मोक्षनुं धाम...हैये पूरजो हाम (२) भवतो तारा...

भक्तो तमारां ऐषु धेरे बोल्या,
सुइजो भारा अंतरयामी,
तुम यरणोकी सेवा बनगाइ,
भक्ति होजो सेवा सीरनामी.

तव चरणो...

80

दीवडो धरो...

दीवडो धरो रे प्रभु दीवडो धरो, तननां मननां तिमिर हरो,
मायानगरना रंगरागमां काथा आ रंगाणी रे,
भवसागरमां भमतां भमतां पीधां खारा पाणी रे,
दुःखडां सर्वे दूर करो...(२) दीवडो धरो रे प्रभु
जाणी जोइने मारग वच्ये, में तो वेर्या कांटा रे,
अखंड वहेती प्रेम नदीना, पाड्या हजारो फांटा रे...
देखाडो ने प्रभु राह खरो...(२) दीवडो धरो रे प्रभु
स्वारथनी आ दुनिया माहें, आशा एक तमारी रे,
जीवनना संग्राममां जो जो, जाउं ना हुं हारी रे,
अंतरायो सर्वे दूर करो...(२) दीवडो धरो रे प्रभु

तारी पासे धन दोलत हुं क्या भांगु ?
योझुं दिल ने योझी नજर दे भगवान,
सुरजनुं अज्वाणुं में तो जोइ लीधुं,
अंतरमां प्रकाश धरी दे, हे भगवान !

तव चरणो...

81

देजो दर्शन नाथ...(तर्ज : जोडे रे जो राज...)

दे...जो...दर्शन नाथ... दे...जो...दर्शन नाथ...
हे...आज जन्म महोत्सव आपनो...
आज अवसर आव्यो आनंदनो...मने देजो दर्शन नाथ
हो...आम गोतुं...तेम गोतुं...गोतुं तमारुं हुं धाम रे (२)
हो...हैयामां चीतरीने राखुं छे तमारुं नाम... (२)
के...हुं तो भवसागरमां घूमतो, प्रभु नाम मुखेथी गुंजतो...
मने देजो दर्शन नाथ...
ओ...दयालुं, ओ...वृपालु...महावीर छे प्यारुं नाम... (२)
हो...त्रिशलानो जाधो तुं छे...सिध्धारनो रे नंद... (२)
छे...शासननो तारणहार तुं...करजे मारो बेडो हवे पार तुं...
मने देजो दर्शन नाथ...

रचनाकार : वीरुजी

वीरकी संतान है उम शासन की ही शान है,
आगे बढ़ना भंत्र उमारा, मान या अपमान हो,
जैनं जयति शासनम्, जैनं जयति शासनम्

तव चरणो...

82

धन भाग्य हमारा...(शेत्रुंजय)

सिद्धाचलगिरि भेट्यां रे, धन्यभाग्य हमारा,
ए गिरिवरनो महिमा भोटो कहेतां न आवे पार,
रायण रुषभ समोसर्या स्वामी, पूर्व नव्वाणुं वारा रे, धनभाग्य
मूळनायक श्री आदि जिनेश्वर चौमुख प्रतिमा चारा,
अष्ट द्रव्यशुं...पूजो भावे, समकित मूल आधारा रे, धन भाग्य
भावभवितशुं प्रभुगुण गातां अपना जन्म सुधारा,
यात्रा करी भविजन भावे, नक्त-तिर्यच गति वारा रे, धन भाग्य
दूर देशांतरथी हुं आव्यो श्रवणे सुणी गुण तारा,
पतित उद्धारण बिरुद तमारुं, ए तीरथ जग सारा रे, धन भाग्य
संघत अढारत्यासी मास आषाढो, वदी आठम भोमवारा,
प्रभुजी चरण प्रतापसे संघमें, खीमारतन प्रभु प्यारा रे, धन भाग्य

गुलभोरी छांयडाओ भूली जैने,
भाइ ! हुं तो बावणी कांटच भाँडी भोहो,
भोहो भोहो ते वणी ऐवो भोहो के,
मने-में ज भारा छाथभांडी खोयो.

तव चरणो...

83

नाम है तेरा तारणहारा...

नाम है तेरा तारणहारा, कब तेरा दर्शन होगा
जिनकी प्रतिमा इतनी सुंदर, वो कितना सुंदर होगा !

सुखिर मुनिवर जिनके चरण, निशदीन शिष झुकाते हैं,
जो गाते हैं प्रभुकी महिमा, वो सबकुछ पा जाते हैं,
अपने कष्ट मिटाने को, तेरे चरणोमें वंदन होगा...जिनकी

तुमने तारे लाखों प्राणी ये संतोकी वाणी है,
तेरी छबीपे मेरे भगवन, ये दुनिया दीवानी है,
झुम झुम के नाचो गाओ, मंदिरमें मंगल होगा...जिनकी

मनकी मुरादें लेकर स्वामी, तेरे चरणोमें आयें हैं,
तुज चरणोंमें अर्पण करने, भवित्सुमन हम लायें हैं,
भवसे पार उत्तरनेको तेरे, गीतोंका सरगम होगा...जिनकी

नैया जुकावी में तो...

नैया जुकावी में तो जो जे ढूबी जायना...
झाँखो झाँखो दिवो मारो जो जे रे बुजायना (२)

स्वारथनुं संगीत चारेकारेर गाजे,
कोई नथी कोइनुं आ दुनियामां आजे,
तननो तंबुरो जो जे बेसूरो थायना...झाँखो झाँखो दिवो

पाप ने पुण्यनां भेद रे भूलाता,
राग ने द्वेष आजे धेर धेर धुंटाता,
जोजे आ जीवतरमां, झेर प्रसरायना...झाँखो झाँखो दिवो

श्रद्धानां दिवडाने जलतो ज राखजे,
निशदिन स्नेह केहुं तेल एमां नाखजे,
मननां मंदिरे जो जे अंधारुं थायना...झाँखो झाँखो दिवो

योवीसभां भगवान भडावीर नाम सदा भंगलकारी,
लक्ष्मीनां भंडार भरेला, गौतम गणधर गुणकारी,
स्थूलिभद्र आदि भुनियोनुं, स्मरणा सदाये सुखकारी,
सौनुं भंगल करवावाणो, जैन धरम छे ज्यकारी

श्रवतर तमारा चरणो भेद्युं,
आ भक्तने भरोसो तमारो,
तारो तो तरीये, मारो तो भरीये,
पालव पक्क्यो प्रभु तमारो.

प्रभु राखजे उधाडां द्वार...

प्रभु राखजे उधाडां द्वार, तारा बालकडाने काजे,
वृपा करजे हे किरतार, तारा बालकडाने काजेप्रभु
कोई प्रभु प्रभु करतो आवे, कोई पार्थनी धुन मचावे,
करुणा करजे हे किरतार, तारा बालकडाने काजे ...प्रभु
कोई भावे पुष्पो लावे, कोई प्रेमदिपक प्रगटावे,
रक्षा करजे तारणहार, तारा बालकडाने काजे ...प्रभु
कोई टळवळता दुःखीयां छे, कोई रोता हैया फाटे,
तुं एक ज छे आधार, तारा बालकडाने काजे ...प्रभु
प्रभु पारसनाथ अमारा, अमने प्राण थकी छे ध्यारां,
मोक्ष मारग ऐ देनार, तारा बालकडाने काजे ...प्रभु

शुं भाणको मां-बाप पासे भाणकिंडा न करे ?
ने भुभमांथी जेम आवे तेम शुं न उच्चरे ?
तेमज तमारी पास तारक आज भोणाभावथी
जेवुं बन्युं तेवुं कहुं !! ऐमां कशुं खोटुं नथी !

तव चरणो...

86

प्रभु तारुं गीत मारे गावुं छे...

प्रभु तारुं गीत मारे गावुं छे, प्रेमनुं अमृत पावुं छे ...प्रभु
आवे जीवनमां तडका छाया, मांगु हे प्रभु तारी माया,
भवित्वनां रसमां न्हावुं छे... ...प्रभु
भवसागरमां नैया जुकावी, त्यांतो भयानक आंधी चडी आवी
सामे किनारे मारे जावुं छे... ...प्रभु
तुं वीतरागी, हुं अनुरागी, तारा भजननी रड भने लागी
प्रभु तारा जेवुं मारे थावुं छे... ...प्रभु

प्रभु मारे गावुं छे...

प्रभु मारे गावुं छे तारुं गीत, मोक्षे जवानी बतावोने रीत,
मोह मायानी बेडी मोटी, पवक्कड ज एनी खुबज खोटी,
मोहनी सामे अपावोने जीत, मोक्षे जवानी बतावोने रीत...
भवित्वभावनां पुळडां लावुं, ध्यान तमारुं एकज ध्यावुं,
करवी छे तारी साथे प्रित, मोक्षे जवानी बतावोने रीत...
मुवित मार्गनो हुं छुं प्रवासी, अजरामर पदनो छुं ध्यासी,
मुवितकिरणनुं आ संगीत, मोक्षे जवानी बतावोने रीत...

तव चरणो...

87

ਪੱਖੀਡਾ ਤੁੰ ਉਡੀ ਜਾਜੇ

पंखीडा, ओ पंखीडा...पंखीडा, ओ पंखीडा,
पंखीडा तुं उडीजाजे पालीताणा रे
दादा ने कहेजे कें मारो मुजरो माने रे ...पंखीडा

ओल्या गामनां माळीडा वीरा व्हेला आवो रे
मारा दादाने माटे ताजां पुळडां लावो रे
गुलाब लावो, चंपो लावो, मोगरो लावो रे... ...दादाने

ओल्या गामनां सोनीडां वीरा व्हेला आवो रे
मारा दादाने माटे रुडां मुगट लावो रे
सोनानां लावो, हीरानां लावो, व्हेला आवो रे ...दादाने

ओल्या गामनां सुथारी वीरा व्हेला आवो रे,
मारा दादाने माटे रुडां बाजोठ लावो रे
सुंदर लावो, सारा लावो, व्हेला आवो रे ...दादाने

ओल्या गामना भाविको वीरा व्हेला आवो रे,
मारा दादाना भावभर्या गीतडां गावो रे
स्तवन गावो, साथे गावो, नाचो, गावो रे ...दादाने

નાની નાની વાતોમાં જ આપણાં સિદ્ધાંતોની પરિક્ષા થાય છે.

तव चरणो...

पथ्थरने पारस करनारा...

पथ्थरने पारस करनारा, कठीरने कांचन करनारा
प्यारा पारसनाथ, प्यारा पारसनाथ...

जीवननी ज्योति धरनारा, अंतरनुं तिभिर हरनारा
प्यारा पारसनाथ, प्यारा पारसनाथ...

पथर जेवो पामर प्राणी, नहि घडतर वें धाट,
अंधारे अंधारे भट्कुं, ना मळती कोई वाट,
घटघटना जीवतर घडनारा, आंतरशत्रुने हणनारा
प्यारा पारसनाथ, प्यारा पारसनाथ...

ભડ્ભડતી ઓલ્યા જોગીની આગમાં, નાગને બલ્ટો દીઠો,
મુંગા અે જીવને મૃત્યુ ટાણે, મંત્ર સુણાવ્યો મીઠો,
જેર હલાહલ જીરવનારા, નથનોથી અમૃત વરસાવનારા
પ્યારા પારસનાથ, પ્યારા પારસનાથ...

हुं छुं अनाथ, मारे थावुं सनाथ,
 मने देजो रे साथ, ओ त्रिभुवनना नाथ,
 भवअटवीमां भुलो पड्यो छुं, जालजो मारो हाथ,
 भुत्यांने मारग देखाडनारा, ढूबेलाने उगारनारा
 प्यारा पारसनाथ, प्यारा पारसनाथ...

તવ ચર્ચણો...

प्रभुजी आछी लागी...

प्रभुजी आछी लागी रे थोरी प्रितडी
मारा मनडामे (२) जागी जगमग ज्योत प्रभुजी...आछी
प्रभुजी थारा दर्शनसुं सुख निपजे (२)
थारी ओलुडी (२) आवे रे घणी आज प्रभुजी... आछी
प्रभुजी लगनी लागी रे थारा नामरी (२)
मारा अंतरमे (२) उठे रे हिलोर प्रभुजी... आछी
प्रभुजी भवित करवारा घणा कोड रे (२)
लागो मनडाने (२) मीठा घणा नाथ प्रभुजी... आछी
प्रभुजी थारा वियोगे, छाती धुजती (२)
दादा मागुं मागुं (२) थारी माया नाथ प्रभुजी... आछी
दादा में यें पुकारुं सुणजो विनंती (२)
थोरा भाविकोने (२) उतारो भवपार प्रभुजी... आछी

**भरणा भला है उसका जो अपने लीये ज्ये,
जुना भला है उसका जो भरे धर्म के लीये.**

तव चरणो...

90

पापीने तुं प्यार...(तर्ज : चांदीकी दीवार नी तोडी)

पापीने तुं प्यार करीले पापीनो उद्धार थशे
तारा नामे धर्मतणो दुनियामां जयजयकार थशे
धर्म कहे छे आ दुनियामां जीव बधानो सरखो छे
उंचा नीचा कर्म भले हो, आतम सौनो सरखो छे
मुविसनो अधिकार जगतमां सौ प्राणीने सरखो छे !
सरखा सौने तुं समजीले, सौनी उपर प्यार थशे... तारा
पथरने तुं घाट घडीने देव तणो आकार धरे
पावन एनुं रुप खीलववा, मंत्रोनो उच्चार करे
पथरथी शुं मानव भुंडो, ओने कां धीक्कार करे ?
झेर जशे जो आंखोमांथी, अमृतनो संचार थशे... तारा
हेत भर्या जे तुज हैयामां पापी उपर ढोळी दे
करुणानी पावन धारामां, ओना पाप झबोळी दे
बंद थया जे चक्षु ओना, हळवे रहीने खोली दे
तारो पण उद्धार थशे, ने ओनो पण उद्धार थशे... तारा

**सज्जनोथी भीजना गुणो बोल्या वगर २हेवाय नहिं
अने दुर्जनोथी भीजना दोषो बोल्या वगर २हेवाय नहिं.**

तव चरणो...

91

पाप अने प्रायश्चित्त

पाप अने प्रायश्चित्तनो आ, वेवो अजब चकरावो
रोज करुं हुं पाप अने हुं, रोज करुं पस्तावो...(२)

पाप करतां पालुं न जोयुं...जाणे अनेरो ल्हावो
रोज करुं हुं पाप अने हुं, रोज करुं पस्तावो...(२)

परमेश्वरनो डर न लागे...ना डर छे परभवनो
जीवतर एले जातुं तोये...ख्याल नथी परभवनो

रंगरागनी पाछल आवे, छे वारो रडवानो...रोज करुं हुं

धर्मने में तो जीवनमांथी जुदो पाडी दीधो
धन प्राप्तिमां नडे न एवो...सगवडीधो करी दीधो

जीववुं एवी रीते जाणे, कदीये ना मरवानो...रोज करुं हुं

कादवमां खरडीने काथा पाछो धोवा बेसुं
मायामां डूबकी मारीने...पाछो रोवा बेसुं

खबर नथी के एक दिवस, आ भवसागर डूबवानो...रोज करुं हुं

नाटकिया जेवुं छे हे प्रभु ! आखुं जीवन मारुं
पोपटियानी माफक उच्चरुं नाम प्रभु हुं तारुं

जन्ममरणनो पेरो मारो वेम करी टळवानो...रोज करुं हुं

प्रभुआशा विदुष प्रवृत्ति अटले ? यांदला पर कोलसानी भुक्की.

तव चरणो...

92

प्रभु ! तें मने जे आषुं छे...

प्रभु ! तें मने जे आषुं छे, एनो बदलो हुं शें वालुं ?
बस तारी भवित करीकरीने, मारां मनडांने वालुं...

प्रभु ! नरक निगोदथी तें तार्यो, मने अनंत दुःखोथी उगार्यो
तारा उपकार अनंता छे, एनो बदलो हुं शें वालुं ? बस तारी...

अहीं लगी पहोंच्यो प्रभु तारी कृपा, तुज शासन पाम्यो तारी कृपा
जैनधर्म तणी बलिहारी छे, एनो बदलो हुं शें वालुं ? बस तारी...

प्रभु ! मोक्षनगरनो सथवारो, हुं मोहनगरमां वसनारो
तुं भवोभवनो उपकारी छे, एनो बदलो हुं शें वालुं ? बस तारी...

पायो जी मैंने रामरतन धन...

पायो जी मैंने रामरतन धन पायो (२)
वस्तु अमोलिंक दी मेरे सत्गुर, किरपाकर अपनायो...

जनम जनमकी पूंजी पाइ, जगमें सभी खोवायो...
खर्चे न खूटे, वाको चोर न लूटै, दिनदिन बढत सवायो...

सतकी नाव, खेवटिया सत्गुर, भवसागर तर आयो...
मीरांवें प्रभु गिरिधरनागर, हरख हरख जस गायो...

तव चरणो...

93

પંખીડાને આ પિંજરું...

પંખીડાને આ પિંજરું જૂનું જુનું લાગે રે...
 બહુયે સમજાવ્યું તોથે પંખી નવું પિંજરું માંગે...
 ઉમદ્યો અંજંપો એને, પંડના રે પ્રાણનો,
 અણધર્યો કાર્યો મનોરથ, દૂરનાં પ્રયાણનો
 અણદિઠે દેશ જાવા લગની એને લાગી... બહુયે સમજાવ્યું
 સોને મઢેલ બાજાઠિયોને, સોને મઢેલ ઝૂલો,
 હીરે મઢેલ વીંઝણો મોતીનો, મોંઘો અણમુલો
 પાગલ ના બનીયે ભેરું કોઇનાં રંગે રાગે... બહુયે સમજાવ્યું
 માન માન આ પંખીડા આ નથી સજ્જનની રીત
 આવું જો કરવું હતું તો (તારે) નો'તી કરવી પ્રીત,
 ઓછું શું આવ્યું ? સાથી સથવારો ત્યાગે... બહુયે સમજાવ્યું

જગાની જુઈ જાહો જલાલી,
 પરભવની કરશે પાયમાલી,
 સોનેરી સમય આવ્યો છે હાથમાં,
 દેવ ગુરુને ધર્મ રાખીયે સાથમાં

તવ ચરણો...

94

પ્રભુજીને પડદામાં રાખમાં...

પ્રભુજીને પડદામાં રાખમાં, પૂજારી !
 તારા, આતમને ઓળખાલમાં રાખમાં !
 વાયુ વીંઝાશે ને દીવડો હોલાશે,
 એવી ભીતિ વંટોલિયાની ભાખમાં,
 આડે ઊભો છે તારો દેહ અડીખમ,
 ભળી જાશે એ તો ખાખમાં... પૂજારી તારા...
 ઊડીઊડીને આવ્યાં પંખી હિમાલેથી,
 થાક ભરેલો એની પાંખમાં,
 સાત સમંદર પાર કર્યા એનું,
 નથી રે ગુમાન એની આંખમાં... પૂજારી તારા...
 આંખનાં રતન તારા છોને હોલાથ,
 છોને હીરા લુંટાથ તારા લાખના,
 હૈયાનો હીરો તારો નહિ રે લુંટાથ કોઇથી,
 ખોટા હીરાને ખેંચી રાખ મા... પૂજારી તારા...

બંધનોપે વિજય પાકર જો નિજ સત્ય નિભાતા હૈ,
 વોહી ઈન્સાન નર સે નારાયણ ખુદ વ ખુદ બન જાતા હૈ.

તવ ચરણો...

95

प्रभुजी मांगु तारी पास...

प्रभुजी मांगु तारी पास, मारी पुरी करजे आश
 प्रभु मांगीमांगीने मांगु एटलुं
 मने आवतो भव एवो आपजे (२)

जन्म महाविदेहमां होय, वळी तीर्थकर बुळ होय
 पारणामां नवकार संभलाय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

वर्ष आठमुं ज होय, प्रभु समोसर्या होय
 उमंगे व्याख्याने जवाय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

सुणतां वैराग्य ज थाय, वळी अनुज्ञा मळी जाय
 वोइ आवे नहीं अंतराय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

प्रभु हाथे दीक्षा थाय, हजारो साथे लेवाय
 अने चौदपूरव भणाय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

जिन कल्पीपणुं होय, उग्र अभिग्रह होय
 मास-मासक्षमण कराय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

क्षणक श्रेणीए चढाय, धाती कर्म खपाय
 वेवलज्जान उत्पन्न थई जाय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

मानव जन्म मळी जाय, एवी करणी कराय
 अने मुकित्पुरीमां जवाय रे, मने आवतो भव एवो आपजे

तव चरणो...

प्रेम भरेलुं हैयुं...

प्रेम भरेलुं हैयुं लइने तारे द्वारे आव्यो छुं
 जो तुं मुजने तरछोडे तो दुनियामां वयां जाउं हुं
 जाणुं ना हुं पूजा तारी जाणुं ना भवित्तनी रीत हुं
 कालीघेली वाणीमां गातो, प्रभुजी तारां गीत हुं
 बाल बनीने खोले तारा रमवाने हुं आव्यो छुं...प्रेम भरेलुं
 संसारीना सुखडा वेरी वात विसारी मेली छे
 दिनदयाला हे जगत्राता, एक ज तुं ही बेली छे
 कंइक जनमनां पापो मारां, धोवाने हुं आव्यो छुं...प्रेम भरेलुं
 प्रभुजी तारां दर्शन काजे नयनो मारां तलसे छे
 नानकाडी आ आंखलडीथी अशुधारा वरसे छे
 चाकर थइने चरणे तारां, रहेवाने हुं आव्यो छुं...प्रेम भरेलुं

नित्य झघડवुं आ सृष्टि मां वसनारथी बनतुं नथी,
 सर्जनकार्य कदापी आ सृष्टि मां संहारथी बनतुं नथी,
 ऐम कही गयां छे महालीर स्वामी आभाये आ जगतने,
 के जे बने छे प्रेमथी ऐ तकरारथी बनतुं नथी.

तव चरणो...

प्रभु जेवो गणो...

प्रभु जेवो गणो तेवो, तथापी बाल तारो हुं,
तने मारा जेवा लाखो, परंतु एक मारे तुं,
नथी शवित्त निरखवानी, नथी भवित्त परखवानी,
नथी तुज ध्याननी लगनी, तथापी बाल तारो हुं,
नथी तप जप में किधां, नथी कंड दान पण विधा,
अधम रस्ता सदा लिधा, तथापि बाल तारो हुं
दयाकर दुःख भव कापी, अभय ने शांतिपद आपी,
प्रभु हुं हुं पूरो पापी, तथापि बाल तारो हुं.
अरिहंत देव ओ प्यारां, गुन्हा कर माफ सौ मारा,
भूत्यो उपकार हुं तारा, तथापि बाल तारो हुं

शुं बाणको भा-भाप पासे बाणकीडा नव करे ?
ने भुभमांधी जेम आवे तेम शुं नव उथ्यरे ?
तेमજ तमारी पास तारक आज भोणा भावथी
जेवुं भन्युं तेवुं कहुं तेमां कशुं खोटुं नथी !!

तव चरणो...

प्रभु आटलुं आपजे...(संथारो)

प्रभु आटलुं मने आपजे, आयुष्यनी छेल्ली घडी,
ना रहे भुज कोइ बंधन, मायातणुं छेल्ली घडी.
मरणपथारी पासे स्वजनो, ने संबंधी हो भले,
जोया करे आ देहने पण, चित्त मारुं नव चले.
मारी नजर मीठी फरे, मागे क्षमा सहु जीवनी,
प्रभु आपजे माफी मने, नानी-मोटी भुज भूलनी.
सहेवाय ना मारा थकी एवी पीडा कदी उपडे,
तो दोडीने हाजर थजे तुं, तेज स्वरूपी भुखडे
छेल्ली कसोटी आकरी, प्रभु भूँझवे सहुने घणी,
वृण्पा करीने तारजे, मने भवतजन तारो गणी.
दइ दान भवित्तनुं तें कहुं, रहेजे हवे निर्भय बनी.
आयुं वचन छे तें मने, तो पाळजे प्रभु हेतथी.
दिवस त्रण बाकी रहे, भगवान त्यारे आपजे,
देहत्यागनां समयनुं ने, दिननुं तुं ज्ञान मने.
जेथी मंगल हेतुए हुं, लीन थइने करी शवुं;
चिंतन रुडुं ने ध्यान ऊँडु, दिव्यज्योति स्वरूपनुं.
शरीर बहु निर्बळ बने ने, शास छेल्लो संचरे.
वेळा एवी तुं आपजे, ना होय अगवड कोइने,
प्रभु आटलुं मने आपजे तुं, आयुनी छेल्ली पळे,
शांति, समता, स्थिरता, मने आवीने सहेजे मळे.

तव चरणो...

पार्थ तारा नाम...

पार्थ तारा नाम छे हजार वया नामे लखवी कंकोतरी,
रोज रोज बदले मुकाम वया नामे लखवी कंकोतरी,
जुदा सवारना, जुदा बपोरना, सांजे तेम दीसो छो स्वरूपमां,
पड्युं मारे आज तारुं काम... वया नामे...

भींडभांडन पार्थजी, अमीङ्गरा पार्थजी,
जीरावला पार्थजी ने अंतरिक्ष पार्थजी,
राजनगरे मैरया पार्थजी सोहाय... वया नामे...

दभाविती लोटण पार्थनाथ सोहाय,
स्थंभन पार्थजी ने, शामलीया पार्थजी,
चिंतामणि पार्थजी ने मक्षी पार्थजी,
गोडीजी मुंबइमांय... वया नामे...

मनमोहन पार्थजी ने नाकोडा पार्थजी,
पंचासरा पार्थजी ने नवखंडा पार्थजी,
मोहसाणामां मनरंजन पार्थनाथ सोहाय... वया नामे...

अमीङ्गरा पार्थजी ने सहस्रफणा पार्थजी,
लोद्रवा पार्थजी ने स्वयं प्रभु पार्थजी,
उज्जैनमां अवंती पार्थजी सोहाय... वया नामे...

फलोदी पार्थजी ने करेडा पार्थजी,
अजाहरा पार्थजी ने वरकाणा पार्थजी,
चाणस्मामां भेटवा पार्थजी सोहाय... वया नामे...

भविकजीवोने सुमति आपो, भवसिंधुमां पार उतारो,
करशन वदे तुज पाय... वया नामे...

तव चरणो...

100

पूल नहिं तो पांखडी...

पूल नहिं तो पांखडी प्रभु, तारा चरणे धरवी,
जनम जनमनी तन मन धननी, मोहवासना हरवी
तारी दयाथी मल्युं जे मुजने, ओ छे सघल्युं तारुं,
स्वार्थ अने अभिमानथी, हुं तो करतो मारुं मारुं,
आ जगनी सौ माधा ममता, तारा चरणे धरवी...पूल नहिं
नरक निगोदना महादुःखोथी, तें प्रभु अमने तार्या,
क्षणक्षण समरे तुं प्रभु अमने, अमे भले ने विसार्या,
ऋण अनंतु छे प्रभु तारुं, शानी धाचना करवी...पूल नहिं
आ संसारे सुख मेलववा, पापनुं पाणी वलोव्युं,
स्वामी तारी भवित जेवुं, सुख वयांय ना जोयुं,
भावहृदय हुं करुं समर्पण तारे करुणा करवी... पूल नहिं

कर्म के छेर में भी प्रभूभक्ति आग लगा देती है,
श्नराजकी भक्ति आत्माको वितराग बना देती है,
संसार में रहकर इन्सान भगवानको क्युं भूल जाता है ?
जन्मो का पाप भेल प्रभूभक्ति से ही धूल जाता है.

तव चरणो...

101

बहु पुण्यवेत्रा...

बहु पुण्यवेत्रा पुंजथी, शुभ देह मानवनो मळ्यो,
 तोये अरे भवचक्रनो आंटो नहि ओववें टळ्यो,
 सुख प्राप्त करतां सुख टळे छे, लेश ए लओ लहो,
 क्षण क्षण भयंकर भावमरणे, कां अहो राची रहो ?...बहु
 लक्ष्मी अने अधिकार वधतां, शुं वध्युं ते तो कहो ?
 शुं कुळुंब के: परिवारथी, वधवापणुं ए नय ग्रहो,
 वधवापणुं संसारनुं नरदेहने हारी जवो,
 एनो विचार नहीं अहोहो ! एक पल तमने हवो !...बहु
 निर्दोष सुख निर्दोष आनंद, त्यो गमे त्यांथी भले,
 ए दिव्य शवितमान जेरी, जंजिरेथी नीकले,
 परवस्तुमां नहि मुंजवो, एनी दया मुजने रही,
 ए त्यागवा सिद्धांत वेः, पश्चात्, दुःख ते सुख नहीं...बहु
 हुं कोण छुं ? क्यांथी थयो ? शुं स्वरूप छे मारुं खरुं ?
 कोना संबंधे वलगणा छे ? राखुं वेः ए परहरुं ?
 एना विचार विवेकपूर्वक, शांत भावे जो कर्या,
 तो सर्व आत्मिक ज्ञाननां, सिद्धांततत्त्व अनुभव्यां...बहु
 ते प्राप्त करवा वचन कोनुं सत्य वेवळ मानवुं ?
 निर्दोष नरनुं कथन मानो 'तेह' जेणे अनुभव्युं,
 रे ! आत्म तारो ! आत्म तारो ! शीघ्र अने ओळखो,
 सर्वात्ममां समद्रष्टि द्यो, आ वचनने हृदये लखो...बहु

तव चरणे...

102

बधी मील्कत...(तर्ज : मेरी किस्मत में तु नहीं- प्रेम रोग)

बधी मील्कत धरुं तारा चरणे, तारी करुणानी तोले ना आवे
 ते मने प्यार जे कर्यो भगवंत, माराथी अेनुं मूल न थाये...
 जींदगीभर तने भजुं तो पण, तारी ममतानी तोले ना आवे
 ते मने धर्म जे दिधो भगवंत...माराथी अेनुं मूल ना थाये
 अनादिकाळथी भटकवामां कोइ स्थाने थयुं मिलन तारुं,
 या तो उपदेश में सुण्यो तारो, जेणे बदली दीधुं जीवन मारुं,
 भोमीया तो घणां मळ्यां मुजने, कोइ प्रभू ! तारी तोले ना आवे,
 ते मने राह जे बताव्यो छे, माराथी अेनुं मूल ना थाये...
 मळ्या जे सुखों मने आजे, ए बधा धर्मना प्रभावे छे,
 तारां चरणे बधु धरी देतां, मने आनंद अती आवे छे,
 तारुं आ त्रृण वयारे चुकवाशे, मने अंदाज अेनो ना आवे,
 भवोभव सेवना करुं तारी, तोये संतोष मुजने ना थाये...
 मने साची सलाह ते दिधी, ओथी आचरण में कर्युं अेनुं,
 खरी करणी करी भवोभवमां, आ भवे फल मळ्युं मने अेनुं,
 मारा उपकारी छे घणां जगमां, कोइ प्रभू तारी तोले न आवे,
 ते मने धर्म जे पमाड्यो छे, माराथी अेनुं मूल ना थाये...

तव चरणे...

103

भक्तिमां भींजाणा.(तर्ज : मोंरना पीछडा वालो कानुङो)

ओ...गान तपारां गातां गातां, अगे समयनुं भान भुत्यां,
खावुं भुत्यां पीवुं भुत्यां, ऊंध अने आराम भुत्यां,
ओ...राग भुत्यांने द्वेष भुत्यां वळी, पाप तणो व्यापार भुत्यां
अेवा ओवावाहार बन्यां वेः, सलगेलो संसार भुत्यां...

भवित्तमां भींजाणा रे, प्रभु तारी भवित्तमां भींजाणा, (२)

आधि ने व्याधि बधी थई गई उपाधि, (२)

ओ...ज्यारे कीर्तननां रंगमा रंगाणा रे, प्रभु तारी भवतीमां..

बसुरा काम बधां मेत्या रे वेगळा (२)

ओ...ज्यारे तं बुराना तार संभळाणा रे, प्रभु तारी भवतीमां..

मननां माकडां आव्या अंवुशमां (२)

ओ...ज्यारे मंजीरानां नाद संभळाणा रे, प्रभु तारी भवतीमां...

चिंताना घोडलां भाग्यां भडकतां (२)

ओ...ज्यारे तबलाना ताल संभळाणा रे, प्रभु तारी भवतीमां...

शांतिना सागरे दीधी रे डूबकी (२)

ओ...ज्यारे मीठां भजन संभळाणा रे, प्रभु तारी भवतीमां...

हैयानां होडलां मांड्यां हिलोळवां (२)

ओ...ज्यारे भावोनां नीर छलकाणां रे, प्रभु तारी भवतीमां...

कर्मोनां पोषडां मांड्यां उखडवां (२)

ओ...ज्यारे भवित्तनां पुर उभराणां रे, प्रभु तारी भवतीमां...

तव चरणे...

104

भक्ति करतां छूटे...(तर्ज : तने साचवे पार्वती)

भक्ति करतां छूटे मारा प्राण, प्रभु ओवुं मागुं छुं,
रहे हृदय कमलमां तारुं ध्यान, प्रभु ओवुं मागुं छुं
तारुं मुख्युं मनोहर जोया करुं,
रात दिवस गुणो तारां गाया करुं,
अंत समय रहे तारुं ध्यान, प्रभु एवुं मांगु छुं... भवित

मारी आशा निराशा करशो नहिं,
मारा अवगुण हैयामां धरशो नहिं,
थासोच्छवासे रहे तारुं ध्यान, प्रभु एवुं मांगु छुं... भवित
मारां पाप ने ताप समावी देजो,
आ सेवकने चरणोमां राखी लेजो,
आवी देजोने दर्शन दान, प्रभु एवुं मांगु छुं... भवित

प्रभु तारी भजितनो भने सहारो भण्यो छे,
के भजधारे भने कीनारो भण्यो छे,
स्वर्गनी छवे नथी रही जंभना भने,
कारणा, तारा हृदयमां उतारो भण्यो छे.

तव चरणे...

105

ભૂલાં રે પડ્યાં... (તર્જ : છૈયે દુઃખીયા રે અમે...)

ભૂલાં રે પડ્યાં રે અમે ભૂલાં રે પડ્યાં,
અમે ભવનાં મુસાફિર ભૂલાં રે પડ્યાં...
વયાં યે જવું હતું ને વયાં જઈ ચઢ્યાં,
અમે ભવનાં મૂસાફિર ભૂલાં રે પડ્યાં...

જાવાં નિકલ્યાં'તા અમે ઉગમળી દિશાઓ (૨)
આથમણે છેડે અંતે આવીને અડયાં... અમે ભવના
મનનાં મિનારા અમે બાંધ્યા'તા આભ ઉંચા (૨)
સોનાનાં શિખરો ઓનાં તૂટી રે પડ્યાં... અમે ભવના
હિરા માણેકને અમે પ્રભુ ગળી પુજીયાં રે (૨),
પથરાઓ થઈને ઓ તો પંથે નડ્યાં... અમે ભવના
જગદિશને જોવા કાજે દશો દિશા આથડ્યાં રે (૨),
આખર જોયું તો મારાં ઘરમાં જડ્યાં... અમે ભવના

તારી ભક્તિનો મને સહારો મણ્યો છે,
કે મજધારે અને કીનારો મણ્યો છે,
સ્વર્ગની હવે નથી રહી ઝંખના મને,
કારણા, તારા હદ્યમાં મને ઉતારો મણ્યો છે.

તવ ચરણો...

106

ભૂલો ભૂલે બીજું બધું... (સંત પુનીતજી)

ભૂલો ભલે બીજું બધું મા-ગાપને ભૂલશો નહિ,
અગણિત છે ઉપકાર એના, એહ વિસરશો નહિ,
પત્થર પૂજ્યા પૃથ્વીતણાં, ત્યારે દીનું તમ મુખદું,
એ પુનિતજનનાં કાલજાં, પત્થર બની છૂંદશો નહિ... ભૂલો
કાઢી મુખેથી કોછિયા મહોમાં દિક મોટા કર્યા,
એ અમૃતના દેનાર સામે, ઝેર ઉગળશો નહિ... ભૂલો
લાખો લડાવ્યાં લાડ તમને, કોડ સૌ પૂરા કર્યા,
એ કોડના પૂરનારનાં, કોડ પૂરવા ભૂલશો નહિ... ભૂલો
લાખો કમાતાં હો ભલે, મા-ગાપ જેનાં ના ઠર્યા,
એ લાખ નહીં પણ રાખ છે, એ માનવું ભૂલશો નહિ... ભૂલો
સંતાનથી સેવા ચાહો, સંતાન છો સેવા કરો,
“જેવું કરો તેવું ભરો”, એ ભાવના ભૂલશો નહિ... ભૂલો
ભીને સુઝ પોતે અને, સૂકેં સુવાડ્યા આપને,
એ અમિમય આંખને, ભૂલીને ભિંજવશો નહિ... ભૂલો
પુષ્પો બિછાવ્યાં પ્રેમથી, જેણે તમારા રાહ પર,
ઓ રાહબરના રાહ પર, કંટક કાદી બનશો નહિ... ભૂલો
ધન ખરચતાં મલશો બધું, માતા-પિતા મલશો નહિ,
એના પૂનિત ચરણો તણી ચાહના કાદી ભૂલશો નહિ... ભૂલો

તવ ચરણો...

107

ભુલા પડ્યાના તમે...(તર્જ : તુમ્હીં હો માતા-પિતા...)

ભુલાપડ્યાનાં તમે દીપકાં છો, તારણહારા ખરા તમે છો...
 ઉંચા નીચાનો ભેદ ન તમને, સૌથે છે સરખાં પ્રભુજી તમને,
 પતીતને વળી બુરા ભલાના, તારણ હારા ખરા તમે છો...
 તમારા સ્મારણે છે સુખશાતા, તમારાં દર્શનથી દુઃખ જાતા,
 તમારું શરણું છે મૂવતીદાતા, તારણહારા ખરા તમે છો...
 બહારદ્રષ્ટી બંધ કરીને, અંતર લગની લગાવવી છે,
 પ્રકાશ પુરજો અંતર અમારા, તારણહારા ખરા તમે છો...
 શ્રી જૈન સંયુક્ત મંડળ ગાવે, લેજો બચાવવી કોડુ પ્રકારે,
 જેવા તેવા તોથે, અમે તમારો, તારણહારા ખરા તમે છો...

પાપ થાય તેવું કમાશો નહિ, દેવું થાય તેવું ખર્યશો નહિ
 કલેશ થાય તેવું બોલશો નહિ, રોગ થાય તેવું ખાશો નહિ
 વિંતા થાય તેવું જીવશો નહિ.

તવ ચરણો...

108

ભજનારો તે..(તર્જ : મણીયારો તે હાલુ હાલુ...લોકગીત)

હાં... ભજનારો તે આવ્યો ત્યારે દ્વારે રે...(૨)
 પ્રભુ ભવજલથી પાર ઉતારો રે...
 આવ્યો હું તો દૂર દૂર થી ભજનારો...(૨)
 હાં... કામણગારી પ્રભુ તારી મૂર્તી ને...(૨)
 એના દર્શનથી દુઃખ દૂર થાય રે...આવ્યો હું તો...
 હાં... રંગબેરંગી પૂલાંડાં તારી આંગીમાં રે...(૨)
 તારે મસ્તકે મુગટ સોહાય રે...આવ્યો હું તો...
 હાં... બાયેં બાજુબંધ બેરખાં ને...(૨)
 તારે કાને તે વુંડલ સોહાય રે...આવ્યો હું તો...
 હાં... આંગી રચી છે તારી લાખેણી...રે...(૨)
 કેં એમાં ઝગમગ વંડ હિરલા થાય રે...આવ્યો હું તો...
 હાં... ભવત્તો મળી ગાવે તારે દ્વારે રે...(૨)
 એના જીવનની ડોર તારે હાથ રે... આવ્યો હું તો...

રચનાકાર : વીરુજી

પ્રિયવચન, સજજનતા, દાતારી ને રહેવું ખુશવંત,
 આ બધું બજારે ના મળે ! બિના કૃપા ભગવંત

તવ ચરણો...

109

ભાડાનું મકાન...

જીવ શાને ફરે ગુમાનમાં ?
તારે રહેવું ભાડાનાં મકાનમાં... (૨)
રોજ મ્હાલે છે, એસો આગમમાં,
તારે રહેવું ભાડાનાં મકાનમાં... (૨)

માની મારો મકાન, કીધા રંગ રોગાન (૨),
જાણે કાયમ (૨) લીધું છે વેચાણમાં... તારે રહેવું ભાડાનાં
રાખે એવો રૂબાબ, જાણે મોટો નવાબ (૨)
કાલ આવી (૨) કહેશે તારા કાનમાં... તારે રહેવું ભાડાનાં
લેશે જમડો જ્ઞાલી, કરશે પલમાં ખાલી (૨)
તારું ચાલે નહિં (૨) ડહાપણ ત્યાં કામમાં... તારે રહેવું ભાડાનાં
આવે હુકમનામું, નહિં ચાલે બાનું (૨)
જ્ઞાનીઓએ સમજાવ્યું છે શાનમાં... તારે રહેવું ભાડાનાં

આ મનખો મેલીને જાવું એક દાડે,
જમડાં રે હારે, કોઈનું જોર ન ચાલે,
પૂછી લે, ઉતારાં કોઈનાં કેટલાં દાડે ?
આ ખોળીયું લીધું છે માંગીને ભાડે !!

તવ ચરણો...

110

મારો બેડો લગા દિજો પાર...

મારો બેડો લગા દિજો પાર, નાકોડા'રા પારસજી (૨)
દુનિયા મેં થોરો પરચો ભારી, થોરી, મહિમા અપરંપાર,
ભૈરુજી થોરી ચૌંકી પૂરે, જિનવર, જગદાધાર
મનવાંછિત ફલ દેવો સબને, તીનલોક'રા નાથ
કર્મ ભયંકર કાટો સબરા, કરતા ઘણો ઉપકાર
દુરદેશો'રા જાત્રુ આવે, કરતા જથું જથુકાર
મંગલકારી પાર્શ્વપ્રભુજી, તીનભૂવન કિરતાર
“ભાવિક” આવે થોરે ચરણે, ભાવિત કરે દિન રાત

દુઃખીયોંકા બેલી અનાથ કા નાથ,
ઘાર હૈ હમકો પારસનાથ,
રખના હમપે મીઠી નજરીયા,
લાગી લગન તોરી જીનવરીયા.

તવ ચરણો...

111

मैत्रीभावनुं पवित्र...

मैत्रीभावनुं पवित्र झरणुं, मुज हैयामां वहयां करे,
शुभ थाओ आ सकल विश्वनुं, अेवी भावना नित्य रहे

 गुणथी भरेलां गुणीजन देखी, हैयुं मारुं नृत्य करे,
ओ संतोना चरण कमलमां, मुज जीवननुं अर्ध्य रहे,
दीन, द्वारने, धर्म विहोणां, देखी दिलमां दर्द रहे,
करुणाभीनी आंखोमांथी, अशुनो शुभ लोत वहे...मैत्री

 मार्गभुलेलां जीवन पाथिकने, मार्ग चिंधवा उभो रहुं,
करे उपेक्षा ओ मारगनी, तोये समता चित धरुं,
चित्रभानुनी (विरप्रभुनी) धर्म भावना, हैये सौ मानव लावे,
वेर-झेरनां पाप तजीने, मंगलगीतो ओ गावे... मैत्री

मंदिर तारुं विश्व रूपालुं...

मंदिर तारुं विश्वरूपालुं, सुंदर सर्जनहारा रे,
पळपळ तारा दरशन थाये, देखे देखणहारा रे... मंदिर

 नहीं पूजारी, नहीं कोइ देवा, नहीं मंदिरने ताळां रे,
नीलगगनमां भाहिमा गातां, चांदो सूरज तारा रे... मंदिर

 वर्णन करतां शोभा तारी, थावयां कविगण सारा रे,
मंदिरमां तुं वयां छुपायो, शोधे सौ शोधनारा रे... मंदिर

तव चरणो...

112

मैली चादर...

मैली चादर ओढवे: वैसे, द्वार तुम्हारे आऊं ?
हे, पावन परमेश्वर मेरे, मन ही मन शरमाऊं..मैली चादर

 तूने मुझको जगमें भेजा, देकर निर्मल काया,
अकरवे: संसारमें भैने, इस पर दाग लगाया,
जनम जनमकी मैली चादर, वैसे दाग छुपाऊं..मैली चादर

 निर्मल वाणी पाकर तुझसे, नाम न तेरा ध्याया,
नैन मलाकर हे परमेश्वर, कभी न तूझको ध्याया,
मन वीणाके: तार हैं टूटे, अब वया गीत सुनाऊं..मैली चादर

 ईन पैरोंसे चलकर तेरे, मंदिर कभी न आया,
जहां जहां हो मूरत तेरी, कभी न शीश झुकाया,
हे महावीर मैं हारके आया, अब वया हार चढाऊं..मैली चादर

गर्व लधने हुं तो हुनियामां फूतो,
लोकोनी वाहवाह पर गाजगाज उछृतो,
क्षणो क्षणो कोध करुं, क्षणो क्षणो राग करुं,
अंतरना खूणो खूणो, इर्धानी आग भरुं.

तव चरणो...

113

मिछामी दुक्कडम्...

धर्म आराधनानो अेकज छे सार, करजो क्षमापना बनीने उदार
सहुने खमावो अंतरनी साथे, पश्चातापनी आंसुभरी आंखे
करजो सहुनां आतमथी घार... करजो क्षमापना

भूलो बिजानी यादना आवे, प्रेममां जोजो फरीयाद ना आवे
सहुथी भहान छे क्षमा आपनार... करजो क्षमापना

तूटेलां प्रीतिना तारेने सांधी, हैये क्षमाना तोरण बांधी
तूटचां दिलोनां जोडजो तार... करजो क्षमापना

करुणानां काजल आंखोमां आंजो, मैत्रीथी मेला मनडांने मांजो,
हेत ने प्रीतिनां साजो शणगार... करजो क्षमापना

आंसु उदासीना अंधारा हरजो, स्नेहनां दिवडा जीवनमां धरजो
'मिच्छामि दुवकःडम्' ना गुंजे रणकार... करजो क्षमापना

ક્ષમાપના

खाएमि सब्ब जीवे, सब्बे जीवा खमंतु मे,
मित्ती मे सब्ब भूओसु, वेरं मज़ज़न न केणाई

વીરેન્દ્ર દોશી, રમીલા દોશી, ભાવિક દોશી, જીનલ દોશી,
જૈના દોશી તથા સમસ્ત ગુંદરવાલા પરિવાર (ઘાટકોપર-મુંબદ)

ગામ : મોટા ખુંટવડા-મહુવા-સૌરાષ્ટ્ર

તવ ચરણો...

114

मीठां मधु ने मीठा मेहुला...(कविश्री वोटादकर)

ਮੀਠਾਂ ਮਧੁ ਨੇ ਮੀਠਾਂ ਮੇਹੁਲਾ ਰੇ ਲੋਲ,
ਏਥੀ ਮੀਠੀ ਤੇ ਮੌਟੀ ਮਾਤ ਰੇ,
ਜਨਨੀਨੀ ਜੋਡ ਜਗੇ ! ਨਹਿ ਜਡੇ ਰੇ ਲੋਲ. (੨)

प्रभुनां ओ प्रेमतणी पूतळी रे लोल,
जगथी जुदेरी एनी जात रे,
आमीनी भरेली एनी आंखडी रे लोल,
व्हालनां भरेलां एनां वेण रे,

जननी नी...

हाथ गूंथेल एना हीरनां रे लोल,
हैयुं हेमंत वेरी हेल रे,

जननी नी...

देवोने दूध एनां दोह्यालां रे लोल,
शाशीए सिंचेल एनी सोड्य रे,

जननी नी

जगन्नो आधार एनी आंगळी
काळजामां वैःक भर्या कोड रे,

जननी नी

ਮੂੰਗੀ ਆਸ਼ਿਥ ਤਰੇ ਮਲਕਤੀ ਰੇ ਲੋਲ,
ਲੇਤਾਂ ਖੁਟੇ ਨ ਏਨੀ ਲਾਣ ਰੇ,

जननी नी...

गंगाना नीर तो वधे घटे रे लोल,
सरखो अना प्रेमनो प्रवाह रे,

जननी नी...

वरसे घडीकां व्योम वादली रे लोल,
माडीनो मेघ बारे मास रे,

जननी नी...

तव चरणो...

115

મારું આયરવું ખૂટે.(તર્જ : જરા સામને તો આવો છલીયે)

મારું આયદું ખૂટે જે ઘડીએ, ત્યારે મારા હૃદયમાં પધારજો
છે અરજી તમોને બસ એટલી, મારા મૃત્યુને સ્વામી સુધારજો
જીવનનો ના કોઝ ભરોસો...દોડાદોડીનાં આ યુગમાં
અંતરિયાલે જઇને પહું જો...ઓચિંતા મૃત્યુના મુખમાં
ત્યારે મારા સ્વજન બની આવજો, થોડાં શબ્દો ધરમના સુણાવજો,
છે અરજી તમોને બસ એટલી, મારા મૃત્યુને સ્વામી સુધારજો..

દર્દો વધ્યા છે આ દુનિયામાં...મારે રીબાવી રીબાવીને
એવી બીમારી જો મુજને સતાવે...છેલ્લી પછોમાં રડાવીને
ત્યારે મારી મદદમાં પધારજો, પીડા સહેવાની શક્તિ વધારજો,
છે અરજી તમોને બસ એટલી, મારા મૃત્યુને સ્વામી સુધારજો..

જીવનું થોડું ને ઝાંઝાલ ઝાઝી, એવી સ્થિતિ છે આ સંસારની
છૂટવા દે ના મરતી વેળાએ...ચિંતા મને જો પરિવારની
ત્યારે દીપક તમે પ્રગટાવજો... મારા મોહ તિમિરને હટાવજો,
છે અરજી તમોને બસ એટલી, મારા મૃત્યુને સ્વામી સુધારજો..

યાદ રાખજો, એ મુસાફર સ્ટેશનમાંથી વહેલો બહાર
નીકળી જાય છે. જેની પાસે સામાન હોતો નથી...

તવ ચરણો...

116

મારી આંખોમાં પાર્થનાથ...

મારી આંખોમાં પાર્થનાથ આવજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે વધાવું
મારા હૈયાનાં હાર બની આવજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે વધાવું.
તમે વામાદેવીના જાયા, ત્રણે લોકમાં આપ છવાયા (૨)
મારા મનનાં મંદિરીયે પધારજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે...વધાવું
ભવસાગર છે બહુ ભારી, ઝોલા ખાતી છે નાવડી મારી (૨)
નૈયાનાં સુકાની બની આવજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે...વધાવું
મને મોહરાજાએ હરાવ્યો, મને મારગ સાચો ભૂલાવ્યો (૨)
જીવનના સારથી બની આવજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે...વધાવું
મારા દિલમાં રહ્યા છો આપ, મનમાં ચાલે તમારો જાપ (૨)
મારા મનનાં મયુર બની આવજો રે, હું તો પાંપણના પુષ્ટે...વધાવું

આપણો કદાચ દિક્ષિત ન થઈ શકીએ, તો પણ હુષિત
તો ન જ બનીએ, સંત ન બની શકીએ-શાંત તો બનીએ,
યોગી ન બની શકીએ પણ ઉપયોગી તો બનીએ.

તવ ચરણો...

117

મંગલ મંદિર...

મંગલ મંદિર ખોલો દયામથ ! મંગલ મંદિર ખોલો
જીવનવન અતિ વેગે વટાવ્યું, દ્વારે ઉભો શિશુ ભોલો,
તિમિર ગયું ને જ્યોતિ પ્રકાશયો, શિશુને ઉરમાં લ્યો, લ્યો
દયામથ ! મંગલ મંદિર ખોલો...

નામ મધુર તવ રદ્ધ્યો નિરંતર, શિશુ સહ પ્રેમે બોલો,
દિવ્યતૃષાનુર આવ્યો બાળક, પ્રેમે અમીરસ ઢોલો.
દયામથ ! મંગલ મંદિર ખોલો...

મુક્તિ મળે કે ના મળે...

મુક્તિ મળે કે ના મળે...મારે ભવિત્ત તમારી કરવી છે.
મેવા મળે કે ના મળે...મારે સેવા તમારી કરવી છે...મુક્તિ
મારો કંઠ મધુરો ન હોય ભલે, મારો સૂર બેસૂરો હોય ભલે (૨)
શાબ્દો મળે કે ના મળે, મારે સ્તવના તમારી કરવી છે...મુક્તિ
આવે જીવનમાં તડકા ને છાયા, સુખ દુઃખનાં પડે પડ્છાયા (૨)
કાયા રહે કે ના રહે, મારે માયા તમારી કરવી છે...મુક્તિ
હું પંથ તમારો છોડું નહિ, ને દૂર દૂર ક્યાંયે દોડું નહિ, (૨)
પુણ્ય મળે કે ના મળે, મારે પૂજા તમારી કરવી છે...મુક્તિ

તવ ચરણો...

118

મારો નવકાર બેલી...(તર્જ : બહારોં ફુલ બરસાઓ)

જગત રૂઠીને શું કરશે ? મારો નવકાર બેલી છે !
હજારો મંત્ર શું કરશે ? મારો નવકાર બેલી છે !
સુદર્શનશોઠની ઉપર ચઢાવ્યું આઠ રાણીએ
ચઢાવ્યા શૂલી પર જ્યારે, ચઢયા નવકારના ધ્યાને
થયું શૂલીનું સિંહાસન...મારો નવકાર
શ્રીમતી શ્રાવિકાસતીને દીધું અતિ દુઃખ સાસરિયે
ઘડામાં સર્પ મૂકીને કાહું પુલમાલ લાવોને
ગણી નવકાર લાવે પુલમાલ...મારો નવકાર
અમરને હોમવા કાજે મંગાવ્યો બાલ શ્રેણિએ
લાવ્યા અમ્નિવુંડની પાસે ગથો નવકારને શરણે
થથો ચમત્કાર નમે તત્કાલ...મારો નવકાર
પ્રભુએ કાણ ચિરાવી ઉગાર્યા નાગ-નાગણને
નવકાર મંત્ર સુણાવી કયો ઉધાર યુગલનો
બન્યાં ધરણોન્દ્ર-પદ્માવતી...મારો નવકાર

ચમત્કાર ત્યાં નમસ્કાર નહીં,
પણ નમસ્કાર ત્યાં ચમત્કાર

તવ ચરણો...

119

માનવનો જન્મ મલ્યો...

માનવનો જન્મ મલ્યો, મહાવીરનો ધર્મ મલ્યો,
આવો સંયોગ નહીં આવે ફરીવાર...નહીં આવે ફરીવાર...
સંતોનો સંગ મલ્યો, ભવિત્તનો રંગ મલ્યો...આવો સંયોગ
માનવનો જન્મ છે, મુવિત્તનું બારણું,
મહાવીરનો ધર્મ છે વિરતીનું પારણું...
પ્રેમનો પ્રકાશ મલ્યો, જ્ઞાનનો ઉજાસ મલ્યો...આવો સંયોગ
માનવના જન્મને દેવતાઓ ઝાંખતા,
સ્વર્ગના સુખચેન એને વારંવાર ડંખતા,
મુંદર આ દેહ મલ્યો, જિનવરનો સ્નેહ મલ્યો...આવો સંયોગ
જન્મને ઉજાલ્ઘો, છે માનવીના હાથમાં,
ધર્મનો પ્રકાશ છે માનવીના સાથમાં,
રૂડો અવતાર મલ્યો, જીવન આધાર મલ્યો...આવો સંગોય

એક સરખી બે શિલાઓ, ખાણમાંથી સાંપડી,
એકની મૂર્તિ ઘડી, બીજી પગથીયામાં જડી,
એકને જોવા-જુઓ, ભક્તોતણાં ટોળાં ધસે,
બીજી ઉપરે લોકો, ચંપલ અને જોડાં ધસે.

તવ ચરણો...

120

મારી નૈયા માંગે... (તર્જ : માઝી નૈયા, હુંદે કિનારા)

મારી નૈયા માંગે સહારા, (૨)
કોઇ ને કોઇ દિન આશા છે કે પહોંચે કિનારા...મારી નૈયા
પંથ લાંબો અતિ, માર્ગ વિકાટ છે,
શું યે વાદળ ધનધોર આકાશે...હો...હો
ઘડી ને ઘડી લાગે, વાગી રહ્યા છે માથે નગારાં, મારી નૈયા
ચારે દિશા જાણે ડોલતી લાગે,
ડગમાગ ડગમાગ નૈયા થાયે...હો...હો
કોઇ ને કોઇ રીતે બચી ઓને તો જાવું કિનારા...મારી નૈયા
જીવનનૈયા મારી તારે ભરોસે,
આંધી ભયંકર ચડી છે આકાશે...હો...હો
ઘડી ને ઘડી શું યે ઉછલી રહ્યાં નીર આ ખારા...મારી નૈયા
શ્રી જૈન સંયુક્ત મંડળ માગે,
આશા અવરની કદીયે ન રાખે...હો...હો
તારી કૃપાથી પહોંચે નૈયા મુવિત કિનારા... મારી નૈયા

હવે અમારે શું ગમતું ? ને શું અણામતું ?
હરીનામના હલેસાં છે, નાવ ભલે ને રમતું !

તવ ચરણો...

121

માતા મરુદેવીના નંદ...

માતા મરુદેવીના નંદ, (૨)

દેખી તાહરી મૂરતિ મારું મન લોભાણું જી,
મારું ચિત્ત ચોરાણું જી...માતા મરુદેવીનાં નંદ...

કારુણાનાગર કારુણાસાગર, કાથા વંચનવાન,
ઘોરીલંછન પાઉલે કાંડું, ધનુષ પાંચસે માન...માતા

ત્રિગડે બેસી ધર્મ કહંતા, સુણે પર્ષદા બાર,
જો જનગામિની વાણી મીઠી, વરસંતી જલધાર...માતા

ઉર્વશી રૂડી અપછરાને, રામા છે મન રંગ,
પાયે ને પૂરું રણજણે કાંડું, કરતી નાટારંભ...માતા

તુંહી બ્રહ્મા તુંહી વિધાતા, તું જગતારણહાર,
તુજ સરીખો નહિ દેવ જગતમાં, અડવડીઓ આધાર...માતા

તુંહી ભાતા તુંહી ત્રાતા, તુંહી જગતનો દેવ,
સુર-નર કિફન્નર વાસુદેવા, કરતાં તુજ પદ સેવ...માતા

શ્રી સિદ્ધાચલ તીરથ વેરો, રાજા ત્રદ્ધભાજિણંદ,
કીર્તિ કરે 'માણેકમુનિ' તાહરી, ટાળો ભવભવ ફંદ...માતા

શેત્રનુંજથ શિખરે દીવો રે, આદેશર અલબેલો રે...

તવ ચરણો...

122

મુખિતપુરીના સ્વામી...(તર્જ : દુનિયા બનાનેવાલે)

મુખિતપુરીના સ્વામી, સાંભળો અરજ અમારી,
દેખાડો નગરી તમારી, અમને, દેખાડો નગરી તમારી,

ખૂબ ભમ્યા અમે આ જંગલમાં, આશા લઇને એકજ મનમાં,
માલશે કદી ના કદી મીઠો વિસામો, (૨)

છોડી દેશું ત્યારે સધળો ઉધામો
થાવથા હવે તો અમે, આશ ફળી ન અમારી...દેખાડો...

આ જંગલના ભોજન ધ્યારાં, રંગ અનોખાં સ્વાદ નિરાલા,
ખાવાનું તો એક ટાણું ના ચૂવયાં (૨)

તોય રહ્યાં અમે ભૂખ્યાં ને ભૂખ્યાં,
જાગે છે વારે વારે-ભાંગોને ભૂખ આ અમારી..દેખાડો...

આ જંગલના શીતલ પાણી, આગ શરીરની ના સહેજે બુજાણી,
જીવનને તો એ લાગે અકારા (૨)

વર્ષાવો ને પ્રભુ પ્રેમની ધારા,
તરસ્યાં જુગ જુગનાં અમે, પ્યાસ છીપાવો અમારી...દેખાડો.

આપું હું જન્મોજન્મથી પરિક્ષા,
હવે તો પરિષામની છે પ્રતિક્ષા !

તવ ચરણો...

123

મારા ઘટમાં બિરાજતા...

હે..મારાઘટમાં બિરાજતા શ્રીનાથજી, યમુનાજી શ્રીમહાપ્રભુજી

મારું મનદું છે ગોકુલ વનરાવન (૨)

મારા તનનાં આંગળીયામાં તુલસીના વન,

મારા પ્રાણજીવન...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

હે..મારા આતમને આંગળે શ્રી મહાપ્રભુજી,

મારી આંખો દીસે ગીરીધારી રે ધારી (૨)

મારું તનમન ગયું જેને વારી રે વારી,

મારા શ્યામ મુરારી...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

હે..મારા પ્રાણ થકી મને વૈષ્ણવ વ્હાલાં,

નિત્ય કરતા શ્રીનાથજીને કાલા રે વાલા (૨)

મેં તો વલ્લભ પ્રભુજીનાં કીધાં રે દર્શન,

મારું મોહી લીધું મન...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

હે..આવો જીવનમાં લ્હાવો ફરી કદી ન માલે

વારે વારે માનવદેહ કદી ન માલે (૨)

એરો લખરે-ચોરાસીનો મારો રે ફાલે,

મને મોહન માલે...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

અનુસંધાન પાના નં પર

તવ ચરણો...

124

અનુસંધાન પાના નં સે

હું તો નીત્ય વિદૃલવરની સેવા રે કરું,

હું તો આઠે સમા વેરી જ્ઞાંખી રે કરું (૨)

મેં તો ચીતદું શ્રીનાથજીને ચરણે ધરું

જીવન સફળ કરું...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

મારા અંતસમય કરી સુણો રે અરજી,

લેજો શરણમાં શ્રીનાથજી દયા રે કરી (૨)

મને તેડા રે યમ વેરા કદી ન આવે,

મારો નાથ તેડાવે...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

મેં તો પુષ્ટિમારગ વેરો સંગ રે સાધ્યો,

મને ધોંલ કીર્તન, વેરો રંગ રે લાગ્યો,

મેં તો લાલાની લાલી વેરો નંગ રે ભાંગ્યો

હિરલો હાય લાગ્યો...હે મારા ઘટમાં બિરાજતા...

પ્રભુકે પ્રતિ ખાર જબ અનંત હો ગયા,
યે રોમ રોમ મેરા સંત હો ગયા,
દેવાલય હો ગયા યે બદન મેરા,
ઓર હદ્દય તો મેરા મહંત હો ગયા.

તવ ચરણો...

125

મારી આ જીવન નૈયા...(તર્જ : રમૈયા વસ્તાવૈયા..)

મારી આ જીવનનૈયા-મારી આ જીવનનૈયા

જોજે ના ડુબે નૈયા-જોજે ના ડુબે નૈયા

નાવ ઝોલે ચડી ઊંચે આંધીચડી મારે જાવુંછે દુર કેં સુઝે નહીં,
નથી જડતી કડી રાત કાલી નડી ઘનઘોર ઘટા જાણે છાંડ રહી,
દશા છે આવી મારી, એને તું લે ઉગારી (૨)...જો જે ના

મેઘભીષણ ગરજે વીજ કાડવાડ બોલે,

મને એવેં કિનારો જોગા ના મલે

જાણે પાણી તળે, સામું કોઇના મલે, તને યાદ કરું છું. હું પલે પલે
સાગર છે બહુ તુફાની, પ્રભુ તું છે સુકની (૨)...જો જે ના

ચંદ્ર વાદળ છુપાય, તારલીયા ના દેખાય,

રાત અંધારી વેમે કરી ના સહેવાય

નાવ મારી અથડાય, મોજા સાથે પછડાય,

નાવ તુટીને અંદરમાં પાણી ભરાય

નૈયા જો ડુબી મારી, જશે લાજ પ્રભુ તારી (૨)...જોજે ના

મારી જીવનની નાવ પાર એને લગાવ,

મારા અંતરનાં ખુણામાં દીપક પ્રગટાવ

જાય જેથી અંધકાર, પહોંચું સાગર ને પાર,

જૈન સંયુક્ત મંડળ કરે જયકાર

પ્રભુ તારા ગીતડાં ગાવા, મારે મન મોટા લ્હાવા (૨)..જોજે ના

તવ ચરણો...

126

માઁ-બાપની આજા માગે છે...(દીક્ષાર્થી)

(તર્જ : માઇની માઇ... હમ આપકેં હૈ કૌન ?)

માડી (બાપુ) મુજને આશીષ આપો મારે સંયમ લેવો,
ગુરુ સેવાથી જ્ઞાન મેલવવું લેવો નિર્ણય એવો

મન મારું હવે નથી લાગતું, છે સંસાર અસાર,
તન મારું હવે થનગને છે, લેવા સંયમ આચાર
ધનદૌલત છે ધર્મ આ યારો, સંયમનો અણગાર...ગુરુ સેવાથી

ધન-લક્ષ્મી ને વૈભવ સધાંઠાં છે બંધનનાં સુલ
વહેવારને વેપારમાં સધાલે લાગે હૃદયમાં શુલ
સગાં સંબંધી મારાં છે હવે ગુરુજનનો પરિવાર...ગુરુ સેવાથી

ધર્મ કરીને ભવને તરવો છે એકજ આધાર,
સંયમ વિના સિદ્ધિ નથી, ગુરુચરણે ઉદ્ધાર
આશીષ આપો ભવને કાપું એવા થાય આચાર...ગુરુ સેવાથી

રચનાકાર : વીરુજી

ગુરુ હોય સરળ-ગુરુ હોય તપસ્વી,
ગુરુ હોય ગંભીર-ગુરુ હોય તેજસ્વી,
ગુરુ હોય વીર-ગુરુ હોય ઉપકારી,
ગુરુ શાંતિ દાતા-ગુરુ ગુણ ભંડારી.

તવ ચરણો...

127

मीठे रस से भर्योरी...

मीठे रस से भर्योरी, राधारानी लागे, राधारानी लागे,
मने कारो कारो जमुनाजी'रो, पानी लागे...मीठे रस से
जमुनाजी तो कारी कारी, राधा गोरी गोरी,
बृन्दावन मे धुम मचाये, बरसानाकी छोरी,
ब्रजधाम राधा जुकी रजधानी लागे, रजधानी लागे,
मने कारो कारो जमुनाजी'रो पानी लागे...मीठे रस से
कान्हा नित-मुरलीने तेरे, सुभिरें बारंबार,
कोटिन्ह रुप धरे मनमोहन, तउ न पावे पार,
रुपरंगकी छबीली, पटरानी लागे, पटरानी लागे,
मने कारो कारो जमुनाजी'रो पानी लागे...मीठे रस से
ना भावे मने माखण भिसरी, अब ना कोइ मिठाई
म्हारी जीलडीयांने भावे, राधानाम भलाई,
बृषभानकी लली तो गुणधानी लागे, गुणधानी लागे,
मने कारो कारो जमुनाजी'रो पानी लागे...मीठे रस से
राधा राधा नाम रटत है, जो नर आठोधाम,
तिनकी बधा दूर करते है, राधा राधा नाम,
राधानाम मे सफल जिंदगानी लागे, जिंदगानी लागे,
मने कारो कारो जमुनाजी'रो पानी लागे...मीठे रस से

तव चरणो...

128

याद आवे मोरी मा...

याद आवे मोरी मा...याद आवे मोरी मा
जन्मदाता जननी मोरी, याद आवे मोरी मा
नानो हतो ते दि'लाड लडावती मोढामां भोजन देती
नाना रसोडे जमवा बेसी...चानकी धरी देती
केवी मायालुं मा...केवी प्रेमालुं मा जन्मदाता...
रडतो हुं तो ज्यारे ज्यारे...दुःखी ए बहु थाती
दीकरा मारा जोइए तने शुं ? बोल बोल एम कहेती.
मारां आंसुडा लोती मा...माथे हाथ पेरवती मा जन्मदाता...
पा-पा पगली भरतो ज्यारे...राजी ए बहु थाती
कांड बोलुं ने...कांड चालुं तो घेली घेली थाती
केवी प्रेमालुं मा...केवी मायालुं मा जन्मदाता...
तपोवनमां भणवा आव्यो, संस्कारो लइने जईश
माता-पितानी सेवा करीने आशिष रुडां लइश
मारुं साचुं तीरथ मा, मारुं मोटुं तीरथ मा जन्मदाता...

जो कुछ था भेरे पास वो कर दिया तुझारे हवाले,
अब तो तुं हीं ज्ञभेदार, हुकरा दे-याहे अपना ले.

तव चरणो...

129

राधा जेवां पूळडां...

राधा जेवां पूळडांने श्यामल जेवो रंग,
आज तारी आंगीनो कांइ, रुडो बन्यो छे रंग
प्यारां पार्थजी ओ लाल, मोरा नाथजी ओ लाल,
दिन-दयाळ मुझने नयने निहाळ !... प्यारां पार्थजी
जोगी वाडे जागतो ने, मातो धिंगड मल,
श्यामलो सोहामणो कांइ जित्या आठे मल...प्यारां पार्थजी
तूं छे मारो साहीबो ने, हूं छुं तारो दास,
आश पूरोने दासनी कांइ, सांभळी मारानाथ...प्यारां पार्थजी
देव सधळां दीठां तेमां, एक तूं अच्चल,
लाखेणुं छे लटवुं तारुं, देखी रीझे मन... प्यारां पार्थजी
कोई नमे पीर अने, कोई नमे राम,
‘उदयरत्न’ कहे प्रभुजी, मारे तुम शुं काम...प्यारां पार्थजी

हंस रहे हो आप जैसे हजारो के भीयमें,
हसता है कुल जैसे, बाणोके भीयमें,
रोशन रहो आप उसी तरह दुनियामें,
जैसे गणनमें थांद, सितारों के भीयमें.

तव चरणो...

130

राजा शत्रुंजा'रा धणीयो...

थोने पुकारु मैं तो बार-बार ओ मारा आदिनाथ ओ
राजा शत्रुंजा'रा धणीयो...

ऊंचा हुंगर गेहरी झाडी, घुमटरो नजारो ओ
सोनारा सूरजरे जेडो, इन्डारो चमकारो ओ
ओ, जिनमें बिराजे मारा आदिनाथ, ओ..राजा शत्रुंजा'रा
दुजोडा तिरथरी शोभा, म्हासुं कही न जावे ओ,
राणकपुर दुनियामे छायो, पंच तिरथमें राजा ओ,
ओ, जिणरा थांबलीया गणता लागे वार, ओ..राजा शत्रुंजा'रा
गढ चढता आबूजी मोने, थाक धणेरो लागे ओ,
देराणी जेठाणीरा गोखलीया प्यारा लागे ओ,
ओ, दरिसण करवारी मोने लागी प्यास, ओ..राजा शत्रुंजा'रा
रावण जेडी मोटी हस्ती, अष्टापद गिरी आयो ओ,
नव विधीओसु नाटक करतो, प्रभु रीझावण लागो,
ओ, भावधारीने गासी होसी पार, ओ..राजा शत्रुंजा'रा
आदेशररे द्वारे आवी गीत प्रभुरो गायो ओ,
“भाविक” तमने अर्ज करे प्रभु, सबने दर्शन दिजो ओ,
ओ, डूबती नैया'रा बनजो खेवनहार, ओ..राजा शत्रुंजा'रा

तव चरणो...

131

राखनां रमकडां...

राखनां रमकडां मारा रामे, रमतां राख्यां रे,
मृत्युलोकनी माटीमांथे मानव कहीने भाख्यां रे...राखनां
बोले डोले रोज रमकडां, नित नित गमतुं मांगे,
आ मारु; आ तारु, कहीने एक-बाजाने भांडे रे...राखनां
एइ...काची माटीनी काथामांथे माया वेरा रंग लगाया,
एजी, ढींगला ढींगलीये घर मांड्यां, त्यां विंझणला विंझाया...
तंत अनंतनो तंतु न तूट्यो ने रमत अधूरी रही,
तनडा ने मनडानी वातो, आवी एवी गइ...राखनां

भारी श्रद्धाने तुं तो ज्ञेइले कसीने,
हुःभना पथ्यर पर ऐने ज्ञेइ घसीने,
कटी नहीं उतरे अे रतिभार खोटी,
कोटी कोटी वार याहे करी ले तुं कसोटी.

तव चरणो...

132

रंगाइ जाने रंगमां...

रंगाइ जाने रंगमां, तुं रंगाइ जाने रंगमां
प्रभुवीर तणा शाशनमां, गुरुजीतणा सत्संगमां...तुं रंगाइ
आजे भजशुं काले भजशुं, भजशुं महावीर नाम
व्यारे भजशुं आतमराम ?
थास खूटशे, नाडी तूटशे (२) प्राण नहि रे तारा तनमां...तुं
जीव जाणतो झाङ्गुं जीवशुं, मारु छे आ तमाम
पहेलां अमर करी लउं नाम
तेडुं आवशे जमनुं जाणजे (२) जावुं पडशे संगमां...तुं
बत्रीस जातनां भोजन जमतां जलसा वरतां जाम,
एमां व्यांथी सांभरे राम ?
दान पुण्यथी दूर रह्यो तुं (२) फोगट फरे छे घमंडमां...तुं
घडपण आवशे त्यारे भजीशुं, पहेलां घरनां काम,
पछी फरीशुं तिरथ धाम,
आतम एक दिन उडी जाशे (२) शरीर रहेशे पलंगमां...तुं

मानव लष के प्रभुने तुं तारी संगमां,
पछी, ज्ञेइ के ऐने ऐना असल रंगमां.

तव चरणो...

133

लडती झगडती आ दुनियाने...

महावीरनो संदेशो एक दिन दुनियाने समजाशो,
श्रद्धा ने अहिंसानो झंडो सृष्टि पर लहेराशे,
एक दिवस आ अणुबोभ सौ दरिये डुबी जाशे,
मानवतानुं मंगलभय गीत जगमां बधे गवाशे,

लडती झगडती आ दुनियाने एक दिन,
महावीरे चींध्या राहे जावुं पडशे, प्रभु महावीरे चिंध्या राहे...
हिंसाना तांडवमां राचनारा लोकने एक दिन,
जरुर शरमावुं पडशे, प्रभु महावीरे चींध्या राहे जावुं पडशे
कोटी कोटी मानवीने माथे निरंतर, गाजे छे युद्धनां नगारां,
पडीवेः बँधायेला जीवने पछेपल, भडकावतां भणकारां,
लाखां नोंधाराना आंसु-निश्चासनी,
आगमां जरुर होमावुं पडशे, प्रभु महावीरे चींध्या राहे...
वेरथी वेर शमे न कदापी, आगथी आग बुझाय ना,
हिंसाथी हिंसा हणाय नहीं कोई दि शस्त्रोथी शांती स्थपाय ना
बोभना बनावनारा वैज्ञानीकोने, एक दिन जरुर पस्तावुं पडशे,
प्रभु महावीरे चींध्या राहे जावुं पडशे, प्रभु महावीरे...
लाख लाख प्रश्नोंना साचां उकेलो, शस्त्रो थकी नहीं आवे,
भीति बतावे मानवीनां हैयामां, प्रीती कदी नहीं आवे,
सत्य अहिंसा ने शांतीनुं संगीत, बुलंद कंठे गावुं पडशे,
प्रभु महावीरे चींध्या राहे जावुं पडशे, प्रभु महावीरे...

तव चरणे...

134

बधाई...

दिनानाथनी बधाई बाजे छे, मारा नाथनी बधाई बाजे छे
शरणाई सुर नौबत बाजे, और घनन गाजे...मारा
इन्द्र इन्द्राणी मील मंगल गावे, मोतीयन चौक पुरावे छे...मारा
सेवक प्रभुजीसे अरज करत है, चरणोंकी सेवा प्यारी लागे छे
मारा नाथनी बदाई बाजे छे, दिनानाथनी बधाई बाजे छे...



छे पर्युषण पर्व पनोतुं दिलनां दिप जलावो,
अंतरथी अंतर ओळखी ओक थई सहु गावो
क्षमा आपीओ क्षमा मांगीओ, सहु जीवोनो ल्हावो,
प्रेमपर्वनी गंगा वहे, चालो डुबकी लगावो
वालह अने वांकासो भूली, सौने गले लगावो,
होठ उपर 'मिच्छामि दुवकःडम्' ओ शब्दो लावों
संवत्सरीनां अवसरे, मैत्रीनां ध्वज लहेरावो,
करी आप-ले, स्नेह-सुधानी, सहुनुं मंगल गावो

बीજाने अभ्यर्थान देनारो भूद भयभुक्त होय छे ४.

तव चरणे...

135

વ्हाला मारा हैयामां रहेजे...

व्हाला मारा हैयामां रहेजे...भूलुं त्यां तुं टोकतो रहेजे (२)
 मायानो छे कादव एवो, पग त्यां खूंची जाय
 हिंमत मारी काम ना आवे, तुं ज पकडजे बांय...व्हाला मारा
 मारकट जेवुं मन आ मारुं. ज्यां त्यां वूळका खाय
 मोह मदिरा उपर पीधोने, पापे प्रवृत्त थाय... व्हाला मारा
 देवुं पताववा आव्यो जगमां, देवुं वधतुं जाय,
 छूटवानो एक आरो हवे तो, तुं छोडे तो छुटाय...व्हाला मारा
 भवत्त हृदयनुं दर्द हवे तो...मुखे कह्युं ना जाय
 आयखुं मारुं तारा चरणमां, थवानुं होय ते थाय...व्हाला मारा

संभव छे तारी भक्ति भने पागल बनावे,
 पङ्क ए संभावना छे ४-
 भक्ति ४ भने दूनियाथी “आगण” बनावे.

तव चरणो...

136

विषधरी ने विषधर...

विषधरीने विषधर सूतो चंडकोशीया नामी,
 महाभयंकर ओ मारगमां, विचरे महावीरस्वामी (२)
 जाशोमां प्रभु पंथ विकट छे, झेरभर्यो एक नाग निकट छे,
 हाथ जोडीने विनवे विरने, लोक बधां भय पामी... महा
 आवी गंध ज्यां मानवकेसी, डंख दिधो त्यां थईने वेरी,
 हिंसा अने आहिंसा वच्ये, लडाई भिषण जामी... महा
 दुध व्हयुं ज्यां प्रभु चरणे, चंडकोशीयो आव्यो शरणे,
 कईक समझ, तुं कईक समझ, अम कहे करुणा आणी...महा
 वेरथी वेर शामे नहीं जगमां, प्रेमथी प्रेम वधे जीवनमां,
 प्रेमधर्मनो परिचय पामी, नाग रह्यो शिरनामी... महा

प्रेमनगरनुं भंडिर भोटुं, आंगणा सदा उघाडा,
 दशे दिशाए द्वार पडे, ऐनां क्यां नथी सीभाडा.

तव चरणो...

137

વैष्णव जन तो...

वैष्णव जन तो तेने कहीये, जे पीड पराइ जाणे रे,
परदुःखे उपकार करे तोये, मन अभिमान न आणे रे,
सकळलोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे,
वाच, काछ, मन-निश्चल राखे, धन धन जननी तेनी रे,
समद्रष्टि ने तृष्णात्यागी, परस्ती जेने मात रे,
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन नव जाले हाथ रे,
मोह माया व्यापे नहीं जेने, द्रढ वैराग्य जेना मनमां रे,
रामनाम शुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना मनमां रे,
वणलोभी ने कपटरहित छे, कामक्रोध निवार्या रे,
भणे नरसैंयो तेनुं दर्शन करतां, वुळ एकोतेर तार्या रे.

सवामण सोनुं (टीलडी)

सवामण सोनुं ने अधमण रुपुं (२)
ओवी मेंतो टीलडी घडावी, ओ प्रभुजी मारा...टीलडी रे
टीलडी घडाववा हुंतो सोनी घेर गयोतो,
सोनीडाओ घाट रुडां घडीया, ओ प्रभुजी मारा...टीलडी रे
टीलडी घडाववा हुंतो झवेरी घेर गयो तो,
झवेरीओ हीरा मोती जडीया, ओ प्रभुजी मारा...टीलडी रे
ओवी रुडी टीलडी हुंतो शंखेश्वर लाव्यो,
शंखेश्वरा पार्थने चढावी, ओ प्रभुजी मारा...टीलडी रे
दादा तारी टीलडीओ सौना मन मोह्यां,
भवततणा अंतरीया डोल्या, ओ प्रभुजी मारा...टीलडी रे

ખावું-પીવું-સુવું-જાગવું-હરવું-ફરવું ને વદવું,
સર્વ કિયાઓ કરતાં પહેલાં, પાપ વિકોરાથી ડરવું,
સદ ગુડી સુનિ કરીએ સોની, નિંદાથી આધા રહીયે,
જન સેવાને આંચ ન આવે એ વ્યવસાયો આચરીયે.

તવ ચરણો...

138

મારું નાણું, મારું ભાણું મારું મારું કરું છું સદા,
હુંજ સાચો, હુંજ મોટો, મને જ આગળ કરું છું સદા,
ભીજાનો ના વિચાર આવે ન આપું કંઈ પરમાર્થમાં
મનડાનો હું ગુલામ કેવો ? જીવનભર રહ્યો સ્વાર્થમાં !

તવ ચરણો...

139

સુણો ચંદાજી, સીમંધર...

સુણો ચંદાજી, સીમંધર પરમાતમ પાસે જાજો,
મુજ વિનતડી પ્રેમધરીને એણી પરે તુમ સંભળાવજો,
જે ત્રણ ભુવનનો નાયક છે, જસ ચોસઠ ઇન્દ્ર પાયક છે,
નાણ દરિસણ જેહને ખાયક છે...સુણો ચંદાજી
જેની કંચનવરણી કાયા છે, જસ ધોરી લંછન પાયા છે,
પુંડરીગિણી નગરીનો રાયા છે...સુણો ચંદાજી
બાર પર્ષદામાંહિ બિરાજે છે, જસ ચોત્રીસ અતિશય છાજે છે,
ગુણ પાંત્રીશ વાણીયે ગાજે છે...સુણો ચંદાજી
ભવિજનને જે પડિબોહે છે, તુમ અધિક શીતળ ગુણ સોહે છે,
રૂપ દેખી ભવિજન મોહે છે...સુણો ચંદાજી
તુમ સેવા કરવા રસિયો છું, પણ ભરતમાં દૂરે વસિયો છું,
મહા મોહરાથકાર ફસિયો છું...સુણો ચંદાજી
પણ સાહિબ ચિન્તમાં ધરિયો, તુમ આણા ખડગકર ગ્રહિયો છે,
પણ કાંદ્રક મુજથી ડરિયો છે...સુણો ચંદાજી
જિનઉત્તમ પૂઠ હવે પૂરો, કહે પદ્માવિજય થાડું શૂરો,
તો વાધે મુજ મન અતિ નૂરો...સુણો ચંદાજી

તવ ચરણો...

140

સિદ્ધાચલની યાત્રા કરવા ચાલો...

પરમ પુરુષનો પંથ મલ્યો છે, મનગમતો ભગવંત મલ્યો છે,
ચાલો પાવન ર્થઈએ, ચાલો આપણે જર્ઝીએ
સિદ્ધાચલની યાત્રા કરવા, ચાલો આપણે જર્ઝીએ...
કાંકરે કાંકરે સિદ્ધચા અનંતા, સિદ્ધશે ભાવિ અનંત,
ત્રિકરણ યોગે પુજા કરશું, કરશું ભવનો અંત,
જગનો સાચો સંત મલ્યો છે, મનગમતો ભગવંત મલ્યો છે,
ચાલો આપણે જર્ઝીએ...
સિદ્ધાચલ સોહામણૂ તીરથ, સહુ તીરથ શિરતાજ,
અલગેલો આદેશર બીરાજે, સાહિબ ગરીબ-નવાજ,
કલીયુગનો ઓ કલ્ય મલ્યો છે, જગનો સાચો સંત મલ્યો છે,
ચાલો આપણે જર્ઝીએ...

ત્રણલોકમાં તીરથ ન ઓવું, શ્રી સીમંધર બોલે,
માનવ ત્યાં જર્ઝ દેવ બને, જો સાચું અંતર ખોલે,
મહાભાગ્યે ભગવંત મલ્યો છે, મનગમતો અરિહંત મલ્યો છે
ચાલો આપણે જર્ઝીએ...

વર્ષમાં એકવાર અનુકૂળતા કરી શ્રાવકે, દાદા।
આદિનાથને ભેટવા શાનુંજયની યાત્રા કરવી જ.

તવ ચરણો...

141

સમતાથી દર્દ સહું... (તર્જ : હોટોંસે છુલોં તુમ...)

સમતાથી દર્દ સહું, પ્રભુ ઓવું બલ દેજો
મારી ભવિત્ત જો સાચી હો, પ્રભુ આટલું ફળ દેજો

કોઈ ભવમાં બાંધેલા, મારાં કર્મો જાગ્યાં છે,
કાયાનાં દર્દરૂપે, મને પીડવા લાગ્યાં છે
આ જ્ઞાન રહે તાજું, ઓવું સિંચનજલ દેજો... સમતાથી

દર્દોની આ પીડાને, રોવાથી મટશે નહીં,
કલ્યાંત કરુ તોયે, આ દર્દ તો ઘટશે નહીં,
દુર્ધ્યાન નથી કરવું ઓવું નિશ્ચય બલ દેજો... સમતાથી

આ કાયા અટકી છે, નથી થાતાં તુજ દર્શન
ના જર્ઝ શવું; સુણવાને, ગુરુની વાણી પાવન
જીનમંદિર જાવાનું ફરીને અંજલ દેજો... સમતાથી

નથી થાતી ધર્મક્રિયા, ઓનો રંજ ઘણો મનમાં,
દિલદું તો દોડે છે, પણ શવિત્ત નથી તનમાં,
મારી હોંશ પુરી થાયે, ઓવો શુભ અવસર દેજો... સમતાથી

ભલેને આ દરદ વધે, હું મોત નહિં માંગુ,
વળી છેલ્લા શાસ સુધી, હું ધર્મ નહિં ત્યાગું,
રહે ભાવ સમાધીનો, ઓવી અંતિમ પણ દેજો... સમતાથી

તવ ચરણો...

142

સુખની છાયા વ્યાંય નથી...

સુખની છાયા વ્યાંય નથી, પણ માયા નથી મુકાતી,
મૃગજલ જેવું સુખ છતાંયે, તૃષ્ણા નથી સુકાતી... માયા
ખારો છે સંસાર છતાંયે, અને ગણું છું ઘારો,
ભવસાગરમાં ભટકી રહ્યો, પણ વયાંયે જડે ના કિનારો,
ભૂલભરેલી ભ્રમણાઓ છે, તોયે નથી ભૂલાતી... માયા

દ્વેષ ભયો છે આ દિલડામાં, રાગમાં છું અનુરાગી,
તારું મારું કરી વેર વધારું, વિસારું વિતરાગી,
રંગરાગમાં ઢૂબી રહું પણ, આગ નથી બૂઝાતી... માયા

પાપોનાં પડછાયા પડે ને, પુણ્યની પાછો તૂટે,
જાણીને જકડાયો છું, ત્યાં બંધન વ્યાંથી છુટે?
માનવભવની મુડી આ મારી રોજ રહી લુંટાતી... માયા

સુખ નથી ક્યાંય આ જગમાં રડતાં સધળા લોક,
જેવી જેની આપદા, મુકે એવી પોક.

બીજાના હુઃએ હુઃખી થવાની વાત પણી કરજો પહેલાં
મનને પૂછો કે એ બીજાના સુખે સુખી થવા તૈયાર છે ખરું ?

તવ ચરણો...

143

સુખ દુઃખ મનમાં ન...

સુખદુઃખ મનમાં ન આણીયે, ઘટ સાથે રે ઘડિયાં,
ટાલ્યાં તે વોડનાં નવ-ટલે રધુનાથનાં જડિયાં...સુખ
નલ્લરાજા સરખો નર નહિ, જેની દમયંતી રાણી,
અડધે વર્ણે વનમાં ભમ્યા, ન મલ્યાં અન્નને પાણી...સુખ
પાંચ પાંડવ સરખા બંધવા, જેની દ્રૌપદી રાણી,
બાર વરસ વન ભોગવ્યાં, નયણે નિંદ્રા ન આણી...સુખ
સીતા સરખી સતી નહીં જેનાં રામજી સ્વામી,
રાવણ તેને હરી ગયો, સતી મહાદુઃખ પામી...સુખ
રાવણ સરખો રાજિયો, જેની મંદોદરી રાણી,
દશ મસ્તક છેદાઇ ગયાં, બધી લંકા લુંટાણી...સુખ
હરિશંદ્રરાય સત્વાદિયો, તારાલોચની રાણી,
તેને વિપત બહુ પડી, ભર્યા નીચ ઘેર પાણી...સુખ
સર્વ કોડને જ્યારે ભીડ પડી, સમર્થા અંતરયામી,
ભાવટ ભાંગી ભૂધરે, મહેતા નરસૈનાં સ્વામી...સુખ

કદી સંયોગ કદી વિયોગ, સમજુ હસે ન રોવે,
તડકોને છાંય આવે ને જાય, સમતા કદી ન ખોવે.

તવ ચરણો...

144

સૂર્ય-ચંદ્ર આકાશ પવન...(મહાવીર)

સૂર્ય-ચંદ્ર આકાશ પવનને, વર્ષા જેમ બધાનાં છે,
મહાવીર કેવળ જૈનોના નહીં, પણ આખી દુનિયાનાં છે.
જન્ય ભલેને અહીં લીધો પણ, જ્યોત બધે પેલાવી
સૂર્ય ભલેને અહીં ઉધ્યો પણ, પ્રકાશ છે જગવ્યાપી
પ્રાણીમાત્રનાં પ્યારાં એતો, પદ્યગંબર માનવતાના છે...મહાવીર
વિરાટ એવા વિશ્વપુરુષને, વામન અમે કયો છે
વિશાળ એના વિશ્વધર્મને, વાડા મહીં પૂર્યો છે.
જીવનના જ્યોર્તિધર એતો જગનાં જ્ઞાન ખજાના છે...મહાવીર
સત્ય, અહિંસા, પ્રેમ, કરુણા, ભાવ છે મંગલકારી
અનેકાંતની વિચારધારા, સર્વ સમન્વયકારી
પતિતને પાવન કરનારા, પાણી જેમ ગંગાના છે...મહાવીર

પ્રભુવીર એટલે દુઃખોનો દાવાનળ બુઝવનાર નીર,
કર્મ અને ઉપસર્ગો સામે જરૂરમનાર ધીર,
રાગની રજ દૂર કરનાર સમીર,
અને આત્માનું ઐશ્વર્ય પામેલાં અમીર.

તવ ચરણો...

145

सिद्धाचलना वासी..(तर्ज : तेरी शहेनाइ बोले)

सिद्धाचलनावासी, विमलाचलनावासी जिनजी घ्यारां,
आदिनाथने वंदन अमारां...

प्रभुजीनुं मुखडुं मलके, नयनोमांथी वरसे, अमीरसधारा,
आदिनाथने वंदन अमारां...

दिलमां भवित्तनी ज्योत जगावुं, प्रभुनी मूर्तिथी मनडुं मीलावुं
भजीले प्रभुने भावे, दुर्गति कदी न आवे, जिनजी घ्यारां,
आदिनाथने वंदन अमारां...

भमीने लाख चोर्याशी हुं आव्यो, पूण्ये दर्शन तुमारा पाम्यो,
धन्य दिवस मारो, भवना पेशा टाळो, जिनजी घ्यारां
आदिनाथने वंदन अमारां...

अमे तो मायाना विलासी, तमे छो मुवित्पुरीनावासी,
कर्मबंधन कापो, मुवित्सुख आपो, जिनजी घ्यारां,
आदिनाथने वंदन अमारां...

अरजी उरमां धरजो अमारी, अमने आशा छे प्रभुजी तमारी
कहे हर्ष हवे, साचा स्वामी तमे, वंदन करीए अमे,
पूजन करीए अमे, जिनजी घ्यारां,
आदिनाथने वंदन अमारां...

समय मारो साधजे...

समय मारो साधजे वहाला करुं हुं तो कालावाला (२)

अंत समय मारो आवशे ज्यारे, नहीं रहे देहनुं भान, भान
एवे समय मुखे तुलसी देजो, देजो यमुना पान, पान
जीभलडी मारी परवश बनशे, जो हारी बेसुं हुं हाम, हाम
एवे समय मारी व्हारे चढीने, राखजे तमारुं नाम, नाम
वंठ रुंधाशे ने नाडीओ तूटशे, तूटशे जीवनदोर, दोर
एवे समय मारा अलबेलाजी, करजो बंसरी शोर, शोर
आंखलडी मारी पावन करजो ने देजो एक ज ल्हाण, ल्हाण
श्यामसुंदर तारी झांखी करीने, भवतो छोडे प्राण, प्राण

स्वार्थी छे सौ आ संसारी, छे नश्वर आ काया,
भौतिक सुभो न कायभी कदापी, ऐ छे हुःभनी छाया,
आ संसार छे एक पींजू खोली नाख तुं दार,
भुक्तिनगर ए धर छे ताङुं प्रसरावी पांख, कर विहार.

समजोता गमों से कर लो...(समजोता)

समजोता गमोंसे कर लो (२) जिंदगीमें गम भी मिलते हैं.
पतझड़ आते ही रहते हैं (२) की मधूबन फिरभी खीलतें हैं.

रात कटेंगी होंगे उजाले, फीर मत गीरना गीरनेवाले,
इन्सां वो खूद संभले, औरोंको भी संभाले...

ओ...ओ...(२) समजोता

भूल सभीसे होती आई, कौन है जिसने न ठोकर खाई (२)
भूलोंसे शीखे जो मंजिल उसने पाई...

ओ...ओ...(२) समजोता

देदो मुजको जीमोदारी, में बनजाउं नजर तुम्हारी (२)
तुम मेरी आँखों से देखो दुनिया सारी...

ओ...ओ...(२) समजोता

हुःभमें सुभीरन सब करे, सुभमें न करे कोइ,
जो सुभमें सुभीरन करे प्रभुक। तो हुःभ काहेको होय ?
(कभीरज)

तव चरणो...

148

सूतां सूतां...(तर्ज : बस्ती बस्ती, पर्वत पर्वत गाता)

सूतां सतां अंधारामां, जोजे मृत्यु ना थइ जाय
मननी मनमां ना रही जाय.. सूतां सतां

एम बने के आज रातमां, मृत्यु आवे सामे
काल सवारे सूर्य उगे, तुं जोवा पण ना पामे..सूतां सतां
थइ शकेः छे तारुं पण, जे मोत बीजानुं थाये
बेदरवारी के आळसमां, अवसर चाल्यो जाये..सूतां सतां
हृष्टपुष्ट ने सदा निरोगी, चाल्या गया अचानक
अंतरियाले अकस्मातमां, मृत्यु थया भयानक..सूतां सतां
मृत्यु हमणां घा करे तो, बचवानो अवकाश नथी
आ घडीए तुं धरम करी ले, जीवननो विश्वास नथी..सूतां सतां

आव्यो खाली हाथे, न लाव्यो कशुं साथे,
ऐक दिवस जावुं बधुं, भूकीने भुल्ले हाथे,
शाने तुं करे छे, मानव मान-गुमान,
आ माझ-आ ताझ, २हेशे नहिं अलिमान.

तव चरणो...

149

શંભું શરણે પડી... (તર્જ : તેરી શહેનાઈ બોલે...)

શંભું શરણે પડી, માગું ઘડી રે ઘડી કાદ કાપો,
દયા કરી દર્શન શિવ આપો,
તમે ભવતોનાં દુઃખ હરનારાં, શુભ સૌનું સદા કરનારાં,
હું તો મંદમાતિ, તારી અકલગતિ, કાદ કાપો... દયા કરી
અંગે ભસ્મ સ્મશાનની ચોળી, સંગે રાખો સદા ભૂતટોળી,
ભાલે તિલક કર્યું, વંઠે વિષ ધર્યું, અમૃત આપો... દયા કરી
નેતી નેતી જ્યાં વેદ કહે છે, મારું ચિત્તદું ત્યાં જાવા ચહે છે,
સારા જગમાં છે તૂં, વસુ તારામાં હું, શવિત આપો... દયા કરી
હું તો એકલપંથી પ્રવાસી, છતાં આતમ કેમ ઉદાસી,
થાક્યો મર્થી રે મર્થી, કારણ મળ્યું નથી, સમજણ આપો, દયા
આપો દ્રષ્ટિમાં તેજ અનોખું, સારી સૃષ્ટિને શિવરૂપ દેખું,
મારા મનમાં વસો, હૈથે આવી વસો, શાંતિ સ્થાપો... દયા કરી
ભોળાશંકર ભવદુઃખ કાપો, નિત્યસેવાનું શુભ ધન આપો,
ટાલો માનમદા, ગાલો ગર્વ સદા, ભવિત આપો... દયા કરી

જ્યારે પ્રભુ-ભક્તિમાં તનમન એકાકાર બની જાય છે,
ત્યારે ઉરનાં આંગણીયે ઉમેંગના ઉત્સવ ઉજવાય છે.

તવ ચરણો...

150

શ્યામ પીયા મોરી રંગ દે ચુનરીયાઁ...

શ્યામ પીયા મોરી રંગ દે ચુનરીયાઁ
રંગ દે ચુનરીયાઁ... રંગ દે ચુનરીયાઁ
લાલ ના રંગાઝ મૈં હરી ના રંગાઝ
અપને હી રંગ મે રંગ દે ચુનરીયાઁ... શ્યામ પીયા મોરી...
ઔસી રંગ દે વેં રંગ નાહી છૂટે,
ધોબીયા ધોવે ચાહે યે સારી અમરીયાં... શ્યામ પીયા મોરી...
બીના રંગાયે મૈ તો ઘર નહી જાઉંગી
બિત હી જાયે ચાહે, યે સારી ઊમરીયાં... શ્યામ પીયા મોરી...
મીરાં વેં પ્રભુ ગીરીધાર નાગર,
શ્યામ ચરણમેં, હરીચરણમેં... શ્યામ પીયા મોરી...

આપણો રંગ તે શ્યામનો રંગ છે,
મેધધનુધને પણ ઓછું આવે અહીં,
એક આ રંગમાં કેટલાય રંગ છે,
કોઈ આવે નહિં, કોઈ જાય નહિં. (પાનબાદ)

તવ ચરણો...

151

हे, त्रिशलानां जाया...

अंतरना कोडीये ओक दिप बळे छे झाँखो,
जीवननां ज्योतिर्धर अेने निशदिन जलतो राखो,
ऊँचे ऊँचे उडवा काजे प्राण चाहे छे पांखो,
तुजने ओळखुं नाथ निरंजन ओवी आपो आँखो,
मानवतानां मुत्य घट्यां ने दानवता रही जामी,
पाप ने पुण्यनी वातो जाणे थई गई साव नकामी,
दुनियानी आ परिस्थितीने कोई शवेः ना पामी,
साचो राह सुजाडो स्वामी, हे प्रभु महावीरस्वामी.

हे, त्रिशलानां जाया, मांगु तारी माया,
घेरी वळ्यां छे मुजने मारां पापोनां पडछाया...हे त्रिशलानां

बावुळाना भोजन लईने चंदनबाला तारी,
चंडकौशीनां झेर उतारी अेने लीधो उगारी,
रोहिणी जेवां चोर लुंटारा, तुज पंथे पलटाया...हे त्रिशलानां

जुदा थईने पुत्रीजमाई केवो विरोध करता,
गाळो दे गोशाळो तोये दिलमां समता धरता,
झेरना धूंटडा गळी जईने, प्रेमनां अमृत पाया...हे त्रिशलानां

सुलसा जेवी शाविकाने करुणा आणी संभारी,
विनवुं छुं हे महावीरस्वामी, लेशो नहीं वीसारी,
सळगंता संसारे देजो, सुखनी शीतल छाया...हे त्रिशलानां

तव चरणे...

152

हुं छुं अनाथ...

हुं छुं अनाथ, मारो झालजो रे हाथ
विनवुं छुं हे प्रभु पारसनाथ !
हुं छुं प्रवासी नथी कोइनो संगाथ...विनवुं...

सगां-संबंधी स्नेहीओ सहु तो अे निराधार,
ओकालबाधो छुं अवनिमा तारो छे आधार,
जावूं छे दूर दूर देजो रे साथ...विनवुं...

भडभडती आगथी नागने उगार्यो नयनोंथी वरसावी नेह
संसार तापे हुंये बढू छुं उगारो लावीने स्नेह
दीनदयालु छो दीनोना नाथ...विनवुं...

मुवितनगरमां जावुं छे मारे वचमां छे सागर मोटो,
आगळ जाऊं त्यां पाढो पडुं छुं मारग मळीयो खोटो
तारी लीओने प्रभु त्रिभुवनना नाथ...विनवुं...

भिलते हुआ कुल खुश्खु हें आपको,
थमकता हुआ चांद रोशनी हें आपको,
हम तो कुछ देने के काबील नहीं हैं,
मेरे पार्थप्रभु लभीं उम्र हे आपको.

तव चरणे...

153

हे किरतार मने...

हे किरतार मने आधार तारो, जोजे ना तुटी जाय
हे प्रभु तारा प्रेमनो खजानो, जोजे ना खुटी जाय...

तारो विश्वास मने आ अवनीमां,
आपे प्रकाश ज्योत ओ रजनीमां,
शद्वाथी वाळीछे गाठों में स्नेहनी,
जोजे ना छुटी जाय... (२)

हे किरतार...

शवित्र प्रमाणे भवित करु छुं,
आ जीवन तुज चरणे धरु छुं,
प्रेमनो प्यालो पीवा जऊ त्यां,
जोजे ना पूटी जाय... (२)

हे किरतार...

गाई रह्गो छुं गीत तुज प्रीतनां,
स्नेहथी भरेलां सूरो संगीतना,
लाखनां हिंग ने हाथमांथी कोई,
जोजे ना लुंटी जाय... (२)

हे किरतार...

तुं तारे के ना तारे, तारो साथ ना छोड़ुं,
जे जोड़या तुझने हाथ, ए भीझे क्यांय ना जोड़ुं.

तव चरणो...

154

हे दया कृपा निधि...

हे दया कृपा निधि, तुं शवित्र दे, तुं भवित दे,
तुं ज्ञाननुं वरदान दे... हे दया कृपा निधि...

असत्यो मांहेथी प्रभु परम सत्ये लइ जा,
ऊंडा ऊंधारेथी प्रभु परम तेजे लइ जा,
महामृत्युमांथी अमने अमृत समीपे लइ जा... तुं शवित्र दे...
जळता प्रजाळी तुं शवित्रने कण-कणमां दई दे,
प्रजाननी परम ज्योतिनुं स्फुर्लिंग दई दे,
हे दयानां सागर तारां सर्जा खोले लइ ले... तुं शवित्र दे...

हरी हळवे हळवे हंकारे...

हरी हळवे हळवे हंकारे, मारुं गाडुं भरेल भारे,
में तो लगाम दीधी हाथ हरीने, हरी चाहे तो पार उतारे...
भाई... रे... भाई... रे... भाई... रे... भाई... रे...

कायानी कोठीमां कूडां, करतूत ठांस भरेला छे, (२)
कोइनी आंतरडी बाले ओवा, अवगुण उर भरेला छे,
वंड वंकर वंड वुसुम, कांटा ने, पेटनुं पाप पोकारे... हरी
देवनी डेली दूर नथी वंड, करणी करेल कही दे,
वध्युं घटचुं वंड पुण्य होय तो, पंडने काजे दइ दे,
सतना जेवी मूढी नथी जे, आवे हे हारे हारे..... हरी

तव चरणो...

155

હું કરું છું પ્રાર્થના...

હું કરું છું પ્રાર્થના, મને પ્રેમ તારો આપજે
કાંઈ ખોટું કામ કરું તો, ત્યારે તું મને વારજે
જીવન છે સંગ્રામ, કોઇની જીત કોઇની હાર છે
જાણું છું સંસાર આ તો, સુખદુઃખનો સાર છે
હારથી હારી ન જાઉં, એવી હિંમત આપજે... કાંઈ ખોટું.
ધન મલે કેન મલે પણ, ધર્મને હું જાળવું
તારો પંથ ચૂકી ન જાઉં, એટલું સંભાળવું
તે છતાં ભૂલો પડું તો, સાચે રસ્તે વાળજે... કાંઈ ખોટું.
મોક્ષની ચિંતા નથી, હું રાત-દિન ભવિત્ત કરું
તારું નામ ભુલાય નહિ, ભાવના એવી હૈથે ધરું
ડગુમગુ નહિ હું કદાપિ, શર્દ્દા એવી આપજે... કાંઈ ખોટું

કંપી કંપીને અહીં તાર તાર તૂટે,
ને તૂટે આ નખલી ને ન્હોર,
કેટલાંય ગીત મારા હોઠ ઉપર અટક્યાં છે,
ભટકીને આઠ આઠ ફોર.

તવ ચરણો...

156

હે વીર મહાવીર...

હે વીર ! મહાવીર, હે વીર મહાવીર
જગમાં સાચું તારું નામ, હે વીર મહાવીર...
તું છે માતા, તું જ પિતા છો (૨)
તું તો છે તારણહાર, હે વીર મહાવીર...
તું અંતર્યામી જગનો સ્વામી (૨)
તારા ચરણોમાં મોક્ષધામ, હે વીર મહાવીર...
તું તો નૈયા, જીવતરની હંકારે (૨)
તું ઉગારે, તું સંભાલ, હે વીર મહાવીર...
તું જગત્રાતા, વિશ વિધાતા (૨)
તું છે આતમરામ, હે વીર મહાવીર...

અંતર કેરા તારે, તારું નામ ગજાવું,
સંદેશો તારો, જગને સંભળાવું,
સૌ જીવને મળજો મોક્ષનું ધામ,
મને જાલામાં વજાલું લાગે મહાવીરનું નામ.

તવ ચરણો...

157

हे शारदे मा...

हे शारदे मा (२) अज्ञानतासे हमे तार दे मा
 तुं स्वरकी देवी, ये संगीत तुजसे,
 हर शब्द तेरे, हर गीत तुजसे
 हम है अकेले, हम है अधूरे,
 तेरी शरणमें हमे प्यार दे मा...हे शारदे मा.

 मुनिओने समजी, गुणीओने जाणी,
 संतोकी भाषा, आगमोकी वाणी
 हमभी तो समजे हमभी तो जाने
 विद्याका हमें अधिकार दे मा...हे शारदे मा.

 तुं श्रेतवर्णी, कमलपे बिराजे
 हाथोमें वीणा, मुगट सरपे छाजे
 मनसे हमारे भिटादे अंधेरे
 हमको उजालोंका परिवार दे मा...हे शारदे मा.

या कुन्देन्हुत्पारहारधवला या श्रेतपद्मासना,
 या वीषावरदण्डमण्डितकरा या शुभ्रवस्त्रावृता,
 या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्द्वैः सदा वन्धिता,
 सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजड्यापह।

तव चरणो...

1

हे नाथ जोडी हाथ...

हे नाथ ! जोडी हाथ पाये, प्रेमथी सौ लागीये
 शरणुं मले साचुं तमारुं, ए हृदयथी मांगीये
 जे जीव आव्यो आप शरणे, चरणमां अपनावजो,
 परमात्मा ए आत्माने, शांति साची आपजो (२)

 बली कर्मना घोगे करी, जे बुल्मां ए अवतरे,
 त्यां पूर्ण प्रेमे ओ प्रभुजी ! आपनी भवित करे,
 लक्ष चोर्यासीना बंधनोने, लक्षमां लइ कापजो ...परमात्मा
 सुसंपत्ति, सुविचारो ने सत्कर्मनो दइ वारसो,
 जन्मोजनम सत्संगथी किरतार पार उतारजो,
 आ लोकने परलोकमां तुज प्रेम रगरग व्यापजो..परमात्मा

 मले मोक्ष के: सुख स्वर्गनुं, आशा उरे एवी नथी
 मले देह दुर्लभ मानवीनो, भजन करवा भावथी,
 साचुं बतावी रूप, महावीर हृदये स्थापजो...परमात्मा

॥ ॐ शांतिः शांतिः शांतिः ॥

सद्गतना पुनित आत्माने प्रभु, शेषकर्मोथी मुक्त करी
 भोक्षनुं अनंत स्थान आपो अेज प्रार्थना...

तव चरणो...

158

हे करुणानां करनारा...

हे करुणानां करनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी
हे संकटना हरनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी.

में पापो कर्या छे अेवा, हुं भुत्यो तारी सेवा
मारी भुलोना भुलनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी

हुं अंतरमां थई राजी, खेत्यो छुं अवली बाजी
अवलीने सवली करनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी

हे परम कृपालु व्हाला, में पीधां विषना प्याला
विषने अमृत करनारां तारी करुणानो कोई पार नथी

कदी छोरु कछोरु थाये, तुं तो मावतर कहेवाये
शीळीछायानां देनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी

मने जडतो नथी किनारो, मारो वयांथी आवे आरो
मारा साचा खेवणहारा, तारी करुणानो कोई पार नथी

छे मारुं जीवन उदासी, तुं शरणे ले अविनाशी
मारा दिलमां हें रमनारा, तारी करुणानो कोई पार नथी

भगवान दयाणु छे ४, ते २क्षाणु छे, ते कृपाणु छे,
ज़ुरियात तो छे आपडो श्रद्धाणु थवानी

तव चरणो...

159

हे शंखेश्वरनांवासी मारे हैये...

हे शंखेश्वरनांवासी मारे हैये करजो वास,
वेम विसारुं वामानंदन, ज्यां लगी थासोथास...हे शंखेश्वर
थासेथासे समरुं स्यामी जीवननां आधार,
रोमे रोमे तारा नामनो वागी रहे रणकार,
आ अंतरनां वाजितरमां एक ज छे अभिलाष...हे शंखेश्वर
भावथकी हुं भवित्त करुं छुं, जो जे हे भगवान,
हे गुणवंता गाइ रह्यो छुं तारा सदा गुणगान
उगारीले भवसागरमांथी एक ज राखुं आश...हे शंखेश्वर
आव्यो आजे तारा चरणे, भवित्त करवा काज,
भाव हृदयमां लाव्यो दादा पूरजो मारी आश,
तारी भवित्त करतां करतां करवो मोक्षे वास...हे शंखेश्वर

जगने रीझवी रीझवी हुं थाकुं,
ना समजाये संगीत साचुं,
भरजे तुं अंतरमां ऐवी कुंइ आण,
जेथी हुं गाइ शकुं वितराण...

तव चरणो...

160

हे शंखेश्वरस्वामी...(आरती)

हे शंखेश्वरस्वामी, प्रभु जग अन्तरथामी ।
 तमने वंदन करीये (२) शिवसुखना स्वामी...हे शंखेश्वर
 मारो निश्य ओकज स्वामी, बनुं तमारो दास,
 तारा नामे चाले (२) मारा शासोशास...हे शंखेश्वर
 दुःख संकट ने कापो स्वामी, वांच्छितने आपो,
 पाप अमारा हरजो (२) शिवसुखने देजो...हे शंखेश्वर
 निशदिन हुँ मागूं छुं स्वामी, तुम चरणे रहेवा,
 ध्यान तमारुं ध्यावुं (२) स्वीकारजो सेवा...हे शंखेश्वर
 रात दिवस झांखु छुं स्वामी, तमने भळवाने,
 आतम अनुभव मागुं (२) भवदुःख टळवाने...हे शंखेश्वर
 करुणाना छो सागर स्वामी, वृपा तणा भंडार,
 त्रिभूवनना छो नाथक (२) जगना तारण हार...हे शंखेश्वर

लोभंड टीपाय तो धारदार थाय, बीज दटाय तो वृक्ष बने,
 विंहु वराण थक्क आकाशे यडे, मानवी समर्पण करी देव बने.

तव चरणे...

161

है ये पावन भूमी...(तर्ज : हे मेरे दीले नादान...)

है ये पावनभूमी...यहां बारबार आनां...(२)
 पार्थनाथवेः चरणोंमे, आ करवेः झूक जना...है ये पावन
 तेरे मस्तकपे मुगट है, तेरे कानोंमे बुँडल है...(२)
 तुं तो करुणासागर है, मुज पर करुणा करना...है ये पावन
 तेरा तीरथ सुंदर है...तुं प्राणोसे प्यारा है...(२)
 मेरी विनंती सुन लेना...बेडा पार लगा देना...है ये पावन
 तुं जीवनस्वामी है...तुं अंतरथामी है...(२)
 मेरी...नैया दुब रही...नैयाको तीरा देना... है ये पावन
 तेरी सांवली सुरत है...मेरे मनको लुभाती है...
 प्रभु मेरी भवित्वका...स्वीकार तो कर लेना... है ये पावन

शक्ति भणे तो सहुने भणजो, शुनशासन सेवा सारुं,
 भक्ति भणे तो सहुने भणजो, शुनशासन लागे प्यारुं,
 भुक्ति भणे तो सहुने भणजो, राग-देश-अशान थकी,
 शुनशासन भणे भवोभव, ऐवी श्रद्धा थाय नकी.

तव चरणे...

162

हाथे बजावो ताळीओ...(दादाने दरबार)

हाथे बजावो ताळीओ ने पगे झांजरनो झणकार
सरखे सरखी साहेली रमे, दादाने दरबार (२)...
दादानो दरबार वेवो सोहे, झगभग जाकजमाल
आदीशरदादानो महिमा कहेता न आवे पार (२)...हाथे
ओने माथे तिलक शोभे छे, ओने काने चुंडल सोहे छे,
हे...लटकाळा ओ मुखडा उपर मोहां नर ने नार
अली ! सांभळ तुं सजनी रे, मारो छे ओ किरतार,
दादानी भवितमां मेल्वुं मारा हैयां वेरा तार...आदेशर दादा
ओने सोनानुं छतर माथे छे, ओने हीरानी वींटीओ हाथे छे,
हे...बायें बाजुबंध बेरखां ने माथे मुगट मनोहार
अली ! सांभळ तुं सजनी रे, मारो छे ओ किरतार,
दादानुं तेज झळहळतुं, ओनी आभा अपरंपार...आदेशर दादा

**જ्ञन-टिप्पक्नी आगण नानो टिवडो शुं प्रगटवुं ?
ज्योतिधरनी पासे हुं शुं पाभर ज्योत जलावुं ?
जगत्पिता छो तमे हुं नाढान बाणक गुणाणान गाउं,
आतमने मारा अजवाणी देजो आटलुं ध्यान ध्याउं !!**

तव चरणो...

163

हे सर्जनहारा...

हे सर्जनहारा, शाने सर्जी तें मेलाप पछी जुदाइ...मेलाप पछी
मीठी लागे, छे मनडाने, मिलन केरी धडी धडी (२)
(पण) विजोगनी क्षण लागे छे...एक एक युग जेवडी,
घडनारो तुं ओकज ने केम, नोखी नोखी धदाई ?..मेलाप पछी
हैयां केरां, घाव हजी तो, नथी जराये रुझायां !! (२)
वसंत पछी आ पानखरनां केम वायरा वाया...?!
रीत आ तारी ओ रखवाळां अमने ना समजाइ...मेलाप पछी

हमको मनकी शक्ति देना...

हमको मनकी शक्ति देना, मन विजय करें
दूसरोंकी जय से पहेले खूदकी जय करें...हमको मनकी
भेदभाव अपने दिलसे साफ कर शकें,
दूसरोंसे भूल हो तो माफ कर शकें,
जुठसे बचे रहे...सचका दम भरें...दूसरो की जय से
मुश्कीलें पडे तो हमपे इतना कर्म करें,
साथ दे तो धर्मका, चले तो धर्म परे
खूदपे हौंसला रहे, सचका दम भरें...दूसरो की जय से

तव चरणो...

164

હે મહામંત્ર છે મોટો....(તર્જ : રામચંદ્ર કહ ગયે...)

મહામંત્ર છે મોટો જગમાં, એક જ શ્રી નવકાર રે...
ધૂન લગાવો સાથે મળી સૌ, અ છે તારણહાર રે... (૨)...
નમો અરિહંતાણ કહેતા તરીયે સાગર પાર રે...
નમસ્કાર હોજો સિધ્ધોને કોટી કોટીવાર રે...
હે...આચાર્ય ભગવંતોને હું-વંદૂ વારંવાર રે...ધૂન
ઉપાધ્યાય ઉપદેશ દર્ઝને, કરે સૌનો ઉધાર રે...
સાધૂની સેવા કરવામાં થાયે બેડો પાર રે...
હે...ઓ પાંચેયની ભવિત્ત કરીને-સફળ કરો અવતાર રે...ધૂન
નમસ્કારમાં અગળિત ગુણો-કહેતા ના આવે પાર રે...
ઓમાં પૂર્ણ પણ સમાયો-ચૌદ પૂર્વનો સાર રે...
હે...ધન્ય ધન્ય અવતાર ઓનો-સમરે જે નવકાર રે...ધૂન
નાનો પણ ભવસાગરમાં ડૂબતાનો તારણહાર રે...
નવકારને સદાય સમરો-સાથે સૌ નરનાર રે...
જેના પ્રભાવે જૈન શાસનમાં-વર્તે જયજય કાર રે...ધૂન

ગીતોની ગંગા-જમનાને વિશ્વમાં વહાવું
આશા ઉરમાં એવી કે ગીત બની જાઉં...

તવ ચરણો...

165

શાસ સુધીનાં સગપણ...

શાસ સુધીનાં સગપણ સાચાં, બાકી જુઠી પ્રીત...
આ વૂદરતની રીત, આ વૂદરતની રીત...
ઉગ્યું તે તો આથમવાનું-ખીલ્યાં તે કારમાતા,
નામ તણો ઓ નાશ અફર છે, અવધી પૂરી થાતાં,
હરખ જનમનો, શોક મરણનો, ભાગ્યની હાર ને જીત...આ
નોખાં નોખાં લેખ વિધિના, નોખો ભાગ્યનો ધારો,
કોઇના ભાગે દરીયો ખારો, કોઇના ભાગે કિનારો,
ઓટ અને ભરતીનો ક્રમ, તો શીદને થાવું વ્યથીત ?...આ
અંજલ્યાણી પૂરાં થયાં, ઓ તો મુદતના મહેમાન હતાં,
ઘરનાં ઘર તો દૂર રહ્યાં, ઓ ભાડાનાં મકાન હતાં,
જાવું સૌએ એક દિવસ તો, મૂકી અહીં આતિત...આ

પગલે પગલે પાવક જાગે ત્યાં જરશું નૈનની ઝારી
કંટક પંથે સ્વિત વેરીને ખોરીશું ફુલની ક્યારી
હૈયાનો ડેમાળો ગાળી ખળખળ વહેશું હેતની ગંગા
એક બીજાને જીતશું રે ભાઈ જાતને જાશું હારી...

તવ ચરણો...

166

શ્રીજી બાવા દિનદયાળા...

શ્રીજી બાવા દિનદયાળા, ભવત તમારો જાગજો,
હરીગુણ ગાતા દોષ પડે તો, સેવા તમારી માનજો...શ્રીજી
હું અપરાધી કાંઈ ન સમજ્યો, નામ તમારાં અપાર છે,
દાસ ઊપર દયા કરો તો, ગુણ તમારાં ગાથ છે...શ્રીજી
ઓ દિનબંધુ, ઓ રે દયાલુ, પ્રાર્થના કરું કરગરી,
દાસ ઊપર દયા કરો તો, પેરે જન્મના ધરું ફરી...શ્રીજી
ગૌલોકવાસી, વૈનુઃઠવાસી, બૂધિ અમારી સુધારજો,
જન્મ મરણના બંધન છૂંટે, એવી ભવિત્ત આપજો...શ્રીજી
અંત સમયે પ્રભુ માંગુ છું કે, દર્શન દેવા આવજો,
દાસ ઊપર દયા કરીને, ચરણ કમલમાં રાખજો...શ્રીજી

જેમ દુકાણમાં અનાજની કિંમત સમજાય છે, પાણીની
કિંમત રણપ્રદેશમાં સમજાય છે, તેવી જ રીતે માવતરની
ગેરહજરી પછી જ તેમની અગત્યતાની સાચી સમજણા
જાગો છે...પણ, પછી...એ શુન્યાવકાશને કોઇ પૂરી
શકે ખરું ? ? માવતરના ઉપકારોને કદી ભૂલશો નહિં
એમની આશાપાલનમાં પીછેહઠ કરશો નહિં-માવતરના
આશીષ તમારી શક્તિ બની જશે. (સમરત બા)

તવ ચરણો...

167

આરતી...

(નમોહૃત સિદ્ધાચાર્યોપાધ્યાય સર્વસાધૂભ્યં)

જય ! જય ! આરતી આદિ જીણંદા,
નાભિરાયા મહુદેવીનો નંદા...

પહેલી આરતી પૂજા કીજે, નરભવ પામીને લ્હાબો લીજે...
દૂસરી આરતી દીન-દયાળા, ધૂલેવા મંડપમાં જગ-અજવાળા...
તીસરી આરતી ત્રિભુવન દેવા, સુર-નર-ઇન્દ્ર કરે તોરી સેવા...
ચોથી આરતી ચઉગતિ ચૂરે, મનવાંછિત ફલ શિવસુખ પૂરે...
પંચમી આરતી પુન્ય-ઉપાયો, મૂલચંદે ત્રઘષભ-ગુણ ગાયો...

મંગલ દીવો...

(નમોહૃત સિદ્ધાચાર્યોપાધ્યાય સર્વસાધૂભ્યં)

દીવો રે દીવો પ્રભુ મંગલિક દીવો,
આરતી ઉતારણ બહુ ચિરંજીવો...
સોહામણું ઘેર પર્વ દિવાલી, અંબર ખેલે અમાર બાલી...
દીપાલ ભણે અને વુલ અજવાળી,
ભાવેભવતે વિધન નિવારી...
દીપાલ ભણે અને એ કલિકાલે,
આરતી ઉતારી રાજા વુમારપાલે...
અમ ઘેર મંગલિક, તુમ ઘેર મંગલિક,
મંગલિક ચતુર્વિધ સંધને હોજો...

તવ ચરણો...

168